भूषणग्रन्थावली ।

—:0:0:—

शिवराज-भूषण ।

मङ्गलाचरण ।

[कवित्त शुद्ध घनाक्षरी अथवा मनहरण[1]]

बिकट[2] अपार भव पंथ के चले को स्रम हरन करन बिजना से ब्रह्म ध्याइए । यहि लोक पर लोक सुफल करन कोकनद से चरन हिए आनि कै जुड़ाइए ॥ अलि कुल कलित कपोल, ध्यान ललित, अनन्द रूप सरित मैं भूषन अन्हाइए । पाप तरु भंजन बिघन गढ़ गंजन जगत मनरंजन द्विरद मुख गाइए ॥ १ ॥

---

(१) यह उस दण्डक का नाम है जिसमें इकतीस वर्ण होते हैं, लघु गुरु का कोई क्रम नहीं होता, केवल अंतिम वर्ण अवश्य गुरु होता है, जिसमें सोलहवें वर्ण पर प्रथम यति होती है और अन्त के वर्ण पर द्वितीय । देव जी के मतानुसार १४वें अथवा १५वें वर्ण पर भी यति हो सकती है पर वे मध्यम एवं अधम यतियां हैं ।

(२) यह छन्द मुद्रित प्रतियों में नहीं छपा है ।

[छप्पय अथवा षटपद[१] ।]

जै जयन्ति जै आदि सकति जै कालि कपर्दिनि ।
जै मधुकैटभ छलनि देवि जै महिष विमर्दिनि ॥
जै चमुंड* जै चंड मुंड भंडासुर खंडिनि ।
जै सुरक्त जै रक्त बीज विड्डाल विहंडिनि ॥
जै जै निसुम्भ सुम्भद्दलनि भनि भूषन जै जै भननि ।
सरजा समत्थ सिवराज कहँ देहि बिजै जै जग जननि ॥२॥

[दोहा[२] ।]

तरनि,[३] जगत जलनिधि तरनि,[४] जै जै आनँद ओक ।
कोक कोकनद सोक हर, लोक लोक आलोक[५] ॥३॥

अथ राजवंश वर्णन ॥

राजत है दिनराज को बंस अवनि अवतंस ।
जामैं पुनि पुनि अवतरे कंसमथन प्रभु अंस ॥४॥

---

(१) इस छन्द में ६ पद होते हैं जिनमें प्रथम चार काव्य छन्द और अंतिम दो उल्लाला छन्द होते हैं । काव्य छन्द में प्रत्येक पद २४ कला (मात्रा) का होता है और उसकी ११वीं कला पर प्रथम यति होती है । पद चार होते हैं । उल्लाला छन्द २८ कला का होता है जिसमें प्रथम यति १५वीं कला पर होती है ।

(२) "प्रथम कला तेरह धरौ पुनि गेरह गनि लेहु । पुनि तेरह गेरह गनौ दोहा लच्छन एहु" । लघु अक्षर की एक कला (मात्रा) होती है और गुरु की दो ।

(३) सूर्य्य ।

(४) नौका ।

(५) रोशनी अथवा दर्शन ।

* चामुंडा; देवी जी ।

महाबीर ता बंस मैं भयो एक अवनीस ।
लियो बिरद "सीसौदिया"[१] दियो ईस को सीस ॥५॥
ताकुल मैं नृपवृन्द सब उपजे बखत बलन्द ।
भूमिपाल तिन मैं भयो बड़ो "माल मकरन्द"[२] ॥६॥
सदा दान किरवान मैं जाके आनन अम्भु[३] ।
साहि निजाम सखा भयो दुग्ग देव गिरि खम्भु ॥७॥
ताते सरजा[५] बिरद भो सोभित सिंह प्रमान ।
रन भूसिला सु भौंसिला[६] आयुषमान खुमान[७] ॥८॥

---

(१) "सिसोदिया" क्षत्रिय सभी क्षत्रियों के शिरमौर हैं, इसी वंश के क्षत्रिय उदयपुर एवं नेपाल में राज्य करते हैं, इनका हाल "टाड" कृत "राजस्थान" में देखने योग्य है। इनके पुर्व्व पुरुष "सिसोदा" निवासी थे।

(२) किसी किसी प्रीति में इनका नाम "भालमकरन्द" लिखा है पर शुद्ध यही मालमकरन्द है क्योंकि इतिहास में इनका नाम "मालो जी" दिया है।

(३) पानी। दान और कृपाण (बहादुरी) में जिसके मुंह पर सदा पानी (आब) रहता है।

(४) निज़ाम शाही बादशाह।

(५) मालोजी का "सर जाह" खिताब था इसीसे "सरजा,, निकला। इसका अर्थ सिंह भी है।

(६) शिवा जी के घराने की "भौंसिला" उपाधि थी।

(७) भूषण जी शिवराज को "सरजा, भौंसिला, "खुमान" इत्यादि नामों से पुकारते हैं सो इन उपाधियों की यहां पर उन्हों-ने व्युत्पत्ति सी की है।

भूषन भनि ताके भयो भुव भूषन नृप साहि[1] ।
रातौ दिन संकित रहैं साहि सबै जग मांहि ॥८॥

[कवित्त—मनहरण ।]

एतै हाथी दीन्हे माल मकरन्द जू के नन्द जेतै गनि सकति बिरंचि हूं की न तिया[2] । भूषन भनत जाकी साहिबी सभा के देखे लागैं सब और छितिपाल छिति मैं छिया[3] ॥ साहस अपार हिन्दुवान को अधार धीर, सकल सिसौदिया सपूत कुल को दिया ।

---

(१) शाह जी, महाराज शिवराज के पिता । भूषण जी महाराज शिवा जी को उदयपुर के सुप्रसिद्ध "सिसौदिया,, कुलोद्भव बतलाते हैं और यह ठीक भी जान पड़ता है । यद्यपि सुनते हैं कि आज कल कुछ अदूरदर्शी लोग भ्रमवश शिवा जी के वंशज महाराज कोल्हापुर को क्षत्रिय तक मानने में आनाकानी करते हैं जिसका पूरा बखेड़ा ही उठ खड़ा हुआ है पर टाड कृत "राजस्थान" में इनके वंश का "सिसौदिया" घराने से यों सम्बन्ध लिखा है--

अजयसी [महाराजा उदयपुर सन् १३०१ ईस्वी], सुजन सो, दलीप जी, सिवजी, भैारा जी, देवराज, उग्रसेन माहोल जी, खैलो जी, जनके: जी, सत्तो जी, सम्भा जी, शिवा जी । [इण्डियन पबलीकेशन सोसायटी, कलकत्ता द्वारा सन् १८८८ ई० में बंगाल प्रेस में मुद्रित प्रति की जल्द १ पृष्ठ २८२ देखिए] इसमें शिवा जी के पिता का नाम शम्भा जी और मालो जी का माहोल जी लिखा है; कदाचित उन महानुभवों के ये उपमान हों ।

(२) विरंचिहू की तिया न=सरस्वत जी भी नहीं ।

(३) अत्यन्त मैले, तिरस्करणीय ।

जाहिर जहान भयो साहिजू खुमान बीर साहिन को
सरन सिपाहिन को तकिया ॥१०॥

[दोहा।]

दसरथ जू के राम भे बसुदेव के गोपाल।
सोई प्रगटे साहि के श्री सिवराज भुवाल ॥११॥
उदित होत सिवराज के मुदित भए द्विजदेव।
कलियुग हट्यो मिट्यो सकल म्लेच्छन को अहमेव ॥१२॥

[कवित्त—मनहरण।]

जा दिन जनम लीन्हो भू पर भुसिल[1] भूप
ताही दिन जीत्यो अरि उर के उछाह को। छठी
छत्रपतिन को जीत्यो भाग अनायास जीत्यो नाम
करन में करन प्रबाह को॥ भूषन भनत बाल लीला
गढ़ कोट जीत्यो साहि के सिवाजी करि चहूँ चक्क
चाह को। बीजापुर गोलकुंडा जीत्यो लरिकाइही मैं
ज्वानी आए जीत्यो दिलीपति पातसाह को ॥१३॥

[दोहा।]

दच्छिन के सब दुग्ग जिति दुग्ग सहार बिलास।
सिव सेवक सिव गढ़ पती कियो रायगढ़ बास[2] ॥१४॥

---

(१) अर्थात् भौंसिला।

(२) राजगढ़ को शिवा जी ने म्होर बुध पहाड़ी पर १६४७ ई० में बनाया था और १६६५ में उन्हें वह जयसिंह को दे देना पड़ा। शिवा जी के पश्चात मरहठों ने इसे १६८२ ई० में फिर से जीत लिया। सन १६६२ ई० में शिवा जी ने राजगढ़ छोड़ कर रायगढ़ को अपना वासस्थान बनाया। यह कदाचित रायगढ़ का ही वर्णन है-भूमिका देखिए।

अथ रायगढ़ वर्णन ।

[मालती सवैया ।[१]]

जापर साहि तनै सिवराज सुरेस कि ऐसि सभा सुभ साजै । यें कवि भूषन जम्पत[२] है लखि सम्पति को अलकापति लाजै ॥ जा मधि तीनहु लोक कि दीपति एसो बड़ो गढराज बिराजै । वारि पताल सि माची मही अमरावति की छबि ऊपर छाजै ॥ १५ ॥

[हरिगीतिका छन्द[३] ।]

मनि मय महल सिवराज के इमि रायगढ़[४] मैं राजहीं। लखि जच्छ किन्नर सुर असुर गन्धर्व्व हौंसनि साजहीं॥

---

(१) इसमें सात भगण और दो अंतिम अक्षर गुरु होते हैं। इसका रूप यह है ["मुनिभा गग" ०ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽऽ०] । भगण में एक गुरु और दो लघु अक्षर होते हैं। कड़ाई से देखने पर वहुत कम सवैया शुद्ध निकलें गे परन्तु छन्द विगड़ने में गुरु अक्षर को भी लघु करके पढ़ लिया जाता है।

(२) जपता है; बार बार कहता है।

(३) इसका लक्षण यौं है "जहँ पांच चौकल वहुरि षट कल अंत यक गुरु आनिए। वर विरति नव मुनि भानु पर रचि कत्र सो रवि ठानिए ॥" इसमें २८ कला होती हैं और अंत का अक्षर गुरु होता है। सोलहवीं कला पर पहिली यति और जैसा कि सभी छन्दों में होता है, अन्त मैं दूसरी यति पढ़ती है।

(४) छं० नं० १४ देखिए।

उत्तंग मरकत[1] मन्दिरन मधि बहु मृदंग जु बाजहीं।
घनसमै[2] मानहु घुमरि करि घन घनपटल[3] गल[4] गाजहीं१६
मुकुतान की झालरिन मिलि मनि माल छज्जा छाजहीं
सन्ध्या समै मानहु नखत गन लाल अम्बर राजहीं ॥
जहँ तहां ऊरध उठे हीरा किरन घन समुदाय हैं।
माना गगन तम्बू तन्यो ताके सपेत तनाय हैं ॥ १७ ॥
भूषन भनत जहँ परसि कै मनि पुहुप रागन[5] की प्रभा।
प्रभु पीत पट की प्रगट पावत सिंधु मेघन की सभा ॥
सुख नागरिन के राजहीं कहुँ फटिकमहलन संग मैं।
बिकसंत कोमल कमल मानहु अमल गंग तरंग मैं॥१८॥
आनन्द सों सुन्दरिन के कहुँ बदन इन्दु उदोत हैं।
नभ सरित के प्रफुलित कुमुद मुकुलित कमल कुल होत हैं
कहुँ बावरी सर कूप राजत बद्धमनि सोपान हैं।
जहँ हंस सारस चक्र बाक बिहार करत समान हैं॥१९॥
कितहूं बिसाल प्रबाल जालन जटित अंगनि भूमि है।

---

(१) नीलम ।

(२) समय पर अर्थात् ठीक समय अथवा वर्षा काल में ।

(३) तह; पर्त ।।

(४) गवा; गले से अर्थात् जोर से । ग्राम्य भाषा में "गलगंजौं का अर्थ प्रसन्नता पूर्वक बोलने का लिया जाता है सो भी यहां पर ठीक उतरता है ।

(५) पुखराग अथवा पुखराज ।

जहँललितबागनिद्रुमलतनिमिलिरहैंझिलिमिलि[1]भूमिहै
चम्पा चमेली चारु चन्दन चारिहू दिसि देखिए ।
लवली[2] लवंगयलानि[3] केरे लाखहों लगि लेखिए ॥२०॥
कहुँ केतकी कदली करौंदा कुंद अरु करबीर[4] हैं ।
कहुँ दाख[5] दाड़िम[6] सेब कटहल तूत अरु जम्भीर हैं॥
कितहूं कदम्ब कदम्ब[7] कहुँ हिंताल[8] ताल तमाल[9] हैं।
पीयूष ते मीठे फले कितहूं रसाल[10] रसाल[11] हैं ॥२१॥
पुन्नाग[12] कहुँ कहुँ नाग केसरि कतहुँ बकुल असोक हैं।
कहुँ ललित अगर गुलाब पाटल[13] पटल[14] बेला थोक हैं॥
कतहूं नेवारी माधवी[15] सिंगारहार[16] कहूं लसैं ।

---

(१) झिलमिला प्रकाश ।
(२) कोमल वल्कला; नोयाड़ि; एक फल वृक्ष ।
(३) एला; इलाएची ।
(४) कनेर ।
(५) मुनक्का ।
(६) अनार ।
(७) समूह ।
(८) पूगरोट वृक्ष ।
(९) आबनूस ।
(१०) आम का पेड़ ।
(११) रसीला ।
(१२) देव वल्लभ; एक बड़ा पुष्प वृक्ष ।
(१३) गोला बिरंग; एक लाल और सफेद फूल ।
(१४) तह ।
(१५) चन्द्रवल्ली; एक बौंढ़ी ।
(१६) हरसिंगार; एक पुष्प वृक्ष ।

जहँ भाँति भाँतिन रंग रंग बिहंग आनँद सों रसैं ॥२२॥

षट पद ।

लसत बिहंगम बहु लवनित बहु भांति बाग महँ ।
कोकिल कीर कपोत केलि कल कल करंत तहँ ॥
मंजुल महरि मयूर चटुल[1] चातक चकोर गन ।
पियत मधुर मकरन्द [2]करत झंकार भृंग घन ॥
भूषन सुबास फल फूल युत छहुँ ऋतु बसत बसंत जहँ।
इमि राज दुग्ग राजत रुचिर सुखदायक सिवराज कहँ ॥२३॥

दोहा ।

तहँ नृप रजधानी करी जीति सकल तुरकान ।
सिव सरजा रुचि दान मैं कीन्हो सुजस जहान ॥२४॥

अथ कवि वंश वर्णन ।

देसन देसन ते गुनी आवत जाचन ताहि ।
तिन में आयो एक कवि भूषन कहियतु जाहि ॥२५॥
[3]दुज कनौज कुल कस्यपी रतनाकर सुत धीर ।
बसत तिविक्रम पुर सदा तरनि तनूजा तीर ॥२६॥
[3]बीर बीर बर[4] से जहाँ उपजे कवि अरु भूप ।

---

(१) चंचल ।

(२) पुष्प रस ।

(३) इन दोहों से सपष्ट है कि भूषण जी कान्यकुब्ज ब्राह्मण कश्यपगोत्री (त्रिपाठी) श्री रत्नाकरजी के पुत्र त्रिविक्रमपुर में यमुना जी के किनारे रहते थे जहां बीरबलजी हो गए थे और बिहारीश्वर ग्रामदेव थे। इस की विशेष व्याख्या भूमिका में देखिए।

(४) राजा बीरबल मौज़ा अकबरपुर बीरबल ज़िला कानपुर में उत्पन्न हुए थे। यह अकबर पुर तहसील अकबरपुर नहीं बरन एक और गांव यमुनाजी के किनारे है। भूमिका देखिए।

देव विहरीश्वर जहाँ विश्वेश्वर तद्रूप ॥२७॥
कुल सुलंक चितकूट पति साहस सील समुद्र ।
कवि भूषन पदवी दई हृदय राम सुत रुद्र[1] ॥२८॥
सिव चरित्र लखि यों भयो कवि भूषन के चित्त ।
भाँति भाँति भूषननि[2] सों भूषित करौं कवित्त ॥२९॥
सुकविन हूं की कछु कृपा समुझि कविन को पंथ ।
भूषन भूषन[2] मय करत "शिवभूषन" सुभ ग्रंथ ॥३०॥
भूषन सब भूषननि मैं उपमहि उत्तम चाहि ।
याते उपमहि आदि दै बरनत सकल निबाहि ॥३१॥

अथ ग्रन्थ प्रारम्भः ॥

उपमा ।

लक्षण । दोहा ।

जहाँ दुहुन की देखिए सोभा बनत समान ।
उपमा भूषन ताहिको भूषन कहत सुजान ॥३२॥
जा को बरनन कीजिए सो उपमेय प्रमान ।

(१) "हृदय राम" सुत "रुद्रसाह" का नाम बुँदेलखण्ड गज़ेटियर में या अन्यत्र हमें न मिला और न स्वयं चित्रकूटही में उनका कुछ पता चला । कदाचित ये बघेलों के बबुवाने में हों स्फु० का० छं० न० २ का नोट देखिए ।

(२) अलंकारों ।

जाकी सरबरि कीजिए ताहि कहत उपमान[1] ।३३॥

उदाहरण। मनहरण दंडक।

मिलतहि कुरुख[2] चकत्ता[3] को निरखि कीन्हों सरजा, सुरेस ज्यों दुचित ब्रजराज को। भूषन कुमिस[4] गैरमिसिल[5] खरे किए को किए म्लेच्छ मुरछित करि कै गराज को॥ अरे ते गुसुल खाने बीच ऐसे उमरा लै चले मनाय महराज सिवराज को। दाबदार निरखि रिसानो दीह दल राय जैसे गड़दार[6] अड़दार[7] गजराज को ॥३४॥

---

(१) यदि कहैं "मुखचन्द्र सा मनोहर है" तो "मुख" उपमेय होगा और "चन्द्र" उपमान। उपमा में बाचक और धर्म (गुण) भी होते हैं सो यहां "सा" बाचक है और "मनोहर" धर्म हैं।

(२) कुरुख कीन्हों=मुंह बिगाड़ दिया; क्रोधांध कर दिया।

(३) चग़ताई के वंशज अर्थात औरंगज़ेब को।

(४) बुरे बहाने से।

(५) अनुचित साथियों में (पंज हज़ारियों की पंक्ति में।)

(६) वे सोंटे मार लोग जो मस्त हाथी को चुचकार कर आगे बढ़ाते हैं।

(७) ऐंड़दार; मस्त। इन दो पदों का आशय यह है कि शिवा जी को गुसल ख़ाने के पास अड़ते (अर्थात ठिठकते) देख (औरंगज़ेब पर जोखें आजाने के भय से) दरबार के अमीर उमरा लोग उसे (अर्थात शिवजी को) यों मना ले चले जैसे किसी दाबदार मस्त हाथी को मस्ताया हुआ देख सोंटे मार लोग चुचकार कर आगे ले चलते हैं। गुसल खाने के विषय पर भूमिका देखिए। यह घटना सन १६६६ ईसवी की है।

अन्यच्च—मालतीसवैया।

सासता[१] खां दुरजोधन सो अौ दुसासन सो जसवन्त[२] निहारयो। द्रोन सो भाऊ[३]

(१) शाइस्ताख़ाँ दिल्ली का एक सरदार था। चाकन को जीतता हुआ वह पूना को विजय करके वहीं ठहरा। एक रात को शिवाजी केवल २५ योद्धाओं के साथ उसके महल में तरकीब से घुस गया और गड़बड़ में सैकड़ों यवनों तथा शाइस्ताखाँ के लड़के को मार डाला। शाइस्ताख़ां जान बचाने को खिड़की से बाहर कूदने लगा कि शिवाजी ने दौड़ कर उसे एक तलवार मारी जिससे उसका सिर तो बच गया पर एक हाथ की कुछ अँगुलियां कट गईं पर वह भाग गया। लौटते हुए हज़ारों दुश्मनों के बीच से शिवाजी केवल उन्हीं २५ आदमियों के साथ मशाल जलाए सिंहगढ़ चला गया। सन् १६६३ ईसवी का हाल है।

(२) जसवन्तसिंह माड़वार के महाराज थे। ए शाइस्ताख़ां के साथ सन् १६६३ ई: में दक्षिण गए थे। कहते हैं कि ये शिवाजी से मिल गए थे और इन्हीं की सलाह से शाइस्ता की दुर्गत हुई। पहिले तो औरंगज़ेब ने शाइस्ता व जसवंत दोनों को वापस बुला लिया था परन्तु पीछे से शाइस्ता को बंगाल का गवर्नर कर के भेज दिया और जसवन्त को शाहज़ादा मुअज़्ज़म की मातहती में फिर दक्खिन भेजा। जसवंत सिंह ने सिंहगढ़ घेरने का नाम मात्र प्रयत्न किया परन्तु फिर उसे छोड़ दिया (देखो शिवा बावनी छं० १२ "जाहिर है जग मैं जसवंत लियो गढ़ सिंह मैं गीदर बानो"।) इन्हें सन् १६६५ में औरंगज़ेब ने वापस बुला लिया।

(३) बूंदी के छत्रसाल (बुंदेलखंड के नामी छत्रसाल नहीं) के पुत्र भाऊ सिंह। इतिहास में इनका शिवाजी से लड़ना नहीं पाया जाता तो भी दक्षिण में ये औरंगज़ेब की ओर से अवश्य गए थे और शिवाजी से यह ज़रूर लड़े होंगे। ये बूंदी की गद्दी पर सन् १६५८ में बैठे थे।

करन्न[1] करन्न सो और सबै दल सो दल भारचो।। ताहिँ बिगोय सिवा सरजा भनि भूषन औानि छता यें पछारयो। पारथ कै पुरुषारथ भारथ जैसे गजाय जयद्रथ[2] मारचो।। ३५ ।।

लुप्तोपमा ॥

लक्षण-दोहा।

उपमा बाचक-पद धरम, उपमेयो, उपमान।
जामैं सो पूर्णोपमा लुप्त घटत लौं मान ।। ३६ ।।

उदाहरण-(धर्मलुप्ता)-मालती सवैया।

पावक तुल्य अमीतन को भयो, मीतन को भयो धाम सुधा को। [3]आनँद भो गहिरो समुदै कुमुदावलि तारन को बहुधा को॥ भूतल माहिँ बली सिव राज भो भूषन भाखत सत्रु सुधा[4] को। बन्दन[5] तेज त्यें चन्दन[6] कीरति साधे सिँगार बधू बसुधा को ।। ३७ ।।

---

(१) बीकानेर के महाराज रायसिंह के पुत्र महाराज करन सन् १६३२ ई: में गद्दी पर बैठे और लगभग १६७४ तक राज्य किया। इन्हें दो हज़ारी का मनसब था।

(२) जयद्रथ दुर्य्योधन का बहनोई था। उसे अर्जुन ने शकट व्यूह के अन्दर घुस कर मारा था।

(३) चन्द्र पर उक्ति।

(४) फ़ुज़ूलियात; वाहियात बातें।

(५) ईंगुर।

(६) चांदनी अथवा शीतल।

अन्यच्च मनहरण।

आए दरबार बिललाने छरीदार देखि जापता करन हारे नेकहूं न मनके[१]। भूषन भनत भौंसिला के आय आगे ठाढ़े बाजे भए उमराय तुजुक[२] करन के ॥ साहि रह्यो जकि सिव साहि रह्यो तकि और चाहि रह्यो चकि बने ब्योंत अनबन के। ग्रीषम के भानु सो खुमान को प्रताप देखि तारे सम तारे गए मूंदि तुरकन के ॥ ३८ ॥

अनन्वय ॥

लक्षण—दोहा।

जहाँ करत उपमेय को उपमेयै उपमान।
तहाँ अनन्वै कहत हैं भूषन सकल सुजान ॥ ३९ ॥

उदाहरण-मालती सवैया।

साहि तनै सरजा तव द्वार प्रतिच्छन दान कि दुन्दुभि बाजै। भूषन भिच्छुक भीरन को अति भोजहु ते बढ़ि मौजनि साजै ॥ राजन को गन, राजन! को गनै? साहिन मैं न इती छबि छाजै। आजु गरीब नेवाज मही पर तो सो तुही सिवराज बिराजै ॥४०॥

प्रथम प्रतीप ॥

लक्षण—दोहा।

जहँ प्रसिद्ध उपमान को करि बरनत उपमेय।

(१)चाप न की; हिले तक नहीं। (२) अदब।

तहँ प्रतीप उपमा कहत भूषन कविता प्रेय ॥ ४१ ॥

उदाहरण–मालती सवैया ।

छाय रही जितही तितही अतिही छवि छीरधि रंग करारी । भूषन सुद्ध सुधान के सौंधनि[१] सोधति सी धरि ओप उज्यारी ॥ यों तम तोमहि चाबिकै चन्द चहूं दिसि चाँदनि चारु पसारी । ज्यों अफजल्लहि[२] मारि मही पर कीरति श्री सिवराज बगारी ॥ ४२ ॥

द्वितीय प्रतीप ॥

लक्षण–दोहा ।

करत अनादर बर्न्य[३] को पाय और उपमेय ।
ताहू कहत प्रतीप जे भूषन कविता प्रेय ॥ ४३ ॥

उदाहरण–दोहा ।

शिव ! प्रताप तव तरनि सम, अरि पानिप हर मूल ।
गरब करत केहि हेत, हे बड़वानल तो तूल[४] ॥४४॥

तृतीय प्रतीप ।

लक्षण–दोहा ।

आदर घटत अबर्न्य[५] को जहां बर्न्य के जोर ।

(१) महलों को ।

(२) यह बीजापुरी सरदार था। विशेष हाल छन्द नं० ९३ के नोट में देखिए। इस अवसर पर केवल तन्ना जी शिवा जी के साथ था, यह हाल सन् १६५८ ई० का है।

(३) उपमेय ।

(४] तुल्य ।

(५) उपमान ।

तृतिय प्रतीप बखानहीं तहँ कबि कुलसिरमौर ॥४५॥

उदाहरण–दोहा ।

गरब करत कत चांदनी हीरक छीर समान ।
फैली इती समाज गत कीरति सिवा खुमान ॥४६॥

चतुर्थ प्रतीप ।

लक्षण–दोहा ।

पाय बरन उपमान को जहाँ न आदर और ।
कहत चतुर्थ प्रतीप हैं भूषन कबि सिरमौर ॥४७॥

उदाहरण–कवित्तमनहरण ।

चन्दन मैं नाग, मद भरयो इन्द्र नाग, विषभरो सेसनाग, कहै उपमा अबस को ? । चोर ठहरात, न कपूर बहरात, मेघ सरद उड़ात बात लागे दिसि दस को । सम्भु नील ग्रीव, भौंर पुंडरीक ही बसत, सरजा सिवा जी सन भूषन सरस को ? । छीरधि मैं पंक, कलानिधि में कलंक, याते रूप एक टंक ए लहै न तव जस को ॥ ४८ ॥

पंचम प्रतीप ।

लक्षण–दोहो ।

हीन होय उपमेय सों नष्ट होत उपमान ।
पंचम कहत प्रतीप तेहि भूषन सुकवि सुजान ॥४९॥

उदाहरण–कवित्त मनहरण ।

तो सम हो सेस सो तौ बसत पताल लोक ऐरा-

वत गज सो तो इन्द्र लोक सुनियै। दुरे हंस मानसर ताहि मैं कैलास धर सुधा सुरबर सोऊ छोड़ि गयो दुनियै। सूर दानी सिरताज महाराज सिवराज रावरे सुजस सम ग्राजु काहि गुनियै?। भूषन जहाँ लौं गनौं तहाँ लौं भटकि हारयों लखियै कछू न केती बातैं चित चुनियै ॥ ५० ॥

अपरंच-मालती सवैया।

कुन्द कहा पय वृन्द कहा ग्ररु चन्द कहा सरजा जस ग्रागे?। भूषन भानु कृसानु कहाब[1] खुमान प्रताप महीतल पागे?। राम कहा द्विजराम कहा बलराम कहा रन मैं ग्रनुरागे?। बाज कहा मृगराज कहा ग्रति साहस मैं सिवराज के ग्रागे?॥ ५१ ॥

यों सिवराज को राज ग्रडोल कियो सिवजोब[2] कहा ध्रुव[3] धू[4] है?। कामना दानि खुमान लखे न कछू सुर रूख न देव गऊ है। भूषन भूपन मैं कुल भूषन भौंसिला भूप धरे सब भू है। मेरु कछू न कछू दिग दन्ति न कुंडलि कोल कछू न कछू है ॥ ५२ ॥

---

(१) कहा ग्रब?
(२) जो ग्रब।
(३) निश्चय करके।
(४) ध्रुव नक्षत्र।
(५) सर्प; यहां शेष जी।

उपमेयोपमा ।

लक्षण--दोहा ।

जहाँ परस्पर होत है उपमेयो उपमान ।
भूषन उपमेयोपमा ताहि बखानत जान ॥५३॥

उदाहरण–कवित्त मनहरण ।

तेरो तेज, सरजा समत्थ ! दिनकर सोहै, दिन कर सोहै तेरे तेज के निकर सो । भौंसिला भुवाल ! तेरो जस हिमकर सोहै हिमकर सोहै तेरे जस के अकर[1] सो । भूषन भनत तेरो हियो रतनाकर सो रत-नाकरौ है तेरे हिय सुख कर सो । साहि के सपूत सिव साहि दानि ! तेरो कर सुरतरु सोहै, सुरतरु तेरे कर सो ॥ ५४ ॥

मालोपमा ।

लक्षण–दोहा ।

जहाँ एक उपमेय के होत बहुत उपमान ।
ताहि कहत मालोपमा भूषन सुकबि सुजान ॥५५॥

उदाहरण–कवित्त मनहरण ।

इन्द्र जिमि जम्भ पर बाड़व सुग्रम्भ पर रावन सदम्भ पर रघुकुल राज है । पौन बारिबाह[2] पर सम्भु रतिनाह पर ज्यों सहसबाह पर राम द्विजराज है ।

---

(१) आकर; कान (खानि) ।
(२) बादल ।

दावा द्रुम दंड पर चीता मृगझुंड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है । तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है ॥५६॥

ललितोपमा ।

लक्षण-दोहा ।

जहँ समता को दुहुन की लीलादिक पद होत ।
ताहिँ कहत ललितोपमा सकल कबिन के गोत ॥५७॥
बिहसत, निदरत, हँसत जहँ, छबि अनुसरत बखानि ।
सत्रु मित्र इमि औरऊ लीलादिक पद जानि ॥५८॥

उदाहरण-कवित्त मनहरण ।

साहि तनै सरजा सिवा की सभा जामधि है मेरु वारी सुर की सभा को निदरति है । भूषन भनत जाके एक एक सिखर ते केते धौं नदी नद की रेल[1] उतरति है । जोन्ह को हँसत जोति हीरा मनि मन्दिरनि कन्दरन मैं छबि कुहूकि[2] उछरति है । ऐसो ऊँचो दुरग महाबली[3] को जामैं नखतावली सों बहस दिपावली धरति है ॥५९॥

---

(१) रेला; बड़ा वहाव ,

(२) अमावास्या की (अर्थात् कन्दरों से अमावस्या की छबि उछल जाती है या भाग निकलती है अर्थात् उनका अँधेरा दूर हो जाता है)

(३) बड़ा बीर अर्थात् शिवराज ।

रूपक।

लक्षण-दोहा।

जहाँ दुहुन कौ भेद नहिँ बरनत सुकबि सुजान।
रूपक भूषन ताहि को भूषन करत बखान[१] ॥६०॥

उदाहरण-छप्पय।

कलियुग जलधि अपार उद्ध अधरम्म उम्मि[२] मय। लच्छनि लच्छ मलिच्छ कच्छ अरु मच्छ मगर चय। नृपति नदीनद वृन्द होत जाको मिलि नीरस। भनि भूषन सब भुम्मि घेरि किन्निय सुअप्प बस। हिँदुवान पुन्य गाहक बनिक तासु निबाहक साहि सुव[३]। बरबाद वान किरवान धरि जस जहाज सिवराज तुव ॥६१॥

साहिन मन समरत्थ जासु नवरंग[४] साहि सिरु। हृदय जासु अब्बास[५] साहि बहुबल बिलास थिरु।

---

(१) भूषण जी ने रूपक का वही लक्षण दिया है जो अन्य कवियों ने "अभेद रूपक" का दिया है। रूपक का लक्षण रघुनाथ कवि का बहुत उत्तम है "विषई जहां अभेद है विषय जहां तद्रूप,"

(२) ऊर्म्मि; लहर।

(३) सुत।

(४) औरंगज़ेब दिल्ली का सुप्रसिद्ध बादशाह।

(५) यह उस समय फ़ारस का बादशाह था इसी से उसको "हृदय" कहा गया है इसका शाहजहाँ और औरंगज़ेब से मेल और लिखा पढ़ी थी।

एदिल[1] साहि कुतुब्ब[2] जासु जुग भुज भूषन भनि। पाय म्लेच्छ उमराय काय तुरकानि आन गनि। [यह रूप अवनि अवतार धरि जेहि जालिम जग दंडियव। सरजा सिव साहस खग्ग गहि कलियुग सोइ खल खंडियव ॥६२॥

अपरंच-कवित्त मनहरण।

[3]सिंह थरि जाने बिन जावली जँगल भठी हठी गज एदिल पठाय करि भटक्यो। भूषन भनत देखि भभरि भगाने सब हिम्मति हिये मैं धारि काहुवै न हटक्यौ। साहि के सिवाजी गाजी सरजा समत्थ महा

---

(१) आदिल शाह बीजापुर का "बादशाह"। इसके यहां शिवाजी के पिता साहजी भौंसिला नौकर थे पर शिवाजी ने युद्ध ठान दिया और इसे खूबही छकाया।

(२) कुतुब शाह गोलकुंडा का "बादशाह"। दक्षिण में पांच खुदमुख्तार "बादशाहियां" थीं अर्थात बेदर, अहमदनगर, इलच पुर, बीजापुर और गोलकुंडा। प्रथम तीन को औरंगज़ेब ने सिंहासन पर बैठने के पहिलेही जीत लिया था और अंतिम दो को १६८८ई० में छीन लिया। इनको शिवाजी ने खूबही सताया था।

(३) जावली देश के जंगल को सिंह के रहने वाली भट्ठी न जान कर हठी आदिलशाह हाथी रूपी अफ़जल खां को भेज कर चूक गया। थरि=सिंह की भट्ठी।

मइगल अफजलै[1] पंजा बल पटक्यो । तां विगिरि[2] ह्वै करि निकाम निज धाम कहँ आकुत[3] महाउत सुअंकुस लै सटक्यो ॥६३॥

रूपक के दो अन्य भेद (न्यूनाधिक)

लक्षण । दोहा ।

घटि बढ़ि जहँ बरनन करै करिकै दुहुन अभेद ।
भूषन कवि औरौ कहत ह्वै रूपक के भेद ॥६४॥

---

(१) अफ़जल खां एक बीजापुरी सरदार था और आदिलशाह की ओर से शिवा जी से लड़ने गया था। युद्ध के पहिले ही अफ़-जल खां ने शिवा जी के पिता को अपना मित्र बतला कर उस से कहला भेजा कि "तुम हमारे मित्र-पुत्र अर्थात् भतीजे हो इससे हम से अकेले आ कर मिलो फिर चाहे लड़ना चाहे साथ करना"। शिवा जी यह विचार कर कि कदाचित् अफ़ज़ल कोई छल करै सादे कपड़ों के नीचे ज़िरहबख्तर पहिन कर और व्याघ्रनख छिपा कर उस से मिलने गया। अफ़ज़ल ने बातें करते करते शिवा जी पर कटार चलाही तो दी पर शिवा जी बच गया और उसने व्याघ्रनख से अफ़ज़ल का मुंह नोच लिया (छन्द नं० २५२ देखिए) और उसी दम तलवार से उसका काम तमाम किया। उसने पहिले ही से अपनी सेना लगा रक्खी थी सो एक दम वह अफ़ज़ल की फ़ौज पर टूट पड़ी और उसे तितर बितर कर दिया। यह घटना सन् १६५८ ईस्वी की है।

(२) बग़ैर, बिना।

(३) याकूत खां का पता इतिहास में नहीं है एक याकूत खां शाहजहां का सरदार था।

उदाहरण-कवित्त मनहरण।

साहि तनै सिवराज भूषन सुजसतव विगिर कलंक चन्द उर आनियतु है। पंचानन एक ही बदन गनि तोहि गजानन गज बदन बिना बखानियतु है। एक सीसही सहस सीस कला करिबे को दुहूँ दृग सों सहस दृग मानियतु है। दुहूँ कर सों सहस कर मानियतु तोहिँ दुहूँ बाहु सों सहस बाहु जानियतु है ॥६५॥

जेते हैं पहार भुव माहिँ पारावार तिन सुनि के अपार कृपा गहे सुख फैल है। भूषन भनत साहि तनै सरजा के पास आइबे को चढ़ी उर हौंसनि की ऐल[1] है। किरवान वज्र सों बिपच्छ करिबे के डर आनिकै कितेक आए सरन की गैल है। मघवा[2] महीं मैं तेजवान सिवराज बीर कोट करि सकल सपच्छ किए सैल है ॥६६॥

परिणाम।

लक्षण-दोहा।

जहँ अभेद करि दुहुन सों करत और स्वे[3] काम।
भनि भूषन सब कहत हैं तासु नाम परिनाम ॥६७॥

उदाहरण-मालती सवैया।

भौंसिला भूप बली भुव को भुज भारी भुजंगम

(१) ऐल = बूड़ा (ग्राम्य भाषा "अहिलो)"।
(२) इन्द्रने पहाड़ों के पंख वज्र से काट डाले थे उसी पर उक्ति है।
(३) अपना।

सें भरु लीनो । भूषन तीखन तेज तरन्नि सों बैरिन को कियो पानिप हीनो ॥ दारिद दौ[१] करि बारिद सों दलि त्यें धरनी तल सीतल कीनो । साहि तनै कुल चन्द सिवाजस चन्द सों चन्द कियो छवि छीनो॥६८॥

अन्यच्च—कवित्त मनहरण ।

बीर बिजैपुर के उजीर निसिचर गोल कुण्डा वारे घूघूते उड़ाए हैं जहान सों । मन्द करी मुख रुचि चन्द चकलता की, कियो भूषन भुषित द्विज चक्र खानपान सों ॥ तुरकान मलिन कुमुदिनी करी है हिन्दुवान नलिनी खिलायो विविधि विधान सों । चारु सिवनाम को प्रतापी सिव साहि सुव तापी सब भूमि यों कृपान भासमान सों ॥ ६८ ॥

उल्लेख ।

लक्षण—दोहा ।

कै बहुतै कै एक जहं एक वस्तु को देखि ।
बहु बिधि करि उल्लेख हैं सो उल्लेख उलेखि ॥७०॥

उदाहरण—मालती सवैला ।

एक कहैं कलपद्रुम है इमि पूरत है सब की चित चाहै । एक कहैं अवतार मनोज को यें तन मैं अति सुन्दरता है ॥ भूषन एक कहैं महि इन्दु यों राजविराजत बाढ़यो महा है । एक कहैं नरसिंह है संगर एक कहैं नरसिंह सिवा है ॥७१॥

---

(१) दौरहा; सूखे जंगल में चारों तरफ से लगने वाली आग । (दरिद्र रूपी दौरहा को गज (दान) रूपी मेघ से नाश करके) ।

पुनरपि यथा— मनहरण दंडक।

कबि कहै करन,[1] करनजीत[2] कमनैत, अरिन के उर माहिँ कीन्हो इमि छेव है। कहत धरेस सब धराधर सेस ऐसो और धराधरन को मेट्यो अहमेव है॥ भूषन भनत महाराज सिवराज तेरो राज काज देखि कोऊ पावत न भेव है। कहरी यदिल, मौज लहरी कुतुब कहै, बहरी निजाम के जितैया कहैं देव है॥ ७२॥

पैज प्रतिपाल भूमिभार को हमाल[3] चहुँ चक्क को अमाल[4] भयो दंडक जहान को। साहिन को साल भयो ज्वाल को जवाल भयो हर को कृपाल भयो हारके बिधान को॥ बीर रस ख्याल सिवराज भुवपाल तुव हाथ को बिसाल भयो भूषन बखान को?। तेरो करबाल भयो दच्छिन को ढाल भयो हिन्दु को दिवाल भयो काल तुरकान को॥ ७३॥

स्मृति।

लक्षण—दोहा।

सम सोभा लखि आन की सुधि आवत जेहि ठौर।
स्मृति भूषन तेहि कहत हैं भूषन कवि सिरमौर ७४

(१) कर्ण (बड़ा दानी था)।
(२) अर्जुन जिसने कर्ण जैसे महावीर को जीत लिया।
(३) बोझ उठाने वाला; हामिल।
(४) आमिल; हाकिम।

उदाहरण– मनहरण दंडक

तुम सिवराज ब्रजराज अवतार आजु तुमही जगत काज पोषत भरत हौ। तुम्हैं छोड़ि याते काहि बिनती सुनाऊं मैं तुम्हारे गुन गाऊं तुम ढीले क्यों परत हौ?॥ भूषन भनत वहि कुल[1] मैं नयो गुनाह नाहक समुझि यह चित मैं धरत हौ। और बाँभनन देखि करत सुदामा सुधि मोहिं देखि काहे सुधि भृगु की करत हौ?॥ ७५॥

भ्रम।

लक्षण–दोहा।

आन बात को आन मैं होत जहां भ्रम आय।
तासों भ्रम सब कहत हैं भूषन सुकवि बनाय॥ ७६॥

उदाहरण– मालती सवैया।

पीय! पहारन पास न जाहु यों तीय बहादुर सों कहैं सोषै। कौन बचैहै नवाब तुम्हैं भनि भूषन भौंसिला भूप के रोषै?॥ बन्दि सहस्त खँहू को कियो जसवन्त से भाऊ करन्न से दोषै। सिंह सिवा के सुबीरन सों गो अमीर न बाचि गुनीजन घोषै[2]॥७७॥

(१) उस (ब्राह्मण अर्थात् भृगु जी के) कुल में। भूषण कहते हैं कि मुझे ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने का नया गुनाह आप लगाते हैं और विष्णु के अवतार होने के कारण मुझ पर आप नाराज होते हैं क्योंकि भृगु जी ने विष्णु जी को लात मारी थी।

(२) घोषणा करता है।

सन्देह ।

लक्षण-दोहा ।

कै यह कै वह यों जहां होत आनि सन्देह ।
भूषन सो सन्देह है या मैं नहिं सन्देह ॥ ७८ ॥

उदाहरण-कवित्त मनहरण ।

आवत गुसुल खाने ऐसे कछु त्योर ठाने जाने अवरंग जू के प्रानन को लेवा है । रस खोट[1] भए ते अगोट आगरे मैं सातौ चौकी डांकि आनि घर कीन्हीं हद्द रेवा है ॥ भूषन भनत वह चहूँ चक्क चाहि कियो पातसाहि चकता कि छाती माहिं छेवा है । जान्यो न परत ऐसे काम है करत कोऊ गंधरब देवा है कि सिद्ध है कि सेवा है ॥ ७९ ॥

शुद्ध अपन्हुति—शुद्धापन्हुति ।

लक्षण-दोहा ।

आन बात आरोपिए साँची बात दुराय ।
शुद्धापन्हुति कहत है भूषन सुकवि बनाय ॥ ८० ॥

---

(१) रस खोंटा होना । (औरंगजेब ने जिन वादों से शिवा जी को दिल्ली बुलाया था उनका पालन न होने से रस जाता रहा और आगरे में लप्पाझप्पी कर शिवा जी ने औरंगजेब की सातों चौकियां नांघ कर रेवा (नर्मदा नदी) के पार आ उसीको अपने राज्य की सीमा बनाया ।

उदाहरण—मनहरण दण्डक ।

चमकतीं चपला न, फेरत फिरंगैं[1] भट, इन्द्र की न चाप रूप बैरष[2] समाज को । धाए धुरवा न, छाए धूरि के पटल, मेघ गाजिबो न बाजिबो है दुंदुभि दराज को ॥ भौंसिला के डरन डरानीं रिपु रानी कहैं, पिय भजौ, देखि उदौ पावस के साज को । घन की घटा न, गज घटनि सनाह साजे भूषन भनत आयो सेन सिवराज को ॥ ८१ ॥

हेतु अपन्हुति—हेत्वपन्हुति ।

लक्षण—दोहा ।

जहां जुगुति सों आन को कहिए आन उपाय ।
हेतु अपन्हुति कहत हैं ताकहँ कवि समुदाय ॥८२॥

उदाहरण—दोहा ।

सिव सरजा के कर लसै सो न होय किरवान ।
भुज भुजगेस भुजंगिनी भखति पौन अरि प्रान ॥८३॥

पुनरपि—कवित्त मनहरण ।

भाखत सकल सिव जी की करबाल पर भूषन कहत यह करि कै विचार को । लीन्हो अवतार करतार के कहे तें कलि म्लेच्छन हरन उद्धरन भुव भार को ॥ चंडी ह्वै घुमंडि अरि चंड मुण्ड चाबि करि

(१) शायद भाला या विलायती तलवार ।
(२) झंडी ।

पीवत रुधिर कछु लावत न बार को। निज भरतार भूत भूतन की भूख मेटि भूषित करत भूत नाथ भरतार को ॥ ८४ ॥

पर्य्यस्त अपन्हुति—पर्य्यस्तापन्हुति ।

लक्षण—दोहा ।

[1]वस्तु गोय ताको धरम आन वस्तु मैं रोपि ।
पर्यस्तापन्हुति कहत कवि भूषन मति वोपि ॥८५॥

उदाहरण—दोहा ।

काल करत कलिकाल मैं नहिँ तुरकन को काल ।
काल करत तुरकान को शिव सरजा करबाल ॥८६॥

पुनरपि—कवित्त मनहरण ।

तेरे ही भुजन पर भूतल को भार कहिबे को सेसनाग दिगनाग हिमाचल है। तेरो अवतार जग पोसन भरन हार कछु करतार को न तामधि अमल है ॥ साहिन मैं सरजा समत्थ सिवराज कवि भूषन कहत जीबो तेरोई सफल है। तेरो करबाल करै म्लेच्छन को काल बिन काज होत काल बदनाम धरातल है ॥ ८७ ॥

---

(१) इस अलंकार में सिवाय लक्षण में दी हुई बातों के यह भी आवश्यक है कि एक पद दोहरा कर आवै। कवि के उदारण में यह बात प्रस्तुत है पर लक्षण में छूट रही है।

भ्रान्त अपन्हुति—भ्रान्तापन्हुति ।

लक्षण–दोहा ।

संक श्रान को होत ही जहँ भ्रम कीजै दूरि ।
भ्रान्तापन्हुति कहत हैं तहँ भूषन कवि भूरि ॥८८॥

उदाहरण–कबित्त मनहरण ।

साहि तनै सरजा के भय सों भगाने भूप मेरु मैं लुकाने ते लहत जाय वोत[1] हैं । भूषन तहाऊँ मरहट पति के प्रताप पावत न कल श्रति कौतुक उदोत हैं ॥ "सिव आयो सिव आयो" संकर के आगमन सुनि के परान ज्यों लगत श्ररि गोत हैं । [2]"सिव सरजा न यह सिव है महेस" करि योंही उपदेस जच्छ रच्छक से होत हैं ॥ ८९ ॥

पुनः–मालती सवैया ।

[2]एक समै सजि कै सब सैन सिकार को आलमगीर सिधाए । "आवत है सरजा सम्हरौ" यक ओर ते लोगन बोल जनाए ॥ भूषन भो भ्रम औरँग के सिव भौंसिला भूप कि धाक धुकाए । धायकै "सिंह" कह्यो समुझाय करौलानि[3] आय अचेत उठाए ॥९०॥

(१) ओक; घर ।
(२) भयानक रस ।
(३) शिकार खेलाने वाले ।

छेक अपन्हुति—छेकापन्हुति।

लक्षण- दोहा।

जहां और को संक करि सांच छिपावत बात।
छेकापन्हुति कहत हैं भूषन कवि अवदात ॥ ८१ ॥

उदाहरण-दोहा।

तिमिर बंस हर अरुन कर आयो, सजनी! भोर? ।
सिव सरजा, चुप रहि सखी, सूरज कुल सिरमौर॥८२॥
दुरगहि बल पंजन प्रबल सरजा जिति रन मोहिं।
औरँग कहै देवान सों सपन सुनावत तोहिं ॥ ८३ ॥
सुनि सु उजीरन यों कह्यो "सरजा, सिव महराज?"।
भूषन कहि चकता सकुचि "नहिं, सिकार मृगराज" ८४

कैतव अपन्हुति—कैतवापन्हुति।

लक्षण-दोहा।

जहँ कैतव[1], छल, ब्याज मिसि, इन सों होत दुराव।
कैतवपन्हुति ताहि सों भूषन कहि सतिभाव ॥८५॥

उदाहरण-कवित्त दण्डक (मनहरण)।

[2]साहिन के सिच्छक सिपाहिन के पातसाह संगर

(१) धोखा।

(२) भयानक रस पूर्ण। कवि गोविन्द गिल्ला भाई जी की हस्तलिखित प्रति में यह छन्द पर्य्यायोक्ति के उदाहरण में दिया है पर अन्य सभी प्रतियों में वह कैतवापन्हुति ही के उदाहरण में पाया जाता है। पर्य्यायोक्ति में मिषि गौण रूप से होता है, प्रकट नहीं जैसा कि इस छन्द में है, पर कैतवापन्हुति में वह प्रगट ही होता है।

मैं सिंह कैसे जिन के सुभाव हैं। भूषन भनत सिव सरजा कि धाक ते वै काँपत रहत चित गहत न चाव हैं ॥ अफजल की अगति सासता कि अपगति बहलोल[१] बिपति सों डरे उमराव हैं। पक्का मतो करि कै मलिच्छ मनसब छोड़ि मक्का ही के मिसि[२] उतरत दरियाव हैं ॥ ८६ ॥

---

(१) बहलोल खां सन् १६३० ई० में निज़ामशाही बादशाह के यहां था और शाहजहां बादशाह की सेना इसे न दबा सकी। सन् १६६१ में इसने बीजापुर सरकार की सेवा ग्रहण कर ली और शिवा जी से युद्ध करने को भेजा गया। इतने बीच में शीदी जौहर नामक सेनापति बीजापुर सरकार से बिगड़ खड़ा हुआ और बहलोल ने (जिस का पूरा नाम अब्दुल करीम बहलोल खां था) उसे परास्त किया। सन् १६७३ में इसे ख़वास खां वज़ीर ने शिवा जी से लड़ने को भेजा पर मरहटों ने इसे घेर कर खूबही तंग किया और बड़ी कठिनाई से इसका पिंड छोड़ा [उन्होंने इसे वास्तव में बन्दी नहीं बना पाया जैसा कि छन्द नं० ३५६ में लिखा है]। सन् १६७५ में बहलोल के इशारे से ख़वास खां मार डाला गया और उसके ठौर बहलोल बीजपुर के नाबालिग बादशाह का मुतवल्ली (Regent) बनाया गया। इसने खानजहां बहादुर को परास्त कर मुग़लों से मेल किया। सन् १६७७ में शिवाजी ने कुतुबशाह से मेल किया जिस में एक शर्त यह भी थी कि बहलोल बीजापुर के राज्याधिकार से हटा दिया जाय। इस पर बहलोल मुगल सरदार ख़ानजहां बहादुर को साथ ले कुतुब शाह पर दौड़ धाया पर उसे शिवा जी के साथी मधुना पंत ने, जो कुतुबशाह का वजीर हो गया था, घोर युद्ध करके परास्त किया। इस युद्ध में बहलोल मुगलों के साथ लड़ा, इसीसे भूषन जी ने भ्रमवश इसे दिल्ली का सेवक समझ लिया। छन्द नं० १६१ और २१८ देखिए]। सन् १६७८ ई० में यह मरा।

(२) शिवा जी मक्का जाने वाले सैयदों को प्राय: नहीं सताता था।

साहि तनै सरजा खुमान [1] सलहेरि पास कीन्हों कुरु खेत खीझि मीर अचलन सों। भूषन भनत बलि करी है अरीन धर धरनी पै डारि नभ प्रान दै बलन सों॥ [2] अमर के नाम के बहाने गो अमरपुर चन्दावत लरि सिवराज के दलन सों। कालिका प्रसाद के बहाने ते खवायो महि बाबू उमराव राव पसु के छलन सों॥ ८७॥

---

(१) सलहेरि के क़िले को शिवा जी के प्रधान मंत्री मोरो पंत ने १६७१ ई० में जीत लिया था तभी से इस पर शिवा जी का अधिकार हुआ। दूसरे ही साल १६७२ ई० में उसे दिल्ली के सेनापति दिलेरखाँ (जिसे लोग दलेल खाँ भी कहते हैं) ने घेरा और शिवा जी ने मोरो पंत और प्रताप रावगूजर के आधिपत्य में एक वृहद् सेना उससे लड़ने को भेजी। दिलेरखाँ स्वयं तो न लड़ा पर इखलास ख़ां को एक बहुत बड़ी सेना सहित लड़ने को भेजा। इस बड़े ही विकराल संग्राम में मुग़लों को बड़ी हानि पहुँची और उनके मुख्य सेनानायकों में से २२ मारे गए और अनेक बन्दी हुए एवं समस्त सेना एकदम तितर बितर होगई। तभी तो भूषण जी ने इसका ऐसा भयंकर वर्णन भी किया है (छन्द नं० २२६, २८२, ३३१, ३५५, एवं शिवाबावनी के नं० २५ व २६)।

(२) कोई अमर सिंह चन्दावत भी इसी युद्ध में मारा गया था। इतिहास में इस का पता नहीं लगता पर जान पड़ता है कि यह कोई भारी सरदार था क्योंकि भूषण जी ने बारबार इसके विषय में सनमान पूर्वक लिखा है और शिवा जी की प्रशंसा करते हुए यहां तक कहा है कि "हिन्दु बचाय बचाय यही अमरेस चँदावत लौं कोई टूटै" (छ० नं० २७५, १५५, २२५, २३८ देखिए)। मेवाड़ (उदयपुर) के प्रसिद्ध चन्दा जी के वंशधर लोग "चन्दावत" कहलाते हैं।

उत्प्रेक्षा ।

लक्षण—दोहा ।

आन बात को आन मैं जहँ सम्भावन होय ।
वस्तु, हेतु, फल युत कहत उत्प्रेक्षा है सोय ॥ ८८ ॥

उदाहरण । वस्तूत्प्रेक्षा—मालती सवैया ।

दानव आयो दगा करि जावली दीह भयारो महामद भारयो । भूषन बाहु बली सरजा तेहि भेटिबे को निरसंक पधारयो ॥ बीछू के घाय गिरे अफजल्लहि ऊपरही सिवराज निहारयो । दाबि यों बैठो नरिन्द अरिन्दहि मानो मयन्द गयन्द पछारयो ॥ ८९ ॥

साहि तनै सिव साहि निसा मैं निसाँक लियो [1]गढ़सिंह सोहानौ । राठिवरौ को सँहार भयो लरिकै

---

(१) इसका नाम पहिले कोंडाने था पर जब यह किला १६४७ में शिवा जी के अधिकार में आया तब उसने इसका नाम सिंहगढ़ रख दिया । १६६५ में शिव जी ने इसे जयसिंह को दे दिया। यह सह्याद्रि पर्व्वतमाला के पूरबी किनारे पर था जहाँ से पुरंधर पहाड़ी दक्षिण [Deccan] की ओर मुड़ जाती है । यह बड़ाही अभेद्य दुर्ग था पर शिवा जी को दबकर उसे जयसिंह को देना ही पड़ा । सन् १६७० ई० की माघबदी ८ की रात को उसे फिर जीतलेने के लिये शिवाजी के बहादुर सरदार बीरवर तन्नाजी ने तैयारी की । इस अवसर पर शिवा जी ने, जो कि किलेदार

सरदार गिर्यो [1]उदै भानौ॥ भूषन यों घमसान भो भूतल घेरत लोथिन मानो मशानौ। ऊँचे [2]सुछज्ज छटा उचटी प्रगटी परभा परभात कि मानौ॥ १०० ॥

उदयभानु १ राठौर की बहादुरी को भली भांति जानता था, अपने दरबार में पान का बीड़ा रखकर अपने सरदारों से कहा था कि "कौन ऐसा बीर है जो यह बीड़ा उठावै और उदय भानु से लड़कर सिंहगढ़ छीनले ?" किसी की हिम्मत न पड़ी पर तन्ना जी ने बीड़ा उठाया। यह बात सुनकर उसके भाई शैलर (उपनाम सुरजाजी) ने उसे समझाया कि उदयभानु बड़ा बीर है पर जब तन्ना जी ने एक न मानी तब शैलर भी उसके साथ हो लिया और दोनों भाई सेना सहित किले पर जाटूटे। तीन सौ मरहटे क़िले के ऊपर पहुँच गए और तब उदयभानु को इसका पता लगा! बस, फिर क्या था, घोर युद्ध प्रारम्भ हुआ जिसमें उदय धानु के साथी भाग निकले। तब उदयभानु ने तन्ना जी को द्वन्द युद्ध के लिये प्रचारा और बहादुरी के जोश में तन्ना जी अपने साथियों को पीछे छोड़ अकेलाही उससे जा भिड़ा पर दुर्भाग्य वश उसके हाथ से मारा गया। तब तो बड़े बेग से शैलर उसपर जा टूटा और उसका कामही तमाम करदिया और किला मर-हटों के हाथ लगा। जब शिवाजी ने यह समाचार सुना तो उसने बड़े शोक में आकर कहा कि "भट्टी तो मिली पर हाय! सिंह (तन्नाजी एवं उदयभानु) जाते रहे।" यह क़िला तब से सदा शिवाजी के पास रहा।

(२) इस युद्ध में तन्नाजी मौलिश्री किले के छज्जों से आँगन में ससैन कूदा था।

पुनरपि—कवित्त मनहरण

दुरजन दार भजि भजि बे सम्हार चढ़ीं उतर[1]पहार डरि सिवजी नरिन्द ते । भूषन भनत बिन भूषन बसन, साधे भूखन पियासन हैं नाहन को निन्दते ॥ बालक अयाने बाट बीचही बिलाने कुम्हिलाने मुख कोमल अमल अरबिन्द ते । [2]दृगजल कज्जल कलित बढ़यो कढ़यो मानो दूजा सोत तरनि तनूजा कौ [3]कलिन्द ते ॥ १०१ ॥

अपरंच—दोहा ।

महाराज सिवराज तव सुघर धवल धुवकित्ति ।
छवि छटान सों छुवत सी छिति अंगन दिग भित्ति ॥१०२॥

---

[१] हिमाचल । [२] भयानक रस पूर्ण । उस समय की कठोरता को देखिए कि कोमल चित्त ब्राह्मण होकर भी भूषण जी को बेचारे बालकों पर भी दया न आई और उनकी महा दुर्गति को आप कैसे आनन्द पूर्व्वक वर्णन कर रहे हैं ।

[३] वह पाहाड़ जिससे यमुना जी निकली हैं । इसीसे उनका नाम कालिन्दी है ।

हेतूत्प्रेक्षा । कवित्त मनहरण ।

लूट्यो[1] खानदौरा[2] जोरावर[3] सफजंगअरु लह्यो मार
[4] तलबखां मनहुँ अमाल है । भूषन भनत लूट्यो पूना
मैं[5] सइस्त खानगढ़न मैं लूट्यो त्यों[6] गढ़ोइनको जाल है॥
हेरि हेरि कूटि सलेहरि बीच सरदार घेरि घेरि लूट्यो
सब कटक कराल है । मानो हय हाथी उमराव करि
साथी अवरंग डरि सिवा जी पै भेजत[7] रिसाल है ॥१०३॥

---

(१) ख़ान दौराँ को शाहजहाँ ने दक्षिण का सूबेदार १६३४ ई० में नियत किया था । बादशाह की ओर से उसने बीजापुर वालों से युद्ध कर लाभदायक संधि की । बाद को औरंगजेब ने इसे इलाहाबाद का किला जीतने भेजा था । इसका नाम नौशेरी खाँ था (छन्द नं० ३०७ देखिए) पर मुग़लों के लिये अनेक किले जीतने पर इसे ख़ानदौराँ की पदवी मिली ।

(२) यह नाम इतिहास में नहीं मिलता । या तो यह शब्द विशेषण मात्र है अथवा इस नाम का कोई साधारण सरदार होगा अथवा सीदी जौहर (छन्द नं० १०७ नोट १ देखिए) को भूषण जी यों कहते हों ।

(३ और ४) यह भी कोई साधरण लोग होंगे । इतिहास में इनका नाम नहीं मिलता । नं० ३ का नाम छत्र प्रकाश में छत्रसाल जी से लड़ने वालों में लिखा है । वह दिल्ली का एक सरदार था और उस का ठीक नाम सफ़दरजंग था ।

(५) शाइस्ता खाँ (छन्द नं० ३५ नोट देखिए) ।

(६) गढ़पति अथवा क़िलेदार ।

(७) इरसाल, ख़िराज ।

फलोत्प्रेक्षा । मनहरण दंडक ।

जाहि पास जात सो तौ राखि ना सकत याते तेरे पास अचल सुप्रीति नाधियतु है । भूषन भनत सिव राज तव कित्ति सम और को न कित्ति कहिबे को काँ-धियतु है ॥ इन्द्र को अनुज तैं उपेन्द्र अवतार याते तेरो बाहुबल लै सलाह साधियतु है। पायतर आय नित निडर बसायबे को कोट बाँधियतु मानो पाग बाँधियतु है ॥ १०४ ॥

दोहा ।

दुवन सदन सब के बदन सिव सिव आठोयाम ।
निज बचिबे को जपत जनु तुरकौ हरको नाम ॥१०५॥

गन गुप्तोत्प्रेक्षा (गम्योत्प्रेक्षा)

लक्षण–दोहा ।

मानो इत्यादिक बचन आवत नहिँ जेहि ठौर ।
उत्प्रेक्षा गन गुप्त सो भूषन कहत अमौर ॥ १०६ ॥

उदाहरण–मनहरण ।

देखत उँचाई ⁽⁸⁾उदरतपाग, सूधी राह द्योसहू मैं चढ़ै ते जे साहस निकेत हैं । सिवजी हुकुम तेरो पाय

(८) गिरती है ।

पैदलन सलहेरि [1]परनालोते वै जीते [2]जंनुखेत हैं ॥
सावन भादौं की भारी कुहूकी अँध्यारी चढ़ि दुग्ग
पर जात [3]मावलीदल सचेत हैं । [4]भूषन भनत ता-
की बात मैं बिचारी तेरे परताप रबि की उज्यारी
गढ़ लेत हैं ॥ १०७ ॥

पुनः । दोहा

और गढ़ोई नदीनद सिव गढ़ पाल [5]दरयाव ।
दौरि दौरि चहुँ ओर ते मिलत आनि यहि भाव १०८

रूपकातिशयोक्ति ।

लक्षण—दोहा ।

ज्ञान करत उपमेय को जहँ केवल उपमान ।
रूपकातिसय उक्ति सो भूषन कहत सुजान ॥ १०९ ॥

---

(१) यह किला १६५८ के अंत में शिवाजी के अधिकार में आया । बीजापुर की ओर से शीदी जौहर ने इसे मई १६६० में फिर छीन लेने के विचार से घेरा पर वह सफलमनोरथ न हुवा तब स्वयं बीजापुराधीश ने १६६१ में इसे घेर कर जीत लिया परंतु शिवाजी ने इसे १६७३ ई० में फिर से छीनकर अपने अधिकार में कर लिया ।

(२) जैसे साफ मैदान हैं अर्थात इतने ऊँचे ऊँचे किलों पर पैदल गण यों चढ़ गए जैसे कोई समथल भूमि पर दौड़े ।

(३) एक पहाड़ी देश के रहने वाले शिवाजी के पैदल सिपाही ।

(४) इस छन्द में गम्योत्प्रेक्षा अलंकार ठीक नहीं जँचता ।

(५) दरिया अर्थात् (फरसी में) समुद्र ।

उदाहरण—मनहरण दंडक ।

बासव से बिसरत बिक्रम की कहा चली, बिक्रम लखत बीर बखत बिलन्द के । जागे तेज बृन्द सिवा जी नरिन्द मसनन्द माल मकरन्द कुलचन्द साहि-नन्द के ॥ भूषन भनत देस देस बैरि नारिन मैं होत अचरज घर घर दुख दंद के । [1]कनक लतानि इन्दु इन्दु माहिँ अरबिन्द झरैं अरबिन्दन ते बुन्द मकरन्द के ॥ ११० ॥

भेदकातिशयोक्ति ।

लक्षण—दोहा ।

जेहि थर आनहि भाँति की बरनत बात कछूक।
भेदकातिसय उक्ति सो भूषन कहत अचूक ॥ १११ ॥

उदाहरण—कवित्त मनहरण ।

[2]स्रीनगर नयपाल [3]जुमिलाके छितिपाल भेजत

---

(१) सोने की बौंड़ी (सी देह) में चन्द्रमा (सामुख) और चन्द्रमा (से मुख) में कमल (से नेत्र) और कमल [जैसे नेत्रों] से पुष्परस [के समान आंसू] बून्द झर रहे हैं।

(२) कश्मीर।

(३) इस नाम के किसी स्थान का पता नहीं लगता। एक स्थान जलना था जो औरंगाबाद के पूरब की ओर जयदेव राय मनसबदार दिल्ली के देश में बसा था। अथवा यह फ़ारसी शब्द जुमला (अर्थात् सब कहीं के) हो सकता है।

[1]रसालचौंर गढ़ कुही बाज की। मेवार[2]ढुँढार[3] मारवाड़[4]औ बुँदेलखंड[5]झारखंड[6] बाँधौ धनी[7] चाकरी इलाज की॥ भूषन जे पूरब पछाँह नरनाह ते वै ताकत पनाह दिलीपति सिरताज की। जगत को जैत वार जीत्यो अवरंगजेब न्यारी रीति भूतल निहारी सिवराज की॥ ११२॥

अक्रमातिशयोक्ति ।

लक्षण-दोहा ।

जहां हेतु अरु काज मिलि होत एकही सोय ।
अक्रमातिसय उक्ति सो कहि भूषन कबि नाय ॥११३॥

---

(१) इरसाल; खिराज ।

(२) उदयपुर की रियासत ।

(३) रियासत अम्बर अर्थात् जयपुर ।

(४) रियासत जोधपुर ।

(५) इसमें अब चार सरकारी ज़िले (झाँसी, बाँदा, हमीरपुर [जो अब महोबे के नाम से कहावेगा] और जालौन) एवं ज़िला इलाहाबाद की तीन तहसीलें और २०-२२ देशी रियासतें हैं। छत्रसाल के पिता चम्पतिराय ने कुछ दिनों मुग़लों की सेवा स्वीकार की थी और बुँदेलखंड के अन्य सरदार भी औरंगजेब के वशीभूत होगए थे। इसका विस्तृत हाल भूमिका में देखिए।

(६) उडीसा में गोंडवाने के पूरब में है। इसे उड़ीसा की काशी कहते हैं क्योंकि यहाँ पहिले संस्कृत की बड़ी चरचा थी।

(७) बांधवा का राजा। भूषण जी का तात्पर्य्य यह है कि इतने इतने नामी देशों के राजे महाराजे औरंगजेब को कर देते, उस की सेवा तक स्वीकार करते एवं उसके शरण में रहते थे पर शिवा जी का ढंग कुछ न्याराही था, वह बादशाह की बिलकुल परवा न करता और उनसे सदा लड़ाई झगड़ा किया करता था।

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

उद्धत अपार तव दुंदुभी धुकार साथ लंघै पा-
रावार बाल बृन्द रिपु गन के । तेरे चतुरंग के तुरंगन
के रँगेरज[1] साथही उड़ात रजपुंज[2] हैं परन[3] के ॥
दच्छिन के नाथ सिवराज ! तेरे हाथ चढ़ैं धनुष के
साथ गढ़ कोट दुरजन के । भूषन असीसैं, तोहिं करत
कसीसैं[4] पुनि बानन के साथ छूटैं प्रान तुरकन के ॥११४॥

चंचलातिशयोक्ति ।

लक्षण—दोहा ।

जहाँ हेतु चरचाहि मैं काज होत ततकाल ।
चंचलातिसय उक्ति सो भूषन कहत रसाल ॥ ११५ ॥

उदाहरण—दोहा ।

आयो आयो सुनतही सिव सरजातुव नावँ ।
बैरि नारि दृग जलन सों बूड़ि जात अरि गावँ ॥११६॥

---

[१] घोड़ों का धूल से रँग जाने से अर्थात धावा के लिए
तने ही से ।

[२] राज श्री का ढ़ेर ।

[३] शत्रुओं के । इस पद में पूर्ण भयानक रस है ।

[४] कशिश करते ही अर्थात् बाण खींचते ही ।

अन्यच्च-कवित्त मनहरण ।

गढ़नेर[1]गढ़[2]चाँदा[3]भागनेर[4]बीजपुर नृपन कि नारी रोय हाथन मलति हैं । करनाट[5]हबस[6]फिरंगहू[7]बिलायत[8]बलख[9]रूम[10]अरि तिय छतियाँ दलति हैं ॥ भूषन भनत साहि तनै सिवराज एते मान तव धाक आगे दिसा उबलति हैं । तेरी चमू चलिबे कि चरचा चले ते चक्रवर्तिन कि चतुरंग चमू बिचलति हैं ॥ ११७ ॥

---

[१] व [२] गढ़ का नेर अर्थात नगर। गढ़ नामक एक देश कड़ा मानिक पुर के समीप था जिस में पहाड़ियाँ और जंगल बहुत थे । इसे मुग़लों ने १५६० में जीत लिया था ।

[३] इसे मरहटोंने अपने अधिकार में कर लिया था और अंत को कर्नल ऐडम्स ने उन से मई सन् १८१८ में जीत लिया ।

[४] भागनेर अर्थात भागनगर को गोल कुंडा वाले मुहम्मद कुतुबुस्सुल्कने अपनी प्रिय पत्नी भागमती के नाम पर चार मील पर बसाया था ।

[५] करनाटक पर शिवाजी ने १६७६–७८ ई: में धावा किया था ।

[६] हबशियों का स्थान अबिसिनिया ।

[७] योरप अथवा बावर का देश फिरंगाना ।

[८] मुसलमानों की बिलायत [अफ़ग़ानिस्तान, तुर्किस्तान, फ़ारस इत्यादि] ।

[९] अफ़ग़ानिस्तान का एक प्रसिद्ध शहर ।

[१०] टरकी ।

अत्यन्तातिशयोक्ति ।

लक्षण--दोहा ।

जहाँ हेतु ते प्रथमही प्रकट होत है काज ।
अत्यन्ताति सयोक्ति सो कहि भूषन कबिराज ॥११८॥

उदाहरण—कबित्त मनहरण ।

मंगन मनोरथ के प्रथमहि दाता तोहिँ कामधेनु कामतरु सो गनाइयतु है । याते तेरे गुन सब गाय को सकल कवि, बुद्धि अनुसार कछु तऊ गाइयतु है॥ भूषन भनत साहि तनै सिवराज निज बखत बढ़ाय करि तोहि ध्याइयतु है । दीनता को डारि औ अधीनता बिडारि दीह दारिद को मारि तेरे द्वार आइयतु है ॥ ११९ ॥

पुनः । दोहा

कबि तरुवर सिव सुजस रस सींचे अचरज मूल।
सुफल होत है प्रथमही पीछे प्रगटत फूल[१] ॥ १२० ॥

सामान्य विशेष ।

लक्षण—दोहा ।

कहिबे जहँ सामान्य है कहै जु तहाँ विशेष।
सो सामान्य विशेष है बरनत सु कवि अशेष ॥१२१॥

उदाहरण—दोहा ।

और नृपति भूषन कहै करैं न सुगमौ काज ।
साहि तनै सिव सुजस लो करै कठिनऊ आज॥१२२॥

(१) फूलना; प्रसन्नता ।

पुनः । मालती सवैया ।

जीति लई बसुधा सिगरी घमसान घमंड कै बीरन हू की । भूषन भौंसिला छीनि लई जगती उमराव अमीरन हू की ॥ साहि तनै सिवराज कि धाकनि छूटि गई धृति धीरन हू की । मीरन के उर पीर बढ़ी यों जु भूलि गई सुधि पीरन हू की ॥ १२३ ॥

तुल्य योगिता ।

लक्षण-दोहा ।

तुल्य जोगिता तहँ धरम जहँ बरन्यन[1] को एक ।
कहूँ अबरन्यन[2] को कहत भूषन बरनि बिबेक ॥१२४॥

उदाहरण-मनहरण दंडक ।

चढ़त तुरंग चतुरंग साजि सिवराज चढ़त प्रताप दिन दिन अति अंग मैं । भूषन चढ़त मरहट्टन के चित्त चाव खग्ग खुलि चढ़त है अरिन के अंग मैं ॥ भौंसिला के हाथ गढ़ कोट हैं चढ़त अरि जोट व्है चढ़त एक[3] मेरु गिरि सृंग मैं । तुरकान गन ब्योम यान हैं चढ़त बिनुमान है चढ़त बदरंग[4] अवरंग मैं ॥१२५॥

---

[१] उपमेयों का ।

[२] उपमानों का ।

[३] अरिन के जोडे, एक होकर अर्थात् बहुत से अरि साथ साथ ।

[४] बिनमान औरंग में बदरंग चढ़त है ।

अन्यच्च–दोहा।

सिव सरजा भारी भुजन भुव भरु धरयो सभाग।
भूषन अब निहचिंत हैं सेसनाग दिगनाग ॥१२६॥

द्वितीय लक्षण–दोहा।

हित अनहित को एक सो जहँ बरनत व्यवहार।
तुल्य जोगिता और सो भूषन ग्रन्थ बिचार ॥१२७॥

उदाहरण–कबित्त मनहरण।

गुनन[1] सों इनहूँ को बाँधि लाइयतु पुनि गुनन[2] सों उनहूँ को बाँधि लाइयतु है। पाय[3] गहि इनहूँ को रोज ध्याइयतु अरु पाय[4] गहि उनहूँ को रोज ध्याइयतु है॥ भूषन भनत महराज सिवराज रस रोस तो हिये मैं एक भाँति पाइयतु है। दोहाई[5] कहे ते कबि लोग ज्याइयतु अरु दोहाई[6] कहे ते अरि लोग ज्याइयतु है॥ १२८॥

---

[१] गुण अर्थात् अपने अच्छे गुणों के कारण।
[२] रस्सियों से।
[३] पैर छूकर।
[४] पाकर पकड़ कर।
[५] दोहा (छन्द) कहने से।
[६] दोहाई करने से; शरण आने से।

दीपक ।

लक्षण-दोहा ।

बर्न्य अबर्न्यन को धरम जहँ बरनत हैं एक ।
दीपक ताको कहतहैं भूषन सुकवि विवेक ॥ १२९ ॥

उदाहरण-मालती सवैया ।

कामिनि कंत सों जामिनि चन्द सों दामिनि पावस मेघ घटा सों। कीरति दान सों सूरति ज्ञान सों प्रीति बड़ी सनमान महा सों ॥ भूषन भूषन सों तरुनी नलिनी नव पूषन[1] देव प्रभा सों । जाहिर चारिहु ओर जहान लसै हिँदुवान खुमान सिवा सों ॥ १३० ॥

दीपका वृत्ति ।

लक्षण-दोहा ।

दीपक पद के अरथ जहँ फिर फिर करत बखान ।
आवृति दीपक तहँ कहत भूषन सुकवि सुजान ॥१३१॥

उदाहरण-दोहा ।

सिव सरजा तव दान को करि को सकत बखान ? ।
बढ़त नदीगन दान-जल उमड़त नद गजदान ॥१३२॥

पुनः । मालती सवैया ।

चक्रवती चकता चतुरंगिनि चारिउ चापि लई दिसि चंका । भूप दरीन दुरे भनि भूषन एक अने-

[१] सूर्य्य देवता । "सरस्वती औ भूषण ग्रन्थावली तुझे मन भाती थी । पूषण नाम सूर्यका कह कर ख़ूब हँसी आ जाती थी" हमारा "हा ! काशी प्रकाश" देखिए ।

कन बारिध नंका ॥ औरँग साहि सों साहि को नन्द लरो सिवसाहि बजाय कै डंका । सिंह कि सिंह चपेट सहै गजराज सहै गजराज को धंका ॥ १३३ ॥

अन्यच्च । मनहरण दंडक

अटल रहे हैं दिग अंतन के भूप धरि रैयति को रूप निज देस पेस करि कै । राना[1] रह्यो अटल बहाना करि चाकरी को बाना तजि भूषन भनत गुन भरि कै ॥ हाड़ा[2] रायठौर[3] कछवाहे[4] गौर[5] और रहे अटल चकत्ता को चमाऊ[6] धरि डरि कै । अटल सिवाजी रह्यो दिल्ली को निदरि धीर धरि ऐंड़ धरि तेग धरि गढ़ धरि कै ॥ १३४ ॥

प्रति वस्तूपमा ।

लक्षण–दोहा ।

बाक्यन को जुग होत जहँ एकै अरथ समान ।
जुदो जुदो करि भाषिए प्रति बस्तूपम जान ॥ १३५ ॥

---

[१] महाराणा उदय पुर ।

[२] हाड़ा क्षत्रिय बूंदी और कोटा में राज्य करते हैं ।

[३] जोधपुर के महाराजा लोग ।

[४] कुशवाहे अर्थात कुशवंशी क्षत्रिय जैसे अम्बर [जयपुर] ।

[५] गौरों कीं रियासत छोटी थी जिस की राजधानी सुपुर [राज पूताना] में थी । सिन्धियाने उस्के वृहदंश पर कबजा कर लिया । पृथ्वीराज के समय में गौर राजाओं का बडा मान और प्रभुत्व था ।

[६] चमर ।

उदाहरण—लीलावती छन्द[1]

मद जल धरन द्विरद बल राजत, बहु जल धरन जलद छबि साजै । पुहुमि धरन फनि नाथ लसत, अति तेज धरन ग्रीषम रबि छाजै ॥ खरग धरन सोभा तहँ राजत रुचि भूषन गुन धरन समाजै । दिल्लि दलन दक्खिन दिसि थम्भन ऐंड़[2] धरन सिवराज बिराजै ॥ १३६ ॥

दृष्टान्त ।

लक्षण—दोहा

जुग बाक्यन को अरथ जहँ प्रतिबिम्बित सो होत ।
तहाँ कहत दृष्टांत हैं भूषन सुमति उदोत ॥ १३७ ॥

उदाहरण—दोहा ।

शिव ! औरंगहि जिति सकै और न राजा राव ।
हत्थिमत्थ पर सिंह बिनु आन न घालै घाव ॥ १३८ ॥
चाहत निरगुन सगुन को ज्ञानवन्त गुनधीर ।
यही भाँति निरगुन गुनिहि सिवा नेवाजत बीर ॥ १३९ ॥

पुनः । मालती सवैया

देत तुरी गुन गीत सुने बिनु देत करी गन गीत सुनाए । भूषन भावत भूप न आन जहान खुमान कि

---

(१) इस का लक्षण यह है "लघुगुर को जहँ नेम नहिँ बत्तिस कल सब जान । तरल तुरंगम चाल सो लीलावती बखान ॥"

(२) "ऐंड़ एक सिवराज निबाही । करै आपने चित की चाही ॥ आठ पात साही झकझोरै। सूबन पकरि दंड लै छोरै॥" (छत्र प्रकाश)।

कीरति गाए॥ मंगन को भुवपाल घने पै निहाल करै सिवराज रिझाए। आन ऋतैं बरसे सरसै उमड़ै नदिया ऋतु पावस पाए॥ १४०॥[1]

निदर्शना[2]

लक्षण—दोहा।

सदृश वाक्य जुग अरथ को करिए एक अरोप।
भूषन ताहि निदर्शना कहत बुद्धि दै ओप॥१४१॥

उदाहरण—मालती सवैया।

मच्छहु कच्छ मैं कोल नृसिंह मैं बावन मैं भनि भूषन जो है। जो द्विजराम मैं जो रघुराम मैं जोब कह्यो बलरामहु को है। बौद्ध मैं जो अरु जो कलकी महँ बिक्रम हूबे को आगे सुनो है। साहस भूमि अधार सोई अब श्री सरजा सिवराज मैं सो है॥ १४२॥

अपरञ्च। कवित्त मनहरण।

कीरति सहित जो प्रताप सरजा मैं बर मारतंड मध्यतेज चाँदनी सो जानी मैं। सोहत उदारता औ सीलता खुमान मैं सो कंचन मैं मृदुता सुगंधता

---

(१) इस छन्द से विदित होता है कि भूषण जीने शिवराज से बहुत कुछ दान पाया।

(२) दृष्टांत और निदर्शना में भेद यह है कि पहले में वाचक नहीं होता पर दूसरे में होता है। प्रतिवस्तूपमा और इन दोनों में यह अन्तर है कि उसमें दोनों समवाक्य स्वतंत्र होते हैं पर इन दोनों में नहीं।

बखानी मैं। भूषन कहत सब हिन्दुन को भाग फिरे चढे़ ते कुमति चकताहू की निसानी मैं। सोहत सुबेस दान कीरति सिवा मैं सोई निरखी अनूप रुचि मोतिन के पानी मैं ॥ १४३ ॥

अन्यच्च-दोहा।

औरन को जो जनम है सो याको यक रोज।
औरन को जो राज सो सिव सरजा की मौज ॥१४४॥
साहिन सों रन माँडिबो कीबो सुकबि निहाल।
सिव सरजा को ख्याल है औरन को जंजाल॥१४५॥

व्यतिरेक [१]

लक्षण-दोहा।

सम छबि वान दुहून मैं जहँ बरणत बढ़ि एक।
भूषन कवि कोविद सबै ताहि कहत व्यतिरेक॥१४६॥

उदाहरण-छप्पय।

त्रिभुवन मैं परसिद्ध एक अरि बल वह खंडिय।
यह अनेक अरि बल बिहंडि रन मंडल मंडिय॥
भूषन वह ऋतु एक पुहुमि पानिपहि बढ़ावत।
यह छहु ऋतु निसि दिन अपार पानिप सरसावत॥
सिव राज साहि सुव सत्थनित हय गज लक्खन संच रइ। यक्कइ गयन्द यक्कइ तुरँग किमि सुरपति सर बरि करइ ? ॥ १४७ ॥

---

(१) इस में अन्य कवि प्रायः उपमेय-उपमान का भी सम्बंध जोड़तेहै।

पुनरपि—कवित्त मनहरण ।

[१]दारुन दुगुन दुरजोधन ते अवरंग भूषन भनत जग राख्यो छल मढ़ि कै। धरम धरम, बल भीम, पैज अरजुन, नकुल अकिल, सहदेव तेज, चढ़ि कै॥ साहि के सिवाजी गाजी, करयो दिली माहिँ चंड पांडवनहू ते पुरुषारथ सु बढ़ि कै। सूने लाख भौन ते कढ़े वै पाँच राति मैं, जु द्योस लाख चौकी ते अकेलो आयो कढ़ि कै॥ १४८॥

सहोक्ति ।

लक्षण—दोहा ।

वस्तुन को भासत जहाँ जन रंजन सह भाव ।
ताहि सहोक्ति बखानहीं जे भूषन कबि राव ॥१४९॥

उदाहरण—मनहरण दण्डक ।

छूट्यो है हुलास आम खास एक संग छूट्यो हरम सरम एक संग बिनु ढंगही। [२]नैनन ते नीर धीर छूट्यो एक संग छूट्यो सुख रुचि मुख रुचि त्योंही बिन रंगही। भूषन बखानै सिवराज मरदाने तेरी

(१) दुर्योधन ने छल से पाण्डवों को लक्षाग्रह में जलाने का प्रबन्ध किया था सो धर्मराज के धर्म्म, भीमसेन के बल, अर्जुन की पैज, नकुलकी बुद्धि और सहदेव के तेज से पाण्डवों का उद्धार हुआ। इसी पर उक्ति करके कवि शिवाजी के दिल्ली से कढ़ आने पर उसकी तुलना पांचो भाइयों से करता है।

(२) भयानक रस पूर्ण ।

धाक बिललाने न गहत बल अंगही । दक्खिन के सूबा पाय दिली के अमीर तजैं उत्तर की आस जीव आस एक संगही ॥ १५० ॥

बिनोक्ति ।

लक्षण-दोहा ।

बिना कछू जहँ बरनिए कै हीनो कै नीक ।
ताको कहत बिनोक्ति है कवि भूषन मति ठीक ॥१५१॥

उदाहरण-दोहा ।

सोभमान जग पर किए सरजा सिवा खुमान ।
साहिन सों बिनु डर अगड़[१] बिन गुमान को दान ॥१५२॥

पुनः । मालती सवैया ।

को कबिराज विभूषन होत बिना कबि साहि तनै को कहाए ? । को कबिराज सभाजित होत सभा सरजा के बिना गुन गाए ? । को कबिराज भुवालन भावत भौंसिला के मन मैं बिनु भाए ? । को कबि राज चढै गज बाजि सिवाजि कि मौज मही बिनु पाए ? ॥ १५३ ॥

अन्यच्च । कबित्त मनहरण ।

बिना लोभ को बिबेक बिना भय युद्ध टेक साहिन सों सदा साहि तनै सिरताज के । बिनाही कपट प्रीति बिनाही कलेस जीति बिनाही अनीति रीति लाज के जहाज के ॥ सुकवि समाज बिन अपजस

(१) अकड़ ।

काज भनि भूषन भुसिल[1] भूप गरिब नेवाज के। बिनाही बुराई ओज बिना काज घनी फौज बिना अभिमान मौज राज सिवराज के ॥ १५४ ॥

कीरति को ताजी करी बाजि चढ़ि लूटि कीन्ही भई सब सेन बिनु बाजी बिजै[2] पुर की। भूषन भनत भौंसिला भुवाल धाकही सों धीर धरबी[3] न फौज कुतुब के धुर की॥ सिंह उदैभान बिन अमर सुजान बिन मान बिन कीन्ही साहिबी त्यों दिलीसुर की। साहि सुव महाबाहु सिवाजी सलाह बिन कौन पातसाह की न पातसाही मुरकी? ॥ १५५ ॥

समासोक्ति

लक्षण–दोहा[4]

बरनन कीजै आन को ज्ञान आन को होय।
समासोक्ति भूषन कहत कवि कोविद सब कोय ॥१५६॥

उदाहरण–दोहा।

बड़ो डील लखि पील[5] को सबन तज्यो बन थान।
धनि सरजा तू जगत मैं ताको हरयो गुमान ॥१५७॥

(१) भौंसिला।
(२) बीजापुर।
(३) धरैगी (बुन्देलखंडी बोली)।
(४) यह लक्षण असमर्थ है। प्रस्तुत के वर्णन में जहाँ अप्रस्तुत की सचाई ज्ञात हो वहाँ समासोक्ति अलंकार होता है।
(५) हाथी, यहाँ औरंगज़ेब।

तुही साँच द्विजराज है तेरी कला प्रमान ।
तो पर सिव किरपा करी जानत सकल जहान ॥१५८॥

अपरंच । कवित्त मनहरण :

उतर पहारबिधनोल[1] खँडहर[2] झारखंडहु[3] प्रचार चारु केली है बिरद की । गोर[4] गुजरात अरु पूरब पछाँह ठौर जंतु जंगलीन की बसति मारि रद की ॥ भूषन जो करत न जाने बिनु घोर सोर भूलि गयो आपनी उँचाई लखे कद की । खोइयो प्रबल मद गल गजराज, एक सरजा सों बैर कै बड़ाई निज मद की १५९

परिकर—परिकरांकुर ।

लक्षण-दोहा ।

साभिप्राय विशेषननि भूषन परिकर मान ।
साभिप्राय विशेष्य ते परिकर अंकुर जान ॥ १६० ॥

उदाहरण । परिकर । कवित्त मनहरण

बचैगा न समुहाने बहलोल[5] खाँ अयाने भूषन

---

(१) इसका नाम बिदरूर या बिदनूर भी था । यह मंगलोर (मैसूर) के पास इसी नाम के प्रान्त की राजधानी थी ।

(२) चम्बल और नर्मदा के बीच सुलतानपुर के समीप एक क़स्बा ।

(३) छन्द नं० ११२ का नोट देखिए ।

(४) गोर नामक शहर अफ़ग़ानिस्तान में था जहाँ से अला-उद्दीन ग़ोरी आया था ।

(५) छन्द ८६ का नोट देखिए । बहलोल औरंगज़ेब का चाकर या प्रजा न था । एक बहलोल नामक छोटा सरदार दिल्ली का भी था ।

बखाने दिल आनि मेरा बरजा । तुझ ते सवाई तेरा भाई सलहेरि पास कैद किया साथ का न कोई बीर गरजा॥ साहिन के साहि उसी औरँग के लीन्हे गढ़ जिसका तू चाकर औ जिस की है परजा। साहि का ललन दिली दल का दलन अफजल का मलन सिवराज आया सरजा१६१॥

जाहिर जहान जाके धनद समान पेखियतु पासवान यों खुमान चित चाय है । भूषन भनत देखे भूखन रहत सब आपही सों जात दुख दारिद बिलाय है ॥ खीझे ते खलक माहिँ खलभल डारत है रीझे ते पलक माहिँ कीन्हें रंक राय है । जंग जुरि अरिन के अंग को अनंग कीबो दीबो सिव साहब को सहज सुभाय है १६२॥

अन्यच्च—दोहा ।

सूर सिरोमनि सूर कुल सिव सरजा मकरंद ।
भूषन क्यों औरँग जितै कुल मलिच्छ कुल चन्द ॥१६३॥

परिकरांकुर—दोहा ।

भूषन भनि सबही तबहि जीत्यो हो जुरि जंग ।
क्यों जीतै सिवराज सों अब अंधक[1] अवरंग? ॥१६४॥

श्लेष ।

लक्षण—दोहा ।

एक वचन मैं होत जहँ बहु अर्थन को ज्ञान ।
स्लेस कहत हैं ताहि को भूषन सुकवि सुजान॥१६५॥

(१) अन्धक दैत्य को शिव (शंकर जी) ने मारा था ।

उदाहरण—कवित्त मनहरण

[1] सीता संग सोभित [2] सुलच्छन सहाय जाके भू पर भरत [3] नाम [4] भाई नीति चारु है । भूषन भनत कुल सूरकुल भूषन हैं [5] दासरथी सब जाके भुज भुव भारु है ॥ अरि[6] लंकतोर जोर जाके संग[7] बान रहैं [8] सिंधुरहैं बांधे जाके दल को न पारु है । [9] तेगहि कै भेंटै जोन[10] राकस मरद जानै सरजा सिवाजी रामही को अवतारु है ॥ १६६ ॥

पुन:

देखत सरूप को सिहातन मिलन काज जग जीतिबे की जामें रीति छल बल की । जाके पास

---

(१) सीता जी संग हैं अथवा श्री अर्थात लक्ष्मी ता संग है ।

(२) लक्ष्मण जी अथवा लक्षण अर्थात गुण ।

(३) भरत जी अथवा भरता है नाम अर्थात नाम पैदा करता है ।

(४) भाई अर्थात भ्राता अथवा रुची अर्थात् रुचती है ।

(५) दशरथ जी के पुत्र अथवा सब रथी जाके दास (हैं) ।

(६) लंका अथवा कमर ।

(७) बानर अर्थात् बन्दर हैं अथवा बाण रहैं ।

(८) सिंधु अर्थात समुद्र बँाधा रहै (सेतु बंधन) अथवा सिंधुर अर्थात् हाथी रहैं बँाधे ।

(९) ते गहि अर्थात् उन्हें पकड़ कर अथवा तलवारही से ।

(१०) जैान राकस मरद जानै अर्थात् जो राक्षसों को मर्दना जानता है अथवा जो नर (मनुष्य) अकस (शत्रु) जन जानता है उसे तेगही से भेंटता है अर्थात् मार डालता है । इस कबित्त के अर्थ चाहे राम पक्ष में लगाइए चाहे शिवा जी पर ।

आवै ताहि निधन करति बेगि भूषन भनत जाकी संगतिन फल की ॥ कीरति कामिनि राच्यो सरजा सिवा की एक बस कै सकै न बस करनी सकल की । चंचल सरस एक काहू पै न रहै [१] दारी गनिका समान सुबेदारी दिली दल की ॥ १६७ ॥

अप्रस्तुति प्रशंसा ।

लक्षण—दोहा ।

प्रस्तुति लीन्हे होत जहँ अप्रस्तुति परसंस ।
अप्रस्तुति परसंस सो कहत सुकवि अवतंस ॥ १६८॥

उदाहरण—दोहा ।

हिन्दुनि सों तुरकिनि कहैं तुम्हैं सदा सन्तोष ॥१६९॥
नाहिन तुम्हरे पतिन पर सिव सरजा कर रोष ॥
अरि तिय भिल्लिनि सों कहैं घन बन जाय इकन्त ।
सिव सरजा सों बैर नहिं सुखी तिहारे कन्त १७०॥

पुनः । मालती सवैया

काहू पै जात न भूषन जे गढ़पाल कि मौज निहाल रहे हैं । आवत हैं जुगुनी जन दच्छिन भौंसिला के गुन गीत लहे हैं ॥ राजन राव सबै उमराव खुमान कि धाक धुके यों कहे हैं । संक नहीं, सरजा सिवराज सों आजु दुनी में गुनी निरभे हैं ॥ १७१ ॥

---

(१) रक्खी । इस छन्द को गणिका एवं दक्षिण की सूबेदारी दोनोंही पक्षों में ले सकते हैं

पर्य्यायोक्ति।

लक्षण-दोहा।

बचनन की रचना जहां बर्णनीय परजानि।
परजायोकति कहत हैं भूषन ताहि बखानि॥ १७२॥

उदाहरण-मनहरण दण्डक।

महाराज सिवराज तेरे बैर देखियतु घन बन ह्वै रहे हरम हबसीन के। भूषन भनत तेरे बैर [१]रामनगर जवारि* पर बहबहे रुधिर नदीन के। सरजा समत्थ बीर तेरे बैर बीजापुर बैरी बैयरनि[२] कर चीन्ह न चुरीन के। तेरे रोस देखियत आगरे दिली में बिन सिन्दुर के बुन्द मुख इन्दु[३] जमनीन के। १७३।

ब्याज स्तुति।

लक्षण-दोहा।

सुस्तुति मैं निन्दा कढै निन्दा मैं स्तुति होय।
ब्याजस्तुति ताको कहत कवि भूषन सब कोय। १७४।

---

[१] इस नाम के कई नगर हैं। यह रामनगर कदाचित् राम गिर एवं रामगढ़ के निकट वाला है। इसी को राम नैर भी कहा है।

[२] स्त्रियां [पश्चिमी बोली।]

*छं० नं० २०६ देखिए।

[३] इस छन्द में मुसल्मानों की स्त्रियों के मस्तक पर सिन्दूर का अभाव दिखलाकर उनकी वैधव्यावस्था व्यञ्जित की गई है। अब कुछ मुसल्मानों के यहाँ ब्याह के दिन सिन्दूर के पुड़े से सोहाग लिया जाता है पर तत्पश्चात उसका व्यवहार नहीं होता पर उन दिनों सम्भव है कि सधवा स्त्रियां मुसल्मानों में भी सदा सिन्दूर लगाती हों।

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

पीरी पीरी हुन्नै तुम देत हौ मँगाय हमैं [१] सुबरन हम सों परखि करि लेत हौ । एक पलही मैं [२] लाखैं रूखनसों लेत लोग तुम राजा ह्वै कै लाखै दीबे को सचेत हौ ॥ भूषन भनत महराज सिवराज बड़े दानी दुनी ऊपर कहाए केहि हेत हौ ? । रीझि हँसि [३]हाथी हमैं सब कोऊ देत कहा रीझि हँसि हाथी एक तुमहियै देत हौ ? ॥ १७५ ॥

तू तौ रातो दिन जग जागत रहत वेऊ जागत रहत रातौ दिन बनरत हैं । भूषन भनत तू बिराजै रज भरो वेऊ रज भरे देहिन [४] दरी मैं बिचरत हैं ॥ तू तौ सूर गन को बिदारि बिहरत [५] सूर मंडलै बिदारि वेऊ सुरलोक रत हैं । काहे ते सिवाजी गाजी तेरोई सुजस होत तोसों अरिबर सरिबर सी करत हैं १७६ ॥

आक्षेप ।

लक्षण—दोहा ।

पहिले कहिये बात कछु पुनि ताको प्रतिषेध ।

---

[१] सोना अथवा सुन्दर वर्ण [अक्षर] अर्थात छन्द ।
[२] लाख ।
[३] हाथ मिलाना ।
[४] पहाड़ी ।
[५] युद्ध में मरे हुए लोग कहा जाता है कि सूर्य्य मण्डल भेद कर स्वर्ग सिधारते हैं ।

ताहि कहत आच्छेप हैं भूषन सुकबि [१] सुमेध।१७७।

उदाहरण-मालती सवैया ।

जाय भिरौ न भिरे बचिहौ भनि भूषन भौंसिला भूप सिवा सों । जाय दरीन दुरौ दरिआौ तजिकै द-रियाव लँघौ लघुता सों ॥ सीछन काज वजीरन को कढ़ै बोल यों एदिल साहि सभा सों । छूटि गयो तौ गयो परनालो सलाह कि राह गहौ सरजा सों ॥ १७८

द्वितीय लक्षण-दोहा ।

जेहि निषेध अभ्यासही भनि भूषन सो और ।
कहत सकल आच्छेप हैं जे कवि कुल सिरमौर। १७९।

उदाहरण-कवित्त मनहरण ।

पूरब के उत्तर के प्रबल पछाँहहूं के सब बाद-साहन के गढ़ कोट हरते । भूषन कहैं यों अवरंग सों वजीर जीति लीबे को पुरतगाल सागर उतरते ॥ सरजा सिवा पर पठावत मुहीम काज हजरत हम मरिबे को नाहिं डरते । चाकर हैं उजुर कियो न जाय नेक पै कछू दिन उबरते तौ घने काज करते ॥ १८०॥

विरोध (द्वितीय विषम)

लक्षण-दोहा ।

द्रव्य क्रिया गुन मैं जहाँ उपजत काज विरोध ।
ताको कहत विरोध हैं भूषन सुकवि सुबोध । १८१ ॥

---

[१] अच्छी मेधा अर्थात बुद्धि वाले ।

उदाहरण-मालती सवैया।

श्री सरजा सिव तो जस सेत सों होत हैं बैरिन के मुँह कारे। भूषन तेरे अरुन्न प्रताप सपेद लखे कुनबा नृप सारे॥ साहि तनै तव कोप कृसानु ते बैरि गरे सब पानिप वारे। एक अचम्भव होत बड़ो तिन ओट गहे अरि जात न जारे॥ १८२॥

विरोधाभास

लक्षण-दोहा।

जहँ विरोध सो जानिए साँच विरोध न होय।
तहाँ विरोधाभास कहि बरनत हैं सबकोय। १८३॥

उदाहरण-मालती सवैया।

[1] दच्छिन नायक एक तुही भुव भामिनि को [2] अनुकूल ह्वै भावै। दीनदयालन तो सो दुनी पर म्लेच्छ के दीनहि मारि मिटावै॥ श्री सिवराज भनै कवि भूषन तेरे सरूप को कोउ न पावै। सूर सुबंस मैं सूर सिरोमनि ह्वै करि तू कुल चन्द कहावै॥ १८४॥

विभावना।

लक्षण-दोहा।

भयो काज बिन हेतुही बरनत हैं जेहिं ठौर।
तहँ विभावना होत है कवि भूषन सिर मौर १८५॥

---

[१] वह पति जिसके कई स्त्रियां हों और वह सबसे बराबर २ प्रेम रखता हो। अथवा दक्षिण देश का राजा।

[२] वह पति जो एक स्त्रीव्रत हो अथवा मुआफिक।

उदाहरण-मालती सवैया ।

बीर बड़े बड़े मीर पठान खरो रजपूतन को गन भारो । भूषन आय तहाँ सिवराज लियो हरि औरँगजेब को [1] गारो ॥ दीन्हों कुज्वाब दिलीपति को अरु कीन्हों वजीरन को मुँह कारो । नायो न माथहि दक्खिन नाथ न साथ मैं फौजन हाथ हथ्यारो । १८६ ।

पुनः-दोहा ।

साहितनै सिवराज की सहज टेव यह ऐन ।
अनरीझे दारिद हरै अनखीझे अरि सैन ॥ १८७ ॥

और दो विभावना ।

लक्षण-दोहा ।

जहाँ हेतु पूरन नहीं उपजत है परकाज ।
कै अहेतु ते और यों द्वै विभावना साज ॥ १८८ ॥

उदाहरण ।

कारण अपूरे काज की उत्पत्ति । कवित्त मनहरण ।

दच्छिन को दाबि करि बैठो है सइस्त खान पूना माहि दूना करि जोर कर[2]बार को । हिन्दुवान खम्भ गढ़पति दल थम्भ भनि भूषन भरैया कियो सुजस अपार को ॥ मनसबदार चौकीदारन गँजाय महलन मैं मचाय महाभारत के भार को । तो सो को

[१] गर्ब, अभिमान ।
[२] करवाल, तलवार ।

सिवाजी जेहि दो सौ आदमी सों जीत्यो अंग सरदार सौ हजार असवार को ॥ १८८ ॥

अहेतु ते कारज की उत्पत्ति । कवित्त मनहरण ।

ता दिन अखिल खलभलैं खल खलक मैं जा दिन सिवाजी गाजी नेक करखत हैं । सुनत नगारन अगार तजि अरिन की दारगन भाजत न बार परखत हैं ॥ छूटे बार बार छूटे बारन ते लाल देखि भूषन सुकवि बरनत हरखत हैं । क्यों न उतपात होंहिं बैरिन के झुंडन में कारेघन उमड़ि अँगारे बरखत हैं ॥ १८० ॥

और विभावनो ।

लक्षण-दोहा ।

जहाँ प्रगट भूषन भनत हेतु काज ते होय ।
सो विभावना औरऊ कहत सयाने लोय ॥ १८१ ॥

उदाहरण-दोहा ।

अचरज भूषन मन बढ्यो श्री सिवराज खुमान ।
तव कृपान धुव धूमते भयो प्रताप कृसान ॥ १८२ ॥

पुनः । कवित्त मनहरण ।

साहि तनै सिव! तेरो सुनत पुनीत नाम धाम धाम सबही को पातक कटत है । तेरो जस काज आज सरजा निहारि कवि मन भोज बिक्रम कथा ते उचटत है ॥ भूषन भनत तेरो दान संकलप जल अचरज सकल मही मैं लपटत है । और नदी नदन ते कोकनद होत तेरो कर कोकनद नदी नद प्रगटत है १८३

विशेषोक्ति।

लक्षण-दोहा।

जहाँ हेतु समरथ भयहु प्रगट होत नहिँ काज।
तहाँ विसेसोकति कहत भूषन कवि सिरताज ॥१८४॥

उदाहरण-मालती सवैया।

दै दस पाँच रुपैयन को जग कोऊ नरेस उदार कहायो। कोटिन दान सिवा सरजा के सिपाहिन साहिन को बिचलायो॥ भूषन कोऊ गरीबन सों भिरि भीमहु ते बलवन्त गनायो। दौलति इन्द्र समान बढ़ी पै खुमान के नेक गुमान न आयो॥ १८५॥

असम्भव।

लक्षण-दोहा।

अनहूबे की बात कछु प्रगट भई सी जानि।
तहाँ असम्भव बरनिए सोई नाम बखानि॥ १८६॥

उदाहरण-दोहा।

औरँग यों पछितात मैं करतो जतन अनेक।
सिवा लेइगो दुरग सब को जानै निसि एक॥ १८७॥

अन्यच्च। कवित्त मनहरण।

जसन के रोज यों जलूस गहि बैठो जोब इन्द्र आवै सोऊ लागै औरँग की परजा। भूषन भनत तहाँ

सरजा सिवाजी गाजी[1] तिनको तुजुक[2] देखि नेकहू न लरजा ॥ ठान्यो न सलाम भान्यो साहिको इलाम[3] धूम धाम कै न मान्यो राम सिंहहू[4] को बरजा। जासों बैर करि भूप बचै न दिगन्त ताके दन्त तोरि तखत तरे ते आयो सरजा ॥ १८८ ॥

असंगति (प्रथम)

लक्षण । दोहा

हेतु अनतही होय जहँ काज अनतही होय ।
ताहि असंगति कहत हैं भूषन सुमति समोय १८८

उदाहरण—कवित्त मनहरण ।

महाराज सिवराज चढ़त तुरंग पर ग्रीवा जात नै करि गनीम अतिबल की । भूषन चलत सरजा की सैन भूमि पर छाती दरकत है खरी अखिल खल

[१] मुसलमानों में ग़ाज़ी वह कहलाता था जो एक काफ़िर को मार डालै और यह बड़ी सन्मान की पदवी थी । इसीसन्मान के कारण भूषण जी कदाचित शिवाजी के नाम के साथ अनेक ठौर गाजी लगा दिया करते थे नहीं तो सच पूछिए तो इसे अशुद्धही समझना चाहिए अथवा गर्जने वाला ।

[२] शान; महत्व ।

[३] एलान, इश्तिहार, (यहां पर) हुक्म ।

[४] येजयपुराधीश महाराज मिर्जा जय सिंह के पुत्र थे। जयसिंह के साथ जब शिवाजीदिल्ली को गया तब येही दिल्लीश्वर की ओर से उसकी अगवानी को आए थे और उसे दिल्ली से निकल भागने में इन्होंने भी छिपकर सहायता की थी

की ॥ कियो दौरि घाव उमरावन अमीरन पै गई कटि नाक सिगरेई दिल्ली दल की । सूरत[1] जराई कियो दाह पातसाह उर स्याही जाय सब पातसाही मुख झलकी ॥ २०० ॥

असंगति (द्वितीय)

लक्षण-दोहा ।

आन ठौर करनीय सो करै औरही ठौर ।
ताहि असंगति और कवि भूषन कहत सगौर ।२०१।

उदाहरण—मनहरण दंडक ।

भूपति सिवाजी तेरी धाक सों सिपाहिन के राजा पातसाहिन के मन ते अहं[2] गली । भौंसिला अभंग तूतौ जुरतो जहाँई जंग तेरी एक फते होत मानो सदा संग ली । साहि के सपूत पुहुमी के पुरहूत कवि भूषन भनत तेरी खरग उदंगली । सत्रुन की सुकुमारी यहरानी सुन्दरी औा सत्रु के अगारन मैं राखे जंतु जंगली ॥ २०२ ॥

असंगति (तृतीय)

लक्षण—दोहा ।

करन लगै औरै कछू करै औरई काज ।
तहीं असंगति होत है कहि भूषन कबिराज ॥२०३॥

---

[१] पहले सन् १६६४ में और फिर १६७० में शिवाजी ने सूरत शहर को लूटा था ।

[२] अहंकार गल गया ।

उदाहरण—मालती सवैया ।

साहि तनै सरजा सिव के गुन नेकहु भाषि सक्यो न प्रवीनो । उद्यत होत कछू करिबे को करै कछु बीर महा रस भीनो । ह्याँते गयो चकत्तै[1] सुख देन को गोसल खाने[2] गयो दुख दीनो । जाय दिली दरगाह सुसाह को भूषन बैरि बनायही लीनो ॥ २०४ ॥

विषम ।

लक्षण—दोहा ।

कहाँ बात यह कहँ वहै यों जहँ करत बखान ।
तहाँ बिषम भूषन कहत भूषन सुकबि सुजान ॥२०५॥

उदाहरण—मालती सवैया ।

जावलि[3] बार सिँगारपुरी[4] औ जवारि[5] को राम के नैरि[6] को गाजी । भूषन भौंसिला भूपति ते सब दूरि

[१] चकत्ता अर्थात् चगताईखाँ वंशज अवरंगज़ेब को ।

[२] गुस्लखाने की घटना भूमिका में देखिए ।

[३] चन्द्रराव मोरे जावली का राजा था । इसे जीतकर शिवाजी ने सन् १६५५ ई० में राज्य छीन लिया । इसी स्थान पर शिवाजी ने सन् १६५८ में अफ़ज़लखाँ को मारा (छं० नं० ६३ नोट देखिए ।

[४] कोंकण देश में सतारा शहर के पश्चिम-दक्षिण सिंगारपुर है । इसे १६६१ ई: में शिवाजीने अपने अधिकृत किया ।

[५] रावर के निकट एक छोटा सा स्थान है । इसे जयपुर (राजपूताने वाला नहीं) भी कहते हैं ।

[६] छन्द नं० १७३ नोट देखिए ।

किए करि कीरति ताजी। बैर कियो सिवजी सों [1]खवास खाँ डौंड़ियै सैन बिजैपुर बाजी। बापुरो एदिल साहि कहाँ कहाँ दिल्लि को दामनगीर सिवाजी? २०६॥

लैं परनालो[2] सिवा सरजा करनाटक[3] लौं सब देस बिगूँचे। बैरिन के भगे बालकबृन्द कहै कबि भूषन दूरि पहूँचे॥ नाँघत नाँघत घोर घने बन हारि परे यों कटे मनो कूँचे। राज कुमार कहाँ सुकुमार कहाँ बिकरार पहार वै ऊँचे? ॥ २०७ ॥

सम ।

लक्षण-दोहा ।

जहाँ दुहूँ अनुरूप को करिए उचित बखान ।
सम भूषन तासों कहत भूषण सकल सुजान॥२०८॥

---

[१] बीजापुर के प्रधान मंत्री ख़ान मुहम्मद का यह लड़का और स्वयं मंत्री भी था। जब प्रसिद्ध बादशाह अली आदिल शाह (एदिल साहि) मृत शय्या पर हुआ तब उसने खवासखां को अपने नाबालिग़ पुत्र सुलतान सिकन्दर का 'मुतवल्ली (Regent and guardian) सन् १६७२ में बनाया। शिवाजी से इसने कई समर किए पर स्वयं युद्ध में न गया। सन् १६७५ में यह छिपकर औरंगज़ेब से मिलगया और इसी कारण बहलोलखां (छन्द नं० ८६ का नोट देखिए) इत्यादि के इशारे पर मारा गया।

[२] छं० नं० १०७ नोट देखिए।

[३] छं० नं० ११७ नोट देखिए।

उदाहरण—मालती सवैया ।

पंज हजारिन[1] बीच खड़ा किया मैं उसका कुछ भेद न पाया । भूषन यें कहि औरँगजेब उजीरन सों बेहिसाब रिसाय ॥ कम्मर की न कटारी दई इसलामने गोसलखाना बचाया । जोर सिवा करता अनरत्थ भली भई हत्थ हथ्यार न आया ॥ २०९ ॥

पुनः—दोहा ।

कुछ न भयो केतो गयो हारयो सकल सिपाह ।
भली करै सिवराज सों औरँग करै सलाह ॥२१०॥

विचित्र ।

लक्षण—दोहा ।

जहाँ करत हैं जतन फल चित्त चाहि बिपरीत ।
भूषन ताहि बिचित्र कहि बरनत सुकबि बिनीत २११॥

उदाहरण—दोहा ।

तैं जयसिंहहि[2] गढ़ दिए सिव सरजा जस हेत ।
लीन्हे कैयो बरस मैं बार न लागी देत ॥ २१२ ॥

---

[१] पांच हज़ार सेना जिस सरदार के अधिकार में हो। शिवाजी औरंगजेव के दरवार में पंजहज़ारियों में खड़ा किया गया था जिस पर वह विगड़ उठा था।

[२] ये जयपुर के महाराज थे और औरंगजेब ने इन्हें "मिर्जा" की उपाधि दी थी जिस से इनको "मिर्ज़ा जयसिंह" अथवा "मिर्ज़ा राजा" भी कहते हैं। ये सन् १६२१ ई० में गद्दी पर बैठे थे। [इन के बहुत दिनों बाद सवाई जयसिंह १६९९ में गद्दी पर बैठे और जयपुर शहर बसाया]। मिर्ज़ा जयसिंह और दिलेर खां सन् १६६५ में शिवा

अन्यच्च। कवित्त मनहरण।

बेदर[1] कल्यान[2] दै परेंफा[3] आदि कोट साहि एदिल गँवायहै नवाय निज सीस को। भूषन भनत भागनगरी[4] कुतुब साई[5] दै करि गँवायो राम गिरि[6] से गिरीस को॥ भौंसिला भुवाल साहि तनै गढ़पाल

जी से लड़ने भेजे गए। जयसिंह ने सिंहगढ़ को घेरा और दिलेर खां ने पुरंधर को और शिवा जी ने जयसिंह से दब कर संधि की जिस से शिवा जी ने मुग़लों के जितने किले जीते थे वे सब और निज़ामशाही बादशाहों से जीते हुए ३२ किलों में से २० किले मिर्ज़ा राजा को भेंट किए और शिवा जी स्वयं उनके साथ मार्च १६६६ में दिल्ली गया पर दिसम्बर में निकल आया। सन् १६६७ में इनका विष प्रयोग से देहान्त हुआ। ये शश [छ] हज़ारी थे।

[१] बहमनीवंशज "बादशाहों" की राजधानी।

[२] कल्हान का सूबा कांकन में था। पहिले यह अहमदनगर के निज़ामशाही "बादशाहों" का था पर सन् १६३६ में बीजापुर के अधिकार में आया और सन् १६४८ ई० में शिवा जी ने इसे बीजापुर के "बादशाह" आदिल शाह [एदिल] से जीत लिया।

[३] इस (परेंफा) नाम का कोई किला या स्थान इतिहास में नहीं मिलता हाँ एक किला परेंदा नामक था जिस का अपभ्रंश परेंफा जान पड़ता है। यह भी पहिले अहमदनगर का था और फिर आदिलशाह का हो गया जिस से शिवा जी ने इसे छीन लिया

[४] छन्द नं० ११७ का नोट देखिए।

[५] कुतुबशाह। छन्द नं० ६२ का नोट देखिए।

[६] इस नाम का एक परगना था जिस में इसी (रामगिरि) नाम की एक पहाड़ी है और इसी के पास रामगढ़ अथवा रामनैरि का किला भी था। यह गोल कुंडा की रियासत में था।

दिन दोऊ ना लगाए गढ़ लेत पंचतीस[1] को । सरजा सिवाजी जयसाह मिरजा को लीबे सौ गुनी बड़ाई[2], गढ़ दीन्हे हैं दिलीस को ॥ २१३ ॥

प्रहर्षण

लक्षण । दोहा ।

जहँ मन बांछित अरथ ते प्रापति कछु अधिकाय ।
तहाँ प्रहरषन कहत हैं भूषन जे कविराय ॥२१४॥

उदाहरण । मनहरण दण्डक ।

साहि तनै सरजा की कीरति सों चारो ओर चाँदनी बितान छिति छोर छाइयतु है । भूषन भनत ऐसो भूप भौंसिला है जाको द्वार भिच्छुकन सों सदाई भाइयतु है ॥ महा दानि सिवाजी खुमान या जहान पर दान के प्रमान जाके यो गनाइयतु है । रजत कि हौस किए हेम पाइयतु जासों हयन कि हौस किए हाथी पाइयतु है ॥ २१५ ॥

---

[१] शायद पैंतीस किले शिवाजी ने मिर्ज़ा जयसिंह के भेंट किए थे ।

[२] अर्थात् तूने जयसिंह को दब कर किले नहीं दिए बरन उन्हें हिन्दू जान हिन्दू रुधिर बहाने के ठौर अपनी हार मान कर तूने उन्हें गढ़ दिए जिससे तेरी बड़ाई हुई और यश बढ़ा । छन्द के पहिले वाले दोहे में भूषण जी ने यह शिवाजी के यश बढ़ाने का कारण कहा है पर बड़ीही चतुराई से इसे "विचित्र" अलंकार के उदाहरण में लिखा ।

विषादन ।

लक्षण । दोहा ।

जहँ चित चाहे काज ते उपजत काज विरुद्ध ।
ताहिँ विषादन कहत हैं भूषन बुद्धि विसुद्ध ॥२१६॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

दारहि[1] दारि[2] मुरादहि[3] मारि कै संगर साह सुजै[4] बिचलायो । कै कर मैं सब दिल्लि कि दौलति औरहु देस घने अपनायो ॥ बैर कियो सरजा सिव सों यह नौरँग के न भयो मन भायो । फौज पठाई हुती गढ़ लेन को गांठिहु[5] के गढ़ कोट गँवायो ॥ २१७ ॥

अपरंच । दोहा

महाराज सिवराज तव बैरी तजि रस रुद्र ।
बचिबे को सागर तिरे बूड़े सोक समुद्र ॥ २१८ ॥

अधिक ।

लक्षण—दोहा ।

जहाँ बड़े आधार ते बरनत बढ़ि आधेय ।
ताहि अधिक भूषन कहत जानि सुग्रन्थ प्रमेय ॥ २१९ ॥

---

[१], [४], [३] यह तीनों औरंगज़ेब के भाई थे। इन का हाल प्रसिद्ध ही है कि इन्हें मारकर औरंगज़ेब सिंहासन पर बैठा।

[२] पीस कर। शूली देकर।

[५] गाँठ के; अपने भी। धोती की मुर्री में लोग रूपए पैसे रख लेते हैं उसीसे यह मुहाविरा निकला।

उदाहरण । दोहा

सिव सरजा तव हाथ को नहिं बखान करि जात ।
जाको बासी सुजस सब त्रिभुवन मैं न समात ॥ २२० ॥

पुन: । कबित्त मनहरण ।

सहज सलील सील जलद से नील डील पब्बय से पील देत नाहिं अकुलात है । भूषन भनत महाराज सिवराज देत कंचन को ढेरु जो सुमेरु सो लखात है ॥ सरजा सवाई कासों करि कबिताई तव हाथ की बड़ाई को बखान करि जात है? । जाको जस टंक साता दीप नव खंड महि मंडल की कहा बरम्हंड ना समात है ॥ २२१ ॥

अन्योन्य ।

लक्षण । दोहा ।

अन्योन्या उपकार जहँ यह बरनन ठहराय ।
ताहि अन्योन्या कहत हैं अलंकार कविराय ॥ २२२ ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

तो कर सों छिति छाजत दान है दानहु सों अति तो कर छाजै । तैंही गुनी की बड़ाई सजै अरु तेरी बड़ाई गुनी सब साजै ॥ भूषन तेहि सौं राज बिराजत राज सों तू सिवराज बिराजै । तो बल सों गढ़ कोट गजैं अरु तू गढ़ कोटन के बल गाजै ॥ २२३ ॥

विशेष ।

लक्षण । दोहा ।

बरनत हैं आधेय को जहँ बिनही आधार ।
ताहिं बिसेष बखानहीं भूषन कवि सरदार ॥ २२४ ॥

उदाहरण । दोहा ।

सिव सरजा सों जंग जुरि चन्दावत[1] रजवंत ।
राव अमर[1] गो अमरपुर समर रही रज[2] तंत ॥२२५॥

पुनः । कवित्त मनहरण ।

सिवाजी खुमान सलहेरि मैं दिलीस दल कीन्हें कतलाम करबाल[3] गहि कर मैं । सुभट सराहे चन्दावत कछवाहे मुगलौ पठान ढ़ाहे फरकत परे फर मैं ॥ भूषन भनत भौंसिला के भट उदभट जीति घर आए धाक फैली घर घर मैं । सारु के करैया अरि अमर पुरै गे तऊ अजौं मारु मारु सोर होत है समर मैं ॥ २२६ ॥

---

[१] अमर सिंह चन्दावत । छन्द नं० ८७ नोट देखिए ।

[२] राव तो अमर पुर चला गया पर उसकी राजश्री (यहाँ पर वीरता) निराधार युद्धस्थल में रह गई ।

[३] "हाथ में तलवार लेकर" । शिवाजी इस युद्ध में नहीं लड़ा था । वह तो इस युद्ध में थाही नहीं और उसके मंत्री मोरोपंत नामक ब्राह्मण ने यह युद्ध जीता था पर हाँ "लड़ै सिपाही और नाम हो सरदार का" इसका हाल छं० नं० ८७ नोट में देखिए ।

व्याघात ।

लक्षण । दोहा ।

और काज करता जहाँ करै औरई काज[१] ।
ताहि कहत ब्याघात है भूषन कवि सिरताज ॥२२७॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

ब्रह्म रचै पुरुशोत्तम पोसत संकर सृष्टि संहारन हारे । तू हरि को अवतार सिवा नृप काज सँवारै सबै हरि वारे ॥ भूषन यों अवनी यवनी कहैं "कोऊ कहै सरजा सों हहारे । तू सबको प्रतिपालनहार बिचारे भतार न मारु हमारे" ॥ २२८ ॥

अन्यच्च । कवित्त मनहरण ।

कसत मैं बार बार वैसोई बलन्द होत वैसोई सरस रूप समर भरत है । भूषन भनत महराज सिवराज मनि सघन, सदाई जस फूलन धरत है ॥ बरछी कृपान गोली तीर केते मान, जोरावर गोला बान तिनहू को निदरत है । तेरो करबाल भयो जगत को ढाल, अब सोई हाल[२] म्लेच्छन के काल को करत है ॥ २२९ ॥

---

[१] यह लक्षण अशुद्ध प्रतीत होता है । "हितकारी वस्तु को अहित" वर्णन करने में व्याघात अलंकार होता है (दूलह कृत "कवि कुल कंठा भरण" देखिए) । उदाहरण शुद्ध है ।

[२] इस समय ।

(कारण माला) गुम्फ ।

लक्षण । दोहा ।

पूरब पूरब हेतु कै उत्तर उत्तर हेतु ।
या बिधि धारा बरनिए गुम्फ कहावत नेतु ॥ २३० ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

शंकर की किरपा सरजा पर जोर बढ़ी कबि भूषन गाई । ता किरपा सों सुबुद्धि बढ़ी भुव भौंसिला साहि तनै की सवाई ॥ राज सुबुद्धि सों दान बढ्यो अरु दान सों पुन्य समूह सदाई । पुन्य सों बाढ्यो सिवाजी खुमान खुमान सों बाढ़ी जहान भलाई ॥२३१॥

पुनः । दोहा ।

सुजस दान अरु दान धन धन उपजै किरवान ।
सो जग मैं जाहिर करी सरजा सिवा खुमान ॥२३२॥

एकावली [१] ।

लक्षण । दोहा ।

प्रथम बरनि जहँ छोड़िए जहाँ अरथ की पाँति ।
बरनत एकावलि अहै कवि भूषन यहि भाँति ॥२३३॥

उदाहरण । हरिगीतिका छन्द ।

तिहुँ भुवन मैं भूषन भनै नरलोक पुन्य सुसाज

[१] कारण माला में कारण-कार्य्य का सम्बंध होता है पर एकावली में नहीं होता तथा मालादीपक में पदावृत्ति दीपक का सम्बंध होता है सो भी एकावली में नहीं होता ।

मैं। [१]नर लोक मैं तीरथ लसै महि तीरथों कि समाज मैं॥ महि मैं बड़ी महिमा भली महिमैं[२] महारज लाज मैं। रज लाज राजत आजु है महराज श्री सिवराज मैं॥ २३४॥

मालदीपक एवं सार।

लक्षण। दोहा।

दीपक एकावलि मिले माला दीपक होय।
उत्तर उत्तर उतकरष सार कहत हैं सोय॥ २३५॥

उदाहरण।

माला दीपक। कवित्त मनहरण।

मन कवि भूषन को सिव की भगति जीत्यो सिव की भगति जीत्यो साधु जन सेवा ने। साधु जन जीते या कठिन कलिकाल कलिकाल महाबीर महाराज महिसेवा ने[३]। जगत मैं जीते महाबीर महाराजन ते महाराज बावनहू पातसाह लेवा ने। पातसाह बावनौ दिली के पातसाहि दिलीपति पातसाहै जीत्यो हिन्दुपति सेवा ने॥ २३६॥

सार यथा। मलती सवैया।

आदि बड़ी रचना है बिरंचि की जामैं रह्यो

---

[१] नरलोक मैं तीरथौं की समाज मैं महि (एक) तीरथ लसै।

[२] महिमै (महिमाही) मैं रजलाज (बड़ी)। यहाँ दूरान्वयी दूषण है।

[३] महिमावान।

रचि जीव[1] जड़ो है। ता रचना महँ जीव बड़ो अति काहे ते ता उर ज्ञान गड़ो॥ जीवन मैं नर लोग बड़े कबि भूषन भाषत पैज अड़ो है। है नर लोग मैं राज बड़ो सब राजन मैं सिवराज बड़ो है॥२३७॥

यथा संख्य।

लक्षण—दोहा।

क्रम सों कहि तिनके अरथ क्रम सों बहुरि मिलाय॥
यथा संख्य ताको कहैं भूषन जे कविराय॥ २३८॥

उदाहरण—कवित्त मनहरण।

जेई चहौ तेई गहौ सरजा सिवाजी देस संके दल दुवन के जे वै बड़े उर के। भूषन भनत भौंसिला सों अब सनमुख कोऊ ना लरैया है धरैया धीर धुर के। अफजल[2] खान रुसामै[3] जमान फत्ते[4] खान खूटे कूटे लूटे ए उजीर बिजेपुर के। अमर[5] सुजान

---

[१] जीवधारी और जड़ पदार्थ।

[२] छन्द नं०६३ नोट देखिए।

[३] सन् १६५८ के दिसम्बर में इसका शिवाजी से परनाले के निकट मुठभेड़ हुआ और शिवाजी ने इसकी सेना का बड़ाही भयंकर कतलाम किया और इसे कृष्णा नदी के उस पार तक खदेरा। इसका शुद्ध नाम रुस्तमे ज़माँ था।

[४] यह सन् १६७० में शिवाजी से जंजीरे के किले में लड़ा। यह शिवाजी से मिल गया और इस कारण इसके तीन साथियों ने इसे बन्दी कर लड़ाई जारी रक्खी।

[५] छं० नं० ८७ नोट देखिए।

मोहकम[1] बहलोल[2] खान खाँड़े छांड़े डाँड़े उमराय दिलीसुर के ॥ २३८ ॥

पर्य्याय।

लक्षण। दोहा।

एक अनेकन मैं रहै एकहि मैं कि अनेक।
ताहि कहत परयाय हैं भूषण सुकबिबिवेक ॥ २४० ॥

उदाहरण। दोहा।

जीत रही औरंग मैं सबै छत्रपति छाँड़ि।
तजि ताहू को अब रही शिवसरजा कर माँड़ि ॥२४१॥

पुनः। कबित्त मनहरण।

कोट गढ़ दै कै माल मुलुक मैं बीजापुरी गोलकुंडा वारो पीछेही को सरकतु है। भूषन भनत भौंसिला भुवाल भुजबल रेवाही[3] के पार अवरंग हरकतु है॥

---

[१] शिवाजी के समय में यह कोई बड़ा नामी सरदार न था हाँ कोई साधारण लड़ाई में उससे अवश्य हारा होगा जिसका हाल इतिहास में नहीं मिलता पर आगे चलकर फर्रुखसियर बादशाह के समय में यह बढ़ा था और सन् १७१७ में मरहटों से लड़ने को भेजा गया था।

[२] छन्द नं० ८६ नोट देखिए। यह दिल्ली का नहीं बरन बीजापुरी सरदार था।

[३] नर्म्मदा नदी के उत्तर ओरही।

पेसकसैं[1] भेजत इरान[2] फिरमान[3] पति उनहू के उर याकी धाक धरकतु है । साहितनै सिवाजी खुमान या जहान पर कौन पातसाह केन हिए खरकतु है ? ॥ २४२ ॥

अगर के धूप धूम उठत जहांई तहाँ उठत बभू रे अब अतिही अमाप हैं। जहाँई कलावँत अलापैं मधुर-स्वर तहांई भूत प्रेत अब करत विलाप हैं ॥ भूषन सिवाजी सरजा के बैर बैरिन के डेरन मैं परे मनो काहु के सराप हैं । बाजत हे जिन महलन मैं मृदंग तहां गाजत मतंग सिंह बाघ दीह दाप हैं ॥ २४३ ॥

परिवृत्ति ।

लक्षण । दोहा ।

एक बात को दै जहाँ आन बात को लेत ।
ताहि कहत परिवृत्ति हैं भूषन सुकबि सचेत ॥ २४४ ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

दच्छिन धरन धीर धरन खुमान, गढ़ लेत गढ़ धरन सों धरम दुवारु दै । साहि नर नाह को सपूत महा बाहु लेत मुलुक महान छीनि साहन को मारु दै ॥ संगर मैं सरजा सिवाजी अरि सैनन को सार हरि लेत

---

[१] पेशकश; नज़र, ख़िराज ।

[२] ईरान, फ़ारस ।

[३] योरप वाले जैसे फ़रासीसी, पोर्टुगीज़ इत्यादि। ये योरुपी सौदागर शिवाजी को नज़रैं भेजते थे। बाबर के पिता का राज्य भी फिरंगाना कहलाता था ।

हिन्दुवान खिर सारु दै । भूषन भुसिल जय जस को पहारु लेत हरजू को हारु हरगन को अहारु दै ॥ २४५॥

परिसंख्या ।

लक्षण । दोहा ।

अनत बरजि कछु बस्तु जहँ बरनत एकहि ठौर ।
तेहि परिसंख्या कहत हैं भूषन कबि दिलदौर ॥२४६॥

उदाहरण—मनहरण दंडक ।

अति मतवारे जहाँ दुरदै निहारियत तुरगनही मैं चंचलाई परकीति है । भूषन भनत जहाँ पर लगैं बानन मैं कोक पच्छिनहि माहिँ बिछुरन रीति है ॥ गुनि गन चोर जहाँ एक चित्तही के, लोक बंधै जहाँ एक सरजा की गुन प्रीति है । [1]कम्प कदली मैं बारि बुन्द बदली मैं सिवराज अदली के राज मैं यों राजनीति है ॥ २४७ ॥

विकल्प ।

लक्षण । दोहा ।

कै वह कै यह कीजिए जहँ कहनावति होय ।
ताहि बिकल्प बखानहीं भूषन कबि सब कोय ॥२४८॥

---

[१] इसका दूसरा पाठ यों है "कम्प......सिवराज अदली मैं अदली की राज नीति है"।

उदाहरण[1] । मालती सवैया ।

मोरँग[2] जाहु कि जाहु कमाऊँ[3] सिरीनगरै[4] कि कबित्त बनाए । बाँधव[5] जाहु कि जाहु अमेरि[6] कि जोधपुरै कि चितौरहि[7] धाए ॥ जाहु कुतुब्ब कि एदिल पै कि दिलीसहु पै किन जाहु बोलाए । भूषन गाय फिरौ महि मैं बनि है चित चाह सिवाहि रिझाए ॥ २४८ ॥

---

[१] ये दोनोंही उदाहरण (छं० नं० २४८, २५०) अशुद्ध हैं। विकल्प में सन्देह ही रहना चाहिए पर इन दोनों छन्दों में अन्त में सन्देह हटा कर एक बात निश्चयात्मक कह दो है। कदाचित अपने नायक की पूर्ण प्रशंसाही के लिये भूषण जी ने अपने ठीक उदाहरण अन्त में जान बूझ कर अशुद्ध कर दिए हों पर यह अन्य प्रकार से भी सम्भव था।

[२] इस नाम की रियासत का पता नहीं लगता। कदाचित मोरभंज की रियासत से तात्पर्य्य हो अथवा मुरंजन किले से जो कांकण प्रान्त में था।

[३] कमाऊँ (गढ़वाल) की रियासत में भूषण जी गए थे। इस विषय में भूमिका देखिए।

[४] कश्मीर।

[५] बाँधवा की रियासत।

[६] जयपुर में इस नाम का प्रसिद्ध किला है जहाँ शक्ति शिलामयी देवी हैं। "जय जय शक्ति शिला मयी जय जयगढ़ आमेर। जय जयपुर सुरपुर सदृश जो जाहिर चहुं फेर" ॥

[७] चित्तौर अर्थात मेवार अथवा उदयपुर।

पुनः मालती सवैया ।

देसन देसन नारि नरेसन भूषन यों सिख देहिं दया सों । मंगन ह्वै करि, दन्त गहौ तिन, कन्त तुम्हैं है अनन्त महा सौं[1] ॥ कोट गहौ कि गहौ बन ओट कि फौज कि जोट सजौ प्रभुता सों । और करौ किन कोटि कराह सलाह बिना बचिहौ न सिवा सों ॥ २५० ॥

समाधि ।

लक्षण । दोहा ॥

और हेतु मिलि कै जहां होत सुगम अति काज ।
ताहि समाधि बखानहीं भूषन जे कविराज ॥ २५१ ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

बैर कियो सिव चाहत हो तब लौं अरि बाह्यो कटार कठैठो । योंही मलिच्छहि छाँडै नहीं सरजा मन तापर रोस मैं पैठो ॥ भूषन क्यों अफजल्ल बचै अठपाव[2] कै सिंह को पावँ उमैठो । बीछू के घाय धुक्योई[3] धरक्क ह्वै तौ लग धाय धराधर बैठो ॥२५२॥

---

[१] सौंह; क़सम ।

[२] उपद्रव; शरारत । यथा "करौ तुम अठपाव पावैं हम गारी गावँ मैं" [रघुनाथ--रसिक मोहन] ।

[३] धुकधुकाया; कलेजा कांपा ।

समुच्चय ।

लक्षण-दोहा ।

एक बारही जहँ भयो बहु काजन को बंध।
ताहि समुच्चय कहत हैं भूषन जे प्रतिबंध ॥ २५३ ॥

उदाहरण—मालती सवैया ।

माँगि पठायो सिवा कछु देस वजीर अजानन बोल गहे ना । दौरि लियो सरजा परनालो[1] यों भूषन जो दिन दोय लगे ना ॥ धाक सों खाक बिजैपुर भो सुख आय गो खान[2] खवास के फेना[3] । भै भरकी करकी धरकी दरकी दिलएदिलसाहि कि सेना॥२५४॥

द्वितीय समुच्चय ।

लक्षण[4] । दोहा ।

वस्तु अनेकन को जहाँ बरनत एकहि ठौर ।
दुतिय समुच्चय ताहि को कहि भूषन कवि मौर ॥२५५॥

उदाहरण—मालती सवैया ।

सुन्दरता गुरुता प्रभुता भनि भूषन होत है आदर जामैं । सज्जनता औ दयालुता दीनता कोमलता झलकै पर जामैं ॥ दान कृपानहु को करिबो

[१] छन्द नं० १०७ नोट देखिए।

[२] छं० नं० २०६ नोट देखिए ।

[३] भयानकरस पूर्ण ।

[४] अन्य कवि इसका लक्षण यों देते हैं "द्वितीय समुच्चय में एक काज को कई कारण पुष्ट करते हैं । "

करिबो अभै दीनन को बर जामैं। साहन सों रन टेक बिबेक इते गुन एक सिवा सरजा मैं ॥ २५६ ॥

प्रत्यनीक।

लक्षण-दोहा।

जहां जोरावर सत्रु के पक्षी पै कर जोर।
प्रत्यनीक तासों कहैं भूषन बुद्धि अमौर ॥ २५७ ॥

उदाहरण-अलसा सवैया[1]।

लाज धरौ सिवजू सों लरौ सब सैयद सेख पठान पठाय कै। भूषन ह्यां गढ़ कोटन हारे उहाँ तुम क्यों सठ[2] तोरे रिसाय कै ? ॥ हिन्दुन के[3] पति

---

(१) अलसा सवैया नवीन मत की है। इसमें पहले सात भगन फिर एक रगन (रगनन्त भ मुनि) होते हैं भगण के तीन अक्षरों में पहला गुरु और शेष दो लघु होते हैं तथा रगण के तीन अक्षरों में पहला व तीसरा गुरु होता है और दूसरा लघु।

(२) औरंगजेब ने अनेक मन्दिर हिन्दुओं को सताने के लिए तोड़वा दिए यहां तक कि काशीजी में श्री विश्वनाथजी तक का मन्दिर तोड़वा कर उसकी एक ओर की दीवार पर मस्जिद बनवा दी जो अब तक जैसा का तैसा प्रस्तुत है। न जानैं इसमें हिन्दुओं की क्या वास्तविक हानि हो गई पर हां इतना अवश्य हुआ कि ऐसी ही बातों से मुग़लों के ऐसे सुदृढ़ राज्य की चूरैं हिल गईं और कुछ ही दिनों में वह भरभरा कर ढेर हो गया। आश्चर्य्य है कि औरंगजेब जैसे राजनीतिज्ञ शासक ने ऐसी उत्कट भूलैं कीं! अस्तु। सन् १६६८ ई० की यह घटना है। बीभत्स रस।

(३) मेवार (उदयपुर) के राणा "हिन्दूपति" कहलाते हैं। शिवाजी को उसी वंश का होने से भूषण जी ने इस नाम से पुकारा।

ह्वां न बिसात सतावत हिन्दु गरीबन पायकैं । लीजै कलंक न दिल्लि के बालम आलम आलमगीर[1] कहायकै ॥ २५८ ॥

पुनः । कबित्त मनहरण ।

गौर[2] गरबीले अरबीले राठ[3] वर गह्यो लोह[4] गढ़ सिंहगढ़ हिम्मति हरषते । कोट के कँगूरन मैं गोलन्दाज तीरन्दाज राखे हैं लगाय, गोली तीरन बरषते ॥ कै कै सावधान किरवान कसि कम्मरन सुभट अमान चहुँ ओरन करषते । भूषन भनत तहाँ सरजा सिवा तैं चढ़ो राति के सहारे ते अराति[5] अमरषते ॥ २५९ ॥

अर्थापति (काव्यार्थापति) ।

लक्षण-दोहा ।

"वहजीत्यो तौ यह कहा" यों कहनावति होय ।
अर्थापत्ति बखानहीं तहाँ सयाने लोय ॥ २६० ॥

---

(१) औरंजेब का यह भी नाम था जिसका अर्थ है संसार भर पर अधिकार करलेने वाला ।

(२) छं० न० १३४ नोट देखिए ।

(३) जोधपुर के राजा गण । यहां उदय भानु राठौर (छं० न० १०० देखिए ।)

(४) सिंहगढ़ (छं० न० १०० देखिए) के गढ़ अर्थात् किले में लोह अर्थात् तलवार गहा ।

(५) शत्रु पर क्रोध करके ।

उदाहरण। कवित्तमनहरण।

सयन मैं साहन को सुन्दरी सिखावैं ऐसे सरजा सों बैर जनि करौ महाबली है। पेसकसैं भेजत बिलायति पुरतगाल[1] सुनिकै सहमि जात करनाट[2] थली है॥ भूषन भनत गढ़ कोट माल मुलुक दै सिवासों सलाह राखिए तौ बात भली है। जाहिदेत दंड सब डरिकै अखंड सोई दिली दलमली तौ तिहारी कहा चली है? ॥२६१॥

काव्यलिङ्ग।

लक्षण-दोहा।

है दिढ़ाइबे जोग जो ताको करत दिढ़ाव।
काव्य लिंग तासों कहैं भूषन जे कबिराव॥ २६२॥

उदाहरण-मनहरण दंडक।

साइति लै लीजिए बिलाइति को सर कीजै बलख़ बिलायति को बंदि अरिडावरे। भूषन भनत कीजै उत्तरी भुवाल बस पूरब के लीजिए रसाल गज छावरे॥ दच्छिन के नाथ से सिपाहिन सों बैरकरि अवरंग साहिजू कहाइए न बावरे। कैसे सिवराज भानु देत अवरंगै गढ़ गाढ़े गढ़पती गढ़ लीन्हे और रावरे॥ २६३॥

---

(१) छन० २४२ नोट देखिए।
(२) छं० नं० ११७ नोट देखिए।

अर्थान्तरन्यास।

[१]लक्षण-दोहा।

कह्यो अरथजाही लियो और अरथ उल्लेख।
सो अर्थान्तर न्यास है कहि सामान्यबिसेख ॥२६४॥

उदाहरण। सामान्य भेद। कवित्त मनहरण।

बिना चतुरंग संग बानरन लैकै बाँधि बारिद को लंक रघुनन्दन जराई है। पारथ अकेले द्रोन भीषम से लाख भट जीति, लीन्हों नगरी बिराट मैं बड़ाई है॥ भूषन भनत ह्वै गुसुल खाने मैं खुमान अवरंग साहिबी हथ्याय हरि लाई है। तौ कहा अचम्भो महराज सिवराज सदा बीरन के हिम्मतै हथ्यार होत आई है ॥२६५॥

विशेषभेद। मालती सवैया।

साहि तनै सरजा समरत्थ करी करनी धरनी पर नीकी। भूलिगे भोजसे बिक्रम से औ भई बलि बेनु कि कीरति फीकी॥ भूषन भिच्छुक भूप भए भलि भीख लै केवल भौंसिला ही की। नैसिक रीझि धनेस करै, लखि ऐसियै रीति सदा सिवजीकी ॥२६६॥

---

(१) इसका लक्षण अन्य कवि यों देते हैं :-अर्थान्तर न्यास वह है जहाँ किसी वस्तुको पहले विशेष कह के फिर सामान्यकरदे।

प्रौढ़ोक्ति ।

लक्षण । दोहा ।

[1]जहँ उतकरष अहेत के बरनत हैं करि हेत ।
प्रौढ़ोकति तासों कहत भूषन कबि बिरदेत[2] ॥२६७॥

उदाहरण—कबित्त मनहरण ।

मानसर बासी हंस बसन समान होत, चन्दन सों घस्यो घनसारऊ[3] घरीक है । नारद की सारद की हाँसी मैं कहाँ सी भास सरद की सुरसरी कौन पुण्डरीक है ? ॥ भूषन भनत छक्यो छीरधि मैं थाह लेत फेन लपटानो ऐरावत के करी कहै ? । कयलास ईस ईस सीस रजनीस वहै अवनीस सिवाके न जस के सरीक है ॥ २६८ ॥

सम्भावना ।

लक्षण । दोहा ।

"जुयों होय तौ होय इमि" जहँ सम्भावन होय ।
ताहिकहत सम्भावना कबि भूषन सबकोय ॥ २६९ ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

लोमस की ऐसी आयु होय कौनहू उपाय तापर कवच जो करन वारो धरिए । ताहूपर हूजिए सहस

(१) इसका लक्षण अन्य कवियों ने यों भी कहा है:- प्रौढ़ोक्ति वह है जहाँ कोई बहुत बड़ा काज हो और उसके वास्ते कोईकारण वरणितन हो पर कोई कल्पित कारण कहा जाय ।
(२) विरद (प्रशंसा) करने वाले ।
(३) कपूर भी ।

बाहु ता पर सहस गुनो साहस जो भीमहु ते करिए ॥
भूषन कहैं यों अवरंगजू सों उमराव नाहक कहो तौ
जाय दच्छिन में मरिए । चलै न कछू इलाज भेजियत
वेही काज ऐसो होय साज तौ सिवासों जायलरिए॥२७०॥

मिथ्याध्यवसित

लक्षण । दोहा ।

झूठ अरथ की सिद्धि को झूठो बरनत आन ।
मिथ्याध्यवसित कहतहैं भूषन सुकबि सुजान ॥२७१॥

उदाहरण । दोहा ।

[1]पगरन मैं चल यों लसैं ज्यों अङ्गद पग ऐन ।
धुव सो भुव सो मेरु सो सिव सरजा के बैन ॥२७२॥

पुनः । कवित्त मनहरन ।

मेरु सम छोटो पन सागर सो छोटो मन धनद
के धन ऐसो छोटो जग जाहि के । सूरज सो सीरो
तेज चाँदनी सी कारी कित्ति अमिय सो कटु लागै
दरसन ताहि के ॥ कुलिस सो कोमल कृपान अरि
भंजिबे के भूषन भनत भारी भूप भौंसिलाहि के ।
भुव सम चल पद सदा महि मंडल मैं धुव सो चपल
धुव बल सिव साहिके ॥ २७३ ॥

---

(१) इस में शिवाजी के विषयमें झूठी बातें झूठी उपमाओं द्वारा कही गई हैं जैसा कि भूषणजी ने लक्षण में साफ़ लिख दिया है ।

उल्लास ।

लक्षण । दोहा ।

एकहि के गुन दोषते औरै को गुन दोस ।
बरनत हैं उल्लास सो सकल सुकबि मतिपोस॥२७४॥

उदाहरण (गुणेनदोषो) । मालतीसवैया

काज मही सिवराज बली हिँदुवान बढ़ाइबेको उर ऊटै । भूषन भूनिरम्लेच्छ करी चहै, म्लेच्छन मारिबे को रन जूटै ॥ हिन्दु बचाय बचाय यही अमरेस चँदावत लौं कोइ टूटै । चन्द अलोकते लोक सुखी यहि कोक अभाग को सोकन छूटै ॥ २७५ ॥

पुनः (दोषेण गुणो) । मनहरण दण्डक ।

देस दहपट्ट कीने लूटि कै खजाने लीने बचेन गढ़ोई काहूगढ़ सिरताज के । [1]तोरादार सकल तिहारे मनसबदार डाँड़े, जिनके सुभाय जंग दै मिजाज के ॥ भूषन भनत बादसाह को यों लोग सब बचन सिखावत सलाहकी इलाज के । डावरे कि बुद्धि ह्वै कै बावरे नकीजै बैरु रावरे के बैर होत काज सिवराज के ॥ २७६ ॥

अन्यच्च (गुणेन गुणो) । दोहा ।

नृप सभान मैं आपनी होन बड़ाई काज ।
साहितनै सिवराज के करत कबित कबिराज॥२७७॥

---

(१) तिहारे सकल तोरादार (तथा) मनसबदार जिनके सुभाय मिजाज के (अभिमानी थे) युद्धकरके डाँड़े ।

अपरंच (दोषेनदोषो) । दोहा ।

सिव सरजा के बैर को यह फल आलमगीर ।
छूटे तेरे गढ़ सबै कूटे गए वजीर ।। २७८ ।।

पुनरपि । मनहरण दण्डक

दौलति दिली की पाय कहाए अलमगीर बब्बर[1] अकब्बर[2] के बिरद बिसारे तैं । भूषन भनत लरि लरि सरजा सों जंग निपट अभंग गढ़ कोट सब हारे तैं ।। सुधरयोन एको साज भेजि भेजि बेही काज बड़े बड़े बे इलाज उमराव मारे तैं । मेरे कहे मेर करु, सिवाजी सों बैर करि गैर[3] करि नैर[4] निज नाहक उजारे तैं ।। २७९ ।।

अवज्ञा ।

लक्षण । दोहा

औरे के गुन दोस ते होत न जहँ गुन दोस ।
तहाँ अवज्ञा होत है भनि भूषन मति पोस ।।२८०।।

उदाहरण । मालती सवैया

औरन के अनबाढ़े कहा अरु बाढ़े कहा नहिँ होत चहा है । औरन के अनरीझे कहा अरु रीझे

---

[१] बाबर बादशाह, औरंगज़ेब के पांच पुश्त ऊपर का भारत का पहला मुग़ल बादशाह था ।

[२] अकबर औरंगज़ेब का परदादा था ।

[३] गैरकरि=बेजा करके ।

[४] नगर; देश ।

कहा न मिटावत हा[१] है । भूषन श्री सिवराजहि माँ गिए एक दुनी बिच दानि महा है । मंगन औरन के दरबार गए तौ कहा न गए तौ कहा है ? ॥२८१॥

अनुज्ञा ।

लक्षण । दोहा ।

जहाँ सरस गुन देखि कै करै दोस की हौस ।
तहाँ अनुज्ञा होत है भूषन कबि यहि रौस ॥२८२॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

जाहिर जहान सुनि दान के बखान आजु महा दानि साहितनै गरिब नेवाज के । भूषन जवाहिर जलूस जर बाफ जोति देखि देखि सरजा कि सुकबि समाज के ॥ तप करि करि कमलापति सों माँगत यों लोग सब करि मनोरथ ऐसे साज के । बैपारी जहाज के न राजा भारी राजके भिखारी हमैं कीजै महाराज सिवराज के ॥ २८३ ॥

लेश ।

लक्षण । दोहा

जहँ बरनत गुन दोष,कै कहै दोष गुन रूप ।
भूषन ताको लेस कहि गावत सुकबि अनूप ॥२८४॥

उदाहरण । दोहा

उदै भानु राठौर बर धरि धीरज, गढ़, ऐंड़ ।

[१] "हाय" अर्थात् दुःख को नहीं मिटाता ।

प्रगटै फल ताको लह्यो परि गो सुर पुर पैंड़ ॥२८५॥
कोऊ बचत न सामुहें सरजा सों रन साजि ।
भली करी पिय! समरते जियलै आए भाजि ॥२८६॥

तद्गुण ।

लक्षण । दोहा

जहाँ आपनो रंग तजि गहै और के रंग ।
ताको तदगुन कहत हैं भूषन बुद्धि उतंग ॥ २८७॥

उदाहरण । मनहरण दंडक

[1]पम्पा मान सर आदि अगन तलाव लागे जेहि के परन मैं अकथ युत[2] गथ के । भूषन यों साज्यो राजगढ़[3] सिवराजरहे देव चक चाहि कै बनाए राजपथ के ॥ बिन[4] अवलम्ब कलिकानि[5] आसमान मैं ह्वै होत विसराम जहाँ इन्दु औ उदथ[6]

---

[१] जिस (राजगढ़) के पक्षों अर्थात् पक्खें में पम्पा, मान-सरोवर आदि अगणित तालाव लगे हैं अर्थात् चित्रित हैं ।

[२] वे (तालाब) अकथनीय हैं और उनके साथ कितने ही गाथा लगे हैं अर्थात् वे इतिहासें और पुराणें में प्रसिद्ध हैं ।

[३] इसका वर्णन छन्द नं० १४ नोट एवं छन्द नं० १५-२४ में देखिए । जान पड़ता है कि वह वरणन राजगढ़ ही का है न कि रायगढ़ का । भूमिका देखिए ।

[४] विना किसी चीज़ पर सहारा पाने के सूर्य्य और चन्द्रमा आसमान में परेशान हो कर जिस राजगढ़ पर विश्राम ले लेते हैं ।

[५] परेशानी ।

[६] उदय व अस्त होनेवाला, सूर्य्य ।

के । महत उतंग मनि जोतिन के संग[१] आनि कैयो रंग चकहा[२] गहत रबि रथ के ॥ २८८ ॥

पूर्व्व रूप

लक्षण । दोहा

प्रथम रूप मिटि जात जहँ फेरि वैसोई होय ।
भूषन पूरब रूप सो कहत सयाने लोय ॥ २८९ ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यन्त पुनीत तिहू पुर मानी । राम युधिष्ठिर के बरने बलमीकिहु ब्यास के अंग सोहानी ॥ भूषन यों कलि के कबिराजन राजन के गुन पाय नसानी । पुन्य[३] चरित्र सिवा सरजै बर न्हाय पवित्र भई पुनि बानी ॥ २९० ॥

यों सिर पैं छहरावत छार हैं जाते उठैं असमान बभूरे । भूषन भूधरऊ धरकैं जिनके धुनि धक्कन यों बल

---

[१] के संग आनि=से मिलान हो कर ।

[२] पहिए ।

[३] इस को पढ़ कर तुलसीदासजी की—

"भक्त हेतु विधि भवन बिहाई । सुमिरत सारद आवत धाई ॥
"राम चरित सर बिन अन्हवाए । सो श्रम जाय न कोटि उपाए ॥"

इत्यादि चौपाइयों का स्मरण हो आता है । इस विषय में हमने अपने विचार "सरस्वती, भाग १ संख्या १२" में "हिन्दी काव्य (आलोचना)" शीर्षक निबंध में प्रकट किए हैं । विषयी राजाओं के कारण लोभी कवियों ने नायका इत्यादिक विषयों पर काव्य कर सरस्वती देवी को अपवित्र सी कर दिया था ।

रूरे ॥ ते सरजा सिवराज दिए कबिराजन को गज-राज गरूरे । सुंडन सों पहिले जिन सोखि कै फेरि महामद सों नद पूरे ॥ २८१ ॥

श्री सरजा सलहेरि[1] के युद्ध घने उमरावन के घर घाले। कुम्भ चँदावत सैद पठान कबंधन धावत भूधर हाले॥ भूषन यों सिवराज कि धाक भए पियरे अरुने रँग वाले । लोहै कटे लपटे अति लोहु[2] भए मुँह मीरन के पुनि लाले ॥ २८२ ॥

यों कबि भूषन भाषत है यक तौ पहिले कलि-काल कि सैली । तापर हिन्दुन की सब राह सु नौरँग साह करी अति मैली ॥ साहि तनै सिव के डर सों तुरकौ गहि बारिध की गति पैली । बेद पुरानन की चरचा अरचा द्विज देवन की फिरि फैली ॥ २८३ ॥

अतद्गुण ।

लक्षण । दोहा

जहँ संगति ते और को गुन कछूक नहिँ लेत ।
ताहि अतदगुन कहत हैं भूषन सुकवि सचेत ॥२८४॥

उदाहरण । मालती सवैया

दीन दयालु दुनी प्रतिपालक जे करता निर-म्लेच्छ मही के । भूषन भूधरि उद्धरिबो सुने और जिते गुन ते सब जी के ॥ या कलि मैं अवतार लियो तऊ तेई सुभाय सिवाजि बली के । आय धर्यो हरि ते नर रूप पै काज करैं सिगरे हरिही के ॥ २८५ ॥

[१] छन्द नं० ८७ नोट देखिए ।   [२] लोहू ; रुधिर ।

पुनः । कवित्त मनहरण ।

सिवाजी खुमान तेरो खग्ग बढ़े मान बढ़े मानस लौं बदलत कुरुष उछाह[1] ते । भूषन भनत क्यों न जाहिर जहान होय प्यार पाय तो से ही दिपत नर नाह ते ॥ परताप फैटो रहो सुजस लपेटोरहो बरनत खरो नर पानिप अथाह ते । रंग रंग रिपुन के रकत सों रँगो रहै रातो दिन रातो पै न रातो होत स्याह ते ॥२८६॥

अपरंच । दोहा

सिव सरजा की जगत मैं राजत कीरति नौल ।
अरि तिय अंजन दृग हरै तऊ धौल की धौल॥२८७॥

अनुगुन ।

लक्षण । दोहा ।

जहाँ और के संग ते बढ़ै आपनो रंग ।
ता कहँ अनुगुन कहत हैं भूषन बुद्धि उतंग ॥ २८८ ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

साहि तनै सरजा सिवा के सनमुख आय कोउ बचि जायन गनीम भुज बल मैं । भूषन भनत भौंसिला की दिल दौर सुनि धाकही मरत म्लेछ औरँग के दल मैं ॥ रातौ दिन रोवत रहत यवनी हैं सोक परोई रहत दिली आगरे सकल मैं । कज्जल कलित अँसुवान के उमंग संग दूनो होत रोज रंग यमुना के जल मैं ॥ २८९ ॥

[१] मानसरोवर की भांति बेरुखी उछाह में परिणित हो जाती है ।

मीलित ।

लक्षण । दोहा ।

सदृस बस्तु मैं मिलि जहां भेद न नेक लखाय ।
ताको मीलित कहतहैं भूषन जे कबिराय ॥ ३०० ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

इन्द्र निज हेरत फिरत गज-इन्द्र अरु इन्द्र को अनुज[1] हेरै दुग्गधिनदीस को । भूषन भनत सुर सरिता को हंस हेरै बिधि हेरै हंस को चकोर रजनीस को ॥ साहि तनै सिवराज करनी करी है तैंजु होत है अचम्भो देव कोटियौ तैंतीस को । पावत न हेरे तेरे जस मैं हिराने निज गिरि को गिरीस हेरैं गिरिजा गिरीस को ॥ ३०१ ॥

उन्मीलित ।

लक्षण-दोहा ।

सदृस वस्तु मैं मिलत पुनि जानत कौनेहु हेत ।
उनमीलित तासों कहत भूषन सुकवि सचेत ॥३०२॥

उदाहरण-दोहा ।

सिव सरजा तव सुजस मैं मिलै धौल छवि तूल ।
बोल बास ते जानिए हंस चमेली फूल ॥ ३०३ ॥

सामान्य ।

लक्षण-दोहा ।

भिन्न रूप जहँ सदृस ते भेद न जान्यो जाय ।
ताहि कहत सामान्य हैं भूषन कवि समुदाय ॥३०४॥

---

(१) इन्द्र का छोटा भाई अर्थात वरुण जो जल के देवता हैं ।

उदाहरण। मालतीसवैया।

पावस की यक राति भली सुमहाबली सिंह सिवा गमकेते। म्लेच्छ हजारनही कटि गे दसही मरहट्टन के झमकेते॥ भूषन हालि उठे गढ़ भूमि पठान कबंधन के धमकेते। मीरन के अवसान गये मिलि धोपनि[1] सों चपला चमके ते॥ ३०५॥

विशेषक।

लक्षण—दोहा।

भिन्न रूप सादृश्य मैं लहिए कछू बिसेख।
ताहि बिसेषक कहत हैं भूषन सुमति उलेख॥३०६॥

उदाहरण—कबित्त मनहरण।

अहमद[2] नगर के थान किरवान लै कै नवसेरी खान[3] ते खुमान भिरयो बलते। प्यादन सों प्यादे पखरैतन सों पखरैत बखतर वारे बखतर वारे हलते॥ भूषन भनत एते मान घमसान भयो जान्यो न परत कौन आयो कौन दलते। सम बेष ताके, तहाँ सरजा सिवा के बाँकेबीर जाने हाँके देत, मीरजाने चलते॥३०७॥

---

(१) तलवार। यथा "छत्रसाल जेहि दिसि पिलै काढ़ि धोप कर माहिं। तेहि दिसि सीस गिरीस पै वनत बटोरत नाहिं"॥ (छत्रप्रकाश)। यहां शाइस्ता ख़ां वाली लड़ाई का इशारा भूषण जी ने किया है।

(२) निजामशाही "बादशाहों" की राजधानी। यहां पर शिवाजी ने नौशेरीख़ां को लूटा था।

(३) नौशेरी ख़ां को ख़ानदौरां की उपाधि थी (छ० नं० १०३ नोट देखिए)

पिहित ।

लक्षण-दोहा ।

परके मन की जानि गति ताको देत जनाय ।
कछू कृया करि, कहत हैं पिहित ताहि कबिराय॥ ३०८॥

उदाहरण-दोहा ।

गैर मिसिल ठाढ़ो सिवा अन्तरजामी नाम ।
प्रकट करीरिस, साहकी सरजा करि न सलाम ॥३०८॥

[1]आनि मिल्यो अरि, यों गह्यो चखन चकत्ता चाव।
साहि तनै सरजा सिवा दियो मुच्छ परताव ॥३१०॥

प्रश्नोत्तर ।

लक्षण-दोहा ।

कोऊ बूझै बात कछु कोऊ उत्तर देत ।
प्रश्नोत्तर ताको कहत भूषन सुकवि सचेत ॥ ३११ ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

लोगन सों भनि भूषन यों कहै खान[2] खवास कहा सिख दै हौ । आवत देखन लेत सिवा सरजै मिलिहौ भिरिहौ कि भगै हौ ॥ एदिल की सभा बोलि उठीयोँ सलाह करौब कहां भजिजैहौ । लीन्हो कहा लरिकै अफजल्ल कहा लरिकै तुमहू अबलैहौ ? ॥ ३१२ ॥

---

(१) वीर रस अपूर्ण ।
(२) छं० नं० २०६ नोट देखिए ।

पुनः । दोहा ।

कोदाता को रनचढ़ो को जग पालनहार ? ।
कबि भूषन उत्तरदियो सिवनृप हरिअवतार ॥३१३॥

व्याजोक्ति ।

लक्षण । दोहा

आनहेतु सों आपनो जहां छिपावै रूप ।
व्याज उकुतिता सों कहतभूषन सुकबिअनूप ॥३१४॥

उदाहरण । मालतीसवैया ।

साहिन के उमराव जितेक सिवा सरजा सब लूटि लए हैं । भूषन ते बिन दौलति ह्वै कै फकीर ह्वै देस बिदेस गए हैं ॥ लोग कहैं इमि दच्छिन[1] जेय सिसौदिया रावरे हाल ठए हैं ? । देत रिसाय कै उत्तर यों हमही दुनियाँ ते उदास भए हैं[2] ॥३१५॥

पुनः । दोहा ।

सिवाबैर औरँग बदन लगी रहैनित आहि ।
कबि भूषन बूझे सदा कहै देत दुखसाहि[3] ॥ ३१६ ॥

---

(१) दक्षिण का जीतने वाला सिसौदिया अर्थात् शिवाजी ।

(२) इन दों पदों का पाठान्तर यों है—"ईजति राखि सकैं अपनी इमि स्यानपनो करि त्योर ठए हैं । भेटतही सबही सों कहैं हम या दुनियां ते उदास भए हैं" ।

(३) शाही; राज्य भार ।

लोकोक्ति एवं छेकोक्ति ।

लक्षण । दोहा ।

कहनावति जो लोक की लोक उकुति सो जानि ।
जहाँ कहत उपमान ह्वै छेकउकुति तेहिमानि ॥३१७॥

उदाहरण ।

लोकोक्ति यथा । दोहा ।

सिवसरजा की सुधि करौ भलीन कीन्ही पीव ।
सूबा ह्वै दच्छिन चले धरे जातकित जीव? ॥३१८॥

छेकोक्ति । यथा । दोहा ।

जे सोहात सिवराज को ते कबित्त रसमूल ।
जे परमेस्वर पै चढ़ैं तेई आछेफूल ॥ ३१९ ॥

पुनः । किरीटी सवैया[1] ।

औरँग जो चढ़ि दक्खिन आवै तौ ह्याँते सिधावै सोऊ बिनु कप्पर । दीनो मुहीम को भार बहा[3]दुर छागो[2]सहै क्यों गयन्द को झप्पर ? ॥
सास्ता खां सँग वे हठि हारे जे साहब सातएँ ठीके भुवप्पर । ये अब सूबहु आवैं सिवापर "कालिह के जोगी कलींदे[4] को खप्पर" ॥३२०॥

---

(१) इस सवैया में "बसुभा" अर्थात आठ भगण होत हैं। एक गुरु फिर दो लघु अक्षर = भगण ।

(२) बकरा; छगरा ।

(३) कदाचित यह खानबहादुर = ख़ां जहां बहादुर के विषय हो—इसका हाल छन्द नं० ८६ में बहलोल वाले नोट में देखिये ।

(४) तरबूजा । "नई नाइन बाँस का नहन्ना" की तरह यह भी एक कहावत है ।

बक्रोक्ति ।

लक्षण । दोहा ।

जहाँ श्लेषसों का[1]कु सों अरथ लगावै ग्रौर ।
बक्र उकुति ताको कहत भूषन कबिसिरमौर ॥३२१॥

उदाहरण ।

श्लेषसे बक्रोक्ति । कबित्त मनहरन ।

साहितनै तेरे बैर बैरिन को कौतुक सो बूझत फिरत कहौ काहे रहे तचिहौ ? । सरजा के डर हम ग्राए इतै भाजि, तब सिंह सों डराय याहूठौर ते उकचि[2]हौ ॥ भूषन भनत वै कहैं कि हम सिव कहैं तुम चतुराई सो कहत बात रचिहौ । सिवजापै रूठैं तौ निपट कठिनाई तुमबैर त्रिपुरारिके त्रिलोक मैं न बचिहौ ॥ ३२२ ॥

काकु से बक्रोक्ति । कबित्तमनहरण ।

सास[3]ताखां दक्खिन को प्रथम पठायो तेहि बेटा के समेत हाथ जाय कै गँवायो है । भूषन भनत जौ लौं भेजो उत ग्रौरै तिन वेही काज बरजोर कटक कटायो है ॥ जोई सूबेदार जात सिवाजी सों हारितासों ग्रवरंग साहि इमि कहै मन भायो है ।

---

(१) वह प्रश्न जिससे उत्तर व्यंजित होजाय यथा "क्या मजाल ?"

(२) उचको गे; उठ भागो गे ।

(३) छन्द नं० ३५ नोट देखिए ।

मुलुक लुटायो तौ लुटायो, कहा भयो ? तन आपनो बचायो महाकाज करिआयो है ॥ ३२३ ॥

पुनः । दोहा ।

करि मुहीम आये कहत हजरत मनसब दैन ।
सिव सरजा सों जंगजुरि ऐहैं बचिकै हैन ॥ ३२४ ॥

स्वभावोक्ति ।

लक्षण ।दोहा ।

सांचो तैसो बरनिए जैसो जाति स्वभाव ।
ताहि सुभावोकति कहत भूषन जे कबिराव ॥३२५॥

उदाहरण । मनहरण दंडक ।

[1]दानसमै द्विजदेखि मेरुहू कुबेरहू की सम्पति लुटायबे को हियोललकत है । साहिके सपूत सिव साहिके बदन पर सिव की कथान मैं सनेह झलकत है ॥ भूषन जहान हिन्दुवान के उबारिबे को तुरकान मारिबे को बीर बलकत है। साहिन सों लरिबे की चरचा चलत आनि सरजाके दृगन उछाह छलकतहै ॥ ३२६ ॥

[2]काहू के कहे सुनेते जाही ओरचाहैं ताही ओर इकटक घरी चारिक चहत[3] हैं । कहे ते कहत बात कहे ते पियत खात भूषन भनत ऊँची साँसन

(१) इस कवित्त में दान, दया, तथा युद्ध वीर सभी वरणित हैं और वीररस भी पूर्ण है ।

(२) भयानक रस । (३) देखते हैं ।

जहत हैं ॥ पौढ़े हैं तौ पौढ़े बैठे बैठे खरे खरे हम को हैं कहा करत यों ज्ञान न गहत हैं । साहि के सपूत सिव साहि तव बैर इमि साहि सब रातौ दिन सोचत रहत हैं ॥ ३२७ ॥

उमड़ि कुड़ाल[1] मैं खवास खान आए भनि भूषन त्यों धाए सिवराज पूरेमनके । सुनि मरदाने बाजे हय हिहनाने घोर मूछैं तरराने मुख बीर धीर जनके ॥ एकै कहैं मार मार सम्हरि समर एकै म्लेच्छ गिरे मारबीच बेसम्हार तनके । कुंडन[2] के ऊपर कड़ाके उठैं ठौर ठौर जीरन[3] के ऊपर खड़ाके खड़गन के ॥ ३२८ ॥

आगे आगे तरुन तरायले चलत चले तिनके अमोद[4] मन्द मन्द मोद सकसै । अड़दार बड़े गड़[5] दारन के हाँके सुनि अड़े गैर[6] गैर माहिँ रोस रस अकसै ॥ तुंडनाय सुनि गरजत गुंजरत भौंर भूषन भनत तेऊ महामद छकसै । कीरति के काज महराज सिवराज सब ऐसे गजराज कबिराजनको बकसै ॥३२९॥

---

(१) इसका पता इतिहास में नहीं चलता । इस नाम के किसी छोटे स्थान पर शिवाजी से खवास खां (छं० २०६ नोट) की फ़ौज से कोई लड़ाई हुई होगी ।

(२) लोहे का टोप ।

(३) ज़िरह बख़्तर ।

(४) खेल कूद ।

(५) ३१-३४नोट देखिए ।

(६) गैल गैल; राह राह ।

भाविक ।

लक्षण । दोहा ।

भयो, हौन हारो, अरथ बरनत जहँ परतच्छ ।
ताकोभाविक कहत हैं भूषनकबि मतिस्वच्छ ॥३३०॥

उदाहरण । कबित्तमनहरण ।

अजौं भूतनाथ मुण्डमाल लेत हरषत भूतन अहार लेत अजहूँ उछाह है । भूषन भनत अजौ काटे कर बालन के कारे कुंजरन परीकठिन कराह है ॥ सिंह सिवराज सल[1] हेरि के समीप ऐसो कीन्हो कतलाम दिली दल को सिपाह है । नदी रन मंडल रुहेलन रुधिर अजौ अजौ रबिमंडल रुहेलनकी राहहै ॥३३१॥

गजघटा उमड़ी महा घन घटा सी घोर भूतल सकल मदजल सों पटत है । बेला छाँड़ि उछलत सातौ सिंधु बारि, मनमुदित महेस मग नाचत कढ़त है । भूषन बढ़न भौंसिला भुवाल को यों तेज जेतो सब बारहौ तरनि मैं बढ़त है । सिवाजी खुमान दल दौरत जहान पर आनि तुरकान पर प्रलै प्रगटत है ॥ ३३२ ॥

भाविक छबि ।

लक्षण । दोहा ।

जहँदूरि स्थित बस्तु को देखत बरनत कोय ।
भूषन भूषन राज भनि भाविक छबिसो होय ॥३३३॥

---

(१) छं० ८७ नोट देखिए ।

उदाहरण । मालती सवैया ।

सूबन साजि पठावत है नित फौज लखे मर हट्टन केरी । औरँग आपनि दुग्ग जमाति बिलोकत तेरियै फौज दरेरी ॥ साहितनै सिव साहि भई भनि भूषन यों तुव धाक घनेरी । रातहु द्योस दिलीस तकै तुव सैनकि सूरति[1] सूरति[2] घेरी ॥ ३३४ ॥

उदात्त ।

लक्षण । दोहा ।

अति सम्पति बरनन जहां तासों कहत उदात ।
कै आनै सुलखाइए बड़ी आन की बात ॥३३५ ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

द्वारन मतंग दीसैं आँगन तुरंग हीसैं बन्दी जन बारन[3] असीसैं जसरत हैं । भूषन बखानै जर-बाफ के सम्याने ताने झालरन मोतिन के झुंड झलरत हैं ॥ महाराज सिवा के नेवाजे कविराज ऐसे साजि कै समाज तेहि ठौर बिहरत हैं । लाल करैं प्रात तहाँ नील मनि करैं रात याही भाँति सरजा कि चरचा करत हैं ॥ ३३६ ॥

जाहु जनि आगे खता खाहु मति यारो गढ़ नाह के डरन कहैं खान यों बखान कै । भूषन खुमान

(१) शकल

(२) छं० २०० नोट; सूरत नाम का दक्षिण में प्रसिद्ध शहर ।

(३) दरवाजों पर अथवा बार बार ।

यह सो है जेहि पूना माहिँ लाखन मैं सास[1]ता खाँ डारयो बिन मान कै ॥ हिन्दुवान द्रुपदी की ईजति बचैबे काज झपटि बिराट पुर बाहर प्रमान कै । वहै है सिवा जी जेहि भीम ह्वै अकेले मारयो अफजल कीचक[2] को कीच घमसान कै ॥ ३३७ ॥

पुनः । दोहा ।

या पूना मैं मति टिकौ खान[2]बहादुर आय ।
ह्याँई साइस[3] खान को दीहीं सिवा सजाय ॥३३८॥

अत्युक्ति

लक्षण । दोहा ।

जहाँ सूरतादिकन की अति अधिकाई होय ।
ताहि कहत अति उक्ति हैं भूषन जे कविलोय ॥३३९॥

उदाहरण । मनहरण दंडक ।

साहि तनै सिवराज ऐसे देत गजराज जिन्हैं पाय होत कबिराज बे फिकिरि हैं । झूलत झलमलात झूलैं जर बाफन की जकरे जँजीर जोर करत किरिरि

---

(१) शाइस्ता खां । छं ३५ नोट देखिए ।

(२) राजा विराट का साला जिस ने द्रौपदी का सतीत्व भंग करना चाहा था । इसे भीमसेन ने मार डाला था । (महाभारत, विराट पर्व्व ।)

(३) खान बहादुर नाम का कोई व्यक्ति इतिहास में नहीं मिलता । अवश्यही भूषण जी ने ख़ान जहां बहादुर को इस नाम से लिखा है जिसे औरंगजेब ने १६७२ में दक्षिण का गवर्नर नियत किया था । इस का हाल छं० नं० ८६ में बहलोल वाले नोट में देखिए ।

हैं ॥ भूषन भँवर भननात घननात घंट पग झननात मनो घन रहे घिरि हैं । जिन की गरज सुने दिग्गज वे स्राब होत मदही के स्राब गड़काब होत गिरि हैं ॥ ३४० ॥

स्राजु यहि समै महराज सिव राज तुही जगदेव[1] जनक जजाति स्रम्बरीक सो । भूषन भनत तेरे दान जल जलधि मैं गुनिन को दारिद गयो बहि खरीक[2] सो ॥ चन्द कर किंजलक[3] चाँदनी पराग उड़ बृन्द मकरन्द बुन्द पुंज के सरीक सो । कुन्द[4] सम कयलास नाक गंग नाल तेरे जस पुंडरीक को स्रकास चंचरीक सो ॥ ३४१ ॥

पुनः । दोहा

माहाराज सिव राज के जेते सहज सुभाय ।
स्रौरन को स्रति उक्ति से भूषन कहत बनाय ॥३४२॥

निरुक्ति

लक्षण । दोहा ।

नामन को निज बुद्धि सें कहिए स्ररथ बनाय
ताको कहत निरुक्ति हैं भूषन जे कविराय ॥ ३४३ ॥

---

(१) पंवारों का बड़ा विदित स्रौर तेजस्वी राजा ।

(२) खरिका ; दांत खोदने की सींक ।

(३) कमल-फल के चारों स्रोर जो पीली व सफ़ेद सी कैं सी होती हैं ।

(४) कुन्दी का छोटा सा सफ़ेद फूल ।

उदाहरण । दोहा ।

कबि गन को दारिद द्विरद याही दल्यो अमान ।
याते श्री सिवराज को सरजा कहत जहान ॥३४४॥
हरयो रूप इन मदन को याते भो सिव नाम ।
लियो बिरद सरजा सबल अरि गज दलि संग्राम ॥३४५

पुनः । कवित्त मनहरण ।

आजु सिवराज महराज एक तुही सरनागत जनन को दिवैया अभै दान को । फैली महि मंडल बड़ाई चहुँ ओर ताते कहिए कहां लौं ऐसे बड़े परि-मान को ? ॥ निपट गँभीर कोऊ लाँघि न सकत बीर जोधन को रन देत जैसे भाऊ[1] खान को । दिल दरियाव क्यों न कहैं कबिराव तोहिं तो मैं बहिरात आनि पानिप जहान को ॥ ३४६ ॥

हेतु

लक्षण । दोहा ।

"या निमित्त यहई भयो" यों जहँ बरनन होय ।
भूषन हेतु बखानहीं कबि कोबिद सब कोय ॥३४७॥

उदाहरण । मन हरण दण्डक ।

दारुन दइत हरनाकुस बिदारिबे को भयो नर-सिंह रूप तेज बिकरार है । भूषन भनत त्योंही रावन

---

१ भाऊसिंह के विषय में छन्द नम्बर ३५ का नोट देखिए । इन्हें "भाऊखान" वैसेही कहा गया है जैसे अम्बर (जयपुर) के महाराजा जयसिंह "मिर्ज़ा" कहाते थे । वास्तव में भाऊ खां नामक कोई मुसलमान सरदार न था ।

के मारिबे को रामचन्द्र भयो रघुकुल सरदार है। कंस के कुटिल बल बंसन बिधुंसिबे को भयो यदुराय बसुदेव को कुमार है। पृथी पुरहूत साहि के सपूत सिवराज म्लेच्छन के मारिबे को तेरो अवतार है ॥३४८॥

अनुमान ।

लक्षण—दोहा ।

जहां काज ते हेतु कै जहां हेतु ते काज।
जानि परत, अनुमान तहँ कहि भूषन कबिराज॥३४९॥

उदाहरन । मनहरन दंडक ।

चित्त अनचैन आँसू उमगत नैन देखि बीबी कहैं बैन मियां कहियत काहि नै? । भूषन भनत बूझे आए दरबार ते कँपत बार बार क्यों सम्हार तन नाहि नै? सीनो धक धकत पसीनो आयो देह सब हीनो भयो रूप न चितौत बाएँ दाहिनै । सिवाजी कि संक मानि गए हौ सुखाय तुम्हैं जानियत दक्खिन को सूबा करो साहिनै ॥ ३५० ॥

अंझासी[1] दिन कि भई संझासी सकल दिसि गगन लगन रही गरद छवाय है। चील्ह गीध बायस समूह घोर रोर करैं ठौर ठौर चारों ओर तम मड़राय है॥ भूषन अँदेस देस देस के नरेस गन आपुस मैं कहत यों गरब गँवाय है। बड़ो बड़वा को जित-

१ नाग़ा अर्थात दिन गायब सा हो गया।

वार चहुँघा को दल सरजा सिवा को जानियत इत आय है ॥ ३५१ ॥

अर्थालंकार समाप्त । शब्दा लंकार प्रारम्भ

दोहा ।

जे अरथालंकार ते भूषन कहे उदार ।
अब शब्दालंकार ये कहत सुमति अनुसार ॥३५२ ॥

छेक एवं लाट अनुप्रास ।

लक्षण–दोहा ।

स्वर समेत अच्छर पदनि आवत सदृस प्रकास ।
भिन्न अभिन्नन पदन सों छेक लाटऽनुप्रास ॥३५३ ॥

उदाहरण । अमृत ध्वनि छन्द [1]

दिल्लिय दलन दबाय करि सिव सरजानिरसंक ।
लूटि लियो सूरति सहर बंकक्करि[2] अति डंक ॥ बंक-

---

१ इसमें छः पद होते हैं जिनमें प्रथम दो मिलकर एक दोहा होते हैं और चार अंतिम पदों में काव्य छन्द होता है । अन्त के चारो पदों में आठ आठ कलाओं के पीछे यति होती है । हमने जिन आचार्यों के दिए हुए लक्षण देखे उन्होंने यह नहीं लिखा है कि इस छन्द के पदों का अंतिम अक्षर अवश्य लघु होता है पर यह बात पाई सदा जाती है । भूषण जी इसमें कुंडलिया की भांति प्रथम के एक या दो शब्द अंतमें भी अवश्य लाते हैं यद्यपि यह आवश्यक नहीं है । अन्य कवियों की अमृतध्वनियों में थोड़े बहुत शब्द अथवा अक्षर-समूह निरर्थक आजाते हैं पर भूषण जी इस दोष से खूब ही बचे हैं । इसका नाम जैसा ही अच्छा है वैसीही यह पढ़ने में बड़ी टेढ़ी छन्द है । इसका नामतो "विषध्वनि" होता तो ठीक था ।

२ डंका बंक करके ।

क्करि अति डंक क्करि अस संकक्कुलिखल[1]। सोचक्क-कित भरोचक्कलिय[2] बिमोचक्कखजल ॥ तट्ठट्ठइमन[3] कट्ठट्ठिक[4] सोइ रट्ठट्ठिल्लिय[5]। सद्दद्दिसि[6] दिसि भद्दद्दबिभइ[7] रद्दद्दिल्लिय[8] ॥ ३५४ ॥

गत बल खानदलेल[9] हुव खान बहादुर मुद्ध।

---

१ इस तरह खलों को सशंक करके।

२ भरोंच शहर भागा।

३ वही बात मन में ठानकर।

४ कठिन (पूरे) तौर से ठीक करके।

५ रटकर अर्थात बार २ कहकर ठेलदिया।

६ भली भांति सब दिशाओं में।

७ भद होकर और दब कर।

८ दिल्ली रद्द हो गई।

९ दिलेर खां के विषय में छः २९२ नोट में मिर्ज़ा जयसिंह वाला नोट देखिए। शिवाजी की हार के बाद दिलेर खां (दलेल खां) दक्षिण और मालवा का सूबेदार रहा। सन् १६७२ में दिलेर खांने चाकन और सलहेरि को साथ २ घेरा और सलहेरि में उसकी फ़ौज की शिवाजी ने खूब ही खबरली। छं न० ८७ नोट देखिए। १६६७ में दिलेर खांने गोलकुण्डा पर धावा किया था पर मधुना पंत से उसे हारना पड़ा। १६७८ में शम्भाजी अपने पिता (शिवाजी) से नाराज़ होकर दिलेर खां के यहां भग गया और उसने बाप बेटों को लड़ाना चाहा पर औरंगजेब ने उसे शम्भा जी को दिल्ली भेज देने को लिखा। इतने बीच में दिलेर खां शिवाजी के सेनापति जनार्दन पंत से युद्ध में हारा और शम्भाजी को दिल्ली न भेज कर उसने जान बूझ कर भाग जाने दिया। दिलेर खां १६८४ में मरा।

सिव सरजा सलहेरि[1] ढिग क्रुद्धद्धरि[2] किय युद्ध॥
क्रुद्धद्धरि किय युद्धद्धुव[3] अरि अद्धद्धरि[4] धरि ।
मुंडड्डरि[5] तहँ रुंडड्डकरत[6] डुंडड्डग[7] भरि ॥
खेदिद्दर[8] बर छेदिद्दय[9] करि मेदद्दधि[10] दल ।
जंगग्गति[11] सुनि रंगग्गलि[12] अवरंगग्गत[13] बल ॥३५५

लिय धरि मोहकम[14] सिंह कहँ अरु किसोर नृपकुम्म[15] । श्री सरजा संग्राम किय भुम्मिम्मधि[16]

---

१ छं० ८७ नोट देखिए ।

२ क्रोध धरकर ।

३ ध्रुव (निश्चय) युद्ध किया ।

४ आधे २ करके; काट कर ।

५ मुंड डाल कर ।

६ रुंड डकार रहे हैं ।

७ डुंड (हाथ कटे हुए कबंध) डग भरते (दौड़ते) हैं ।

८ दर (स्थानों; मोरचों) से खेद कर ।

९ छेद डाला ।

१० फौज की मेद (चर्बी) को दही ऐसी फेंट डाली ।

११ जंग का हाल ।

१२ रंग गल गया ।

१३ बल जाता रहा ।

१४ छं० २३८ नोट देखिए ।

१५ नृप कुमार किशोर सिंह कोटा नरेश महाराज माधव सिंह के पुत्र थे दक्षिण में ये मुगलों की ओर से लड़ने गये थे वहीं शिवा जी से भी इनसे लड़ाई हुई होगी—सन् १६८८ ई० तक ये दक्षिण में लड़े थे—

१६ भूमि में ।

करि धुम्म ॥ भुम्मिम्मधि किय धुम्मम्मड़ि[1] रिपु जुम्मम्मलिकरि[2]। जंगग्गरजि[3] उतंगग्गरब[4] मतंगग्गन[5] हरि ॥ लक्खक्खन[6] रन दक्खक्खलनि[7] अलक्खक्खिति[8] भरि। मोलल्लहि[9] जस नोलल्लरि[10] बहलोलल्लिय[11] धरि ॥ ३५६ ॥

लिय जिति दिल्ली मुलुक सब सिव सरजा जुरि जंग।
भनि भूषन भूपति भजे भंगग्गरब तिलंग ॥

---

१ धूम माड़कर।
२ जुम्मा (मुँह) मल कर।
३ जंग में गर्ज कर।
४ बड़े गर्व वाले।
५ हाथियों के समूह।
६, ७, ८ लाखन दक्ष खलन से क्षण (भर के) रण (में) अलक्षित क्षिति भर दी।
९ मोल लेकर।
१० नवल नए तरह से) लड़कर।
११ बहलोल (छं० ८६ नोट) को पकड़ लिया। बहलोल पकड़ा नहीं गया था बरन घेर लिया गया था। मरहटा सरदारों ने इसे शिवा जी के वास्ते कुछ दंड लेकर जाने दिया था-भूषण जी कैद होना यों भी कह दिया करते थे यथा "बन्दि सइस्त खँ हूं को कियो जसवन्त से भाऊ करन्न से दोषै" परन्तु शाइस्ता खां को शिवा जी ने कभी कैद नहीं कर पाया था [देखिये शि० भू० छन्द नं० ७७]

भंगग्गरब तिलंगग्गयउ कलिंगग्गलि अति ।
दुन्दद्दबि दुहु दन्दद्दलनि[1] बिलन्दद्दहसति[2] ॥
लच्छच्छिन करि म्लेच्छच्छय[3] कियरच्छच्छबि[4] छिति ।
हल्लल्लगि[5] नरपल्लल्लरि परनल्लल्लिय[6] जिति ॥ ३५७ ॥

पुनः छप्पय ।

मुंड कटत कहुँ रुंड नटत कहुँ सुंड पटत घन । गिद्ध लसत कहुँ सिद्ध हँसत सुख वृद्धि रसत मन ॥ भूत फिरत करि बूत भिरत सुर दूत घिरत तहँ । चंडि नचत गन मंडि रचत धुनि डंडि[7] मचत जहँ ॥ इमि ठानि घोर घमसान अति भूषन तेज कियो अटल । सिवराज साहि सुव खग्ग बल दलि अडोल बहलोल दल ॥ ३५८ ॥

क्रुद्ध फिरत अति युद्धजुरत नहिं रुद्ध मुरत भट ।
खग्ग बजत अरि बग्ग[8] तजत सिर पग्ग सजत चट ।
दुक्कि फिरत मद भुक्कि भिरत करि कुक्कि गिरत गनि ॥

---

१ युद्ध में दबकर दोनों दलों (तिलंग और कलिंग) को दंद (दुःख) हुवा ।

२ बड़ा डर हुआ

३ क्षण (भर में) लाखों म्लेक्षों का क्षय करके ।

४ भूमि (भारत भूमि) की छबि की रक्षा की ।

५ हल्ला (धावा) कर (६) परनाले (छं० १०७ नोट) को जीत लिया ।

(७) दुन्द; युद्ध ।

(८) घोड़े की बाग ।

रंक रकत हर संग[1] छकत चतुरंग थकत भनि। इमि करि संगर अतिही विषम भूषन सुजस किया अचल। सिवराज साहि सुव खग्ग बल दलि अडोल बहलोल दल ॥ ३५९ ॥

पुनरपि। कवित्त मनहरण।

बानर बरार[2] बाघ बैहर बिलार बिग[3] बगरे बराह जानवरन के जोम हैं। भूषन भनत भारे भालुक भयानक हैं भीतर भवन भरे लील गऊ लोम[4] हैं॥ ऐंड़ायल गज गन गैंड़ा गररात गनि गेहन मैं गोहन* गरूर गहे गोम[5] हैं। सिवाजी की धाक, मिले खल कुल खाक, बसे खलन के खेरन खबीसन के खोम[6] हैं॥ ३६० ॥

तुर[7]मती तहखाने तीतर गुसुल खाने सूकर सिलह खाने कूकत करीस हैं। हिरन हरम खाने स्याही हैं सितुर खाने पाढ़े[8] पीलखाने औ करंज[9] खाने कीस हैं॥ भूषन सिवाजी गाजी खग्ग सों खपाए

(१) षङ्गत; साथी गण (यहां पर हर के साथी अर्थात् भूत प्रेत)
(२) बरियार।
(३) भेड़िया।
(४) लोमड़ी।
* गोह नामक जन्तुओं ने।
(५) स्थान। (यह शब्द गांव से निकला है)
(६) कौम; जाति।
(७) तिरमुत्ती, एक पक्षी।
(८) एक प्रकार का मृग।
(९) मुरगों के रहने का घर।

खल, खाने खाने खलन के खेरे भये[1] खीस हैं। खड़जी[2] खजाने खरगोस ख़िलवत[3] खाने खीसैं खोले खस खाने खांसत खबीस हैं ॥ ३६१ ॥

अन्यच्च—दोहा ।

औरन के जाँचे कहा नहिँ जाँच्यो सिवराज? ।
औरन के जाँचे कहा जो जाँच्यो सिवराज? ॥३६२॥

यमक अनुप्रास ।

लक्षण-दोहा ।

भिन्न अरथ फिरि फिरि जहाँ ओई अच्छर वृन्द ।
आवत हैं, सो जमक करि बरनत बुद्धि बिलन्द॥३६३॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

पूना[4] वारी सुनि कै अमीरन की गति लई भागिबे के मीरन समीरन की गति है । मार्‌यो जुरि जंग जसवन्त[5] जसवन्त[6] जाके संग केते रजपूत[7] रज[8] पूत पति है ॥ भूषन भनै यों कुल भूषन भुसिल सिव-

---

[१] खलों का एक एक घर नष्ट हो गया ।

[२] गैंड़ा ।

[३] एकान्त का कमरा ।

[४] शाइस्ता खां का इशारा है ।

[५] जसवन्त सिंह [छ. ३५ नोट]

[६] यश वाला; यशी ।

[७] राजपूत ।

[८] राजश्री युक्त ।

राज ! ताहि दीन्ही सिवराज बरकति है। नौहूखंड दीप[1] भूप भूतल के दीप[2] आजु समै के दिलीप[3] दिलीपति को सिदति[4] है ॥ ३६४ ॥

पुनिरुक्ति वदाभास ।

लक्षण—दोहा ।

भासतही पुनरुक्ति सो नहिं निदान पुनरुक्ति ।
वदाभास पुनरुक्ति सो भूषन बरनत युक्ति ॥ ३६५ ॥

उदाहरण—कबित्त मनहरण ।

अरिन के दल सैन[5] संगरमैं समुहाने टूक टूक सकल कै डारे घमसान मैं । बार बार रूरो महानद पर बाह पूरो बहत हैं हाथिन के मद जल दान मैं ॥ भूषन भनत महा बाहु भौंसिला भुआल सूर,[6] रबि कैसो तेज तीखन कृपान मैं । माल मकरन्द जू के नन्द कला निधि तेरो सरजा सिवाजी जस जगत[7] जहान मैं ॥ ३६६ ॥

---

[१] द्वीप सात हैं
[२] चिराग़ ।
[३] रघु के पिता राजादिलीप ।
[४] सीदति, कष्ट देती है ।
[५] शयन (में) संग रमैं अर्थात् साथ ही साथ मरे पड़े हैं ।
[६] बीर ।
[७] जागता है ।

चित्र ।

लक्षण–दोहा ।

लिखे सुने अचरज बढ़ै रचना होय बिचित्र ।
कामधेनु आदिक घने भूषन बरनत चित्र ॥३६७॥

उदाहरण (कामधेनु चित्र) माधवी[1] सवैया ।

धुव जो	गुरता	तिनको	सुरु भूषन	दानि बड़ो	गिरजा	पिव है ।
हुव जो	हरता	रिन[2] को	तरु[3] भूषन	दानि बड़ो	सिरजा[4]	छिवहै॥[5]
भुव जो	भरता	दिन[6] को	नरु भुषन	दानि बडो	सरजा	सिव है ।
तुव जो	करता	इनको	अरु भूषन	दानि बड़ो	बरजा[7]	निवहै॥ ३६८

संकर ।

लक्षण–दोहा ।

भूषन एक कबित्त मैं भूषन[8] होत अनेक ।
संकर ताको कहत हैं जिन्हैं कबित की टेक ॥३६९॥

---

[१] इस सवैया में "वसुना" अर्थात् आठ सगण होते हैं। सगण के तीन अक्षरों में प्रथम दो लघु और अन्तिम गुरु होता है। देवजी एक दूसरे प्रकार की सवैया को माधवी कहते हैं और आठ सगण वाली सवैया का वरणन नहीं करते। कविराज श्री सुखदेव मिश्र उस सवैया को "बाम" कहते हैं और इस "बसुना" वाली का नाम उन्होंने माधवी लिखा है। भूषण जी का यह कामधेनु चित्र वाला छन्द बिलकुल अच्छा नहीं। उसमें ७×४=२८ छन्द अवश्य बनते हैं। पर ऐसेछन्द अच्छे हो भी नहींसकते हैं।

[२] (औरों के) क़र्ज़ को।

[३] कल्प वृक्ष।

[४] रचा हुआ पैदायशी।

[५] छीव; उन्मत्त।

[६] वर्तमान समय का।

[७] बर जानिब है; बड़ा जानकार [ज्ञाता] है।

[८] अलंकार।

१६

उदाहरण। मनहरण दण्डक।

* ऐसे बाजिराज देत महाराज सिवराज भूषन जे बाज की समाजैं निदरत हैं। [1] पौन पाय हीन, दृग घूंघट मैं लीन, मीन जल मैं बिलीन, क्यों बराबरी करत हैं?॥ [2] सबते चलाक चित तेऊ कुलि आलम के रहैं उर अन्तर मैं धीर न धरत हैं। [3] जिन चढि आगे को चलाइयतु तीर, तीर[4] एक भरि तऊ तीर पीछे ही परत हैं ॥३७०॥

ग्रन्थालंकार नामावली। गीतिका छन्द[5]।

उपमा अनन्वै कहि बहुरि उपमा प्रतीप प्रतीप। [6] उपमेय-उपमा है बहुरि मालोपमा कबि दीप॥ ललितोपमा रूपक बहुरि परिनाम पुनि उल्लेख। सुमिरन भ्रमौ संदेह सुद्धापन्हुत्यौ सुभ बेख ॥ ३७१ ॥

हेतू अपन्हुत्यौ बहुरि परजस्त पन्हुति जान। सुभ्रांत पूर्ण अपन्हुत्यौ छेका अपन्हुति मान॥ बरकैतवापन्हुति गनौ उतप्रेक्ष बहुरि बखानि। पुनि रूपकाति सयोक्ति भेदक अति सयोक्ति सुजानि ॥३७२॥

---

* अनुप्रास ललितोपमा एवं प्रतीप अलंकार।

[१] अनुप्रास एवं अधिक तद्रूप रूपक।

[२] अनुप्रास एवं प्रतीप।

[३] यमक एवं अत्युक्ति।

[४] जितने दूर पर जाकर तीर गिर पड़ै।

(५) यह छब्बीस कला का छन्द होता है। इसके प्रत्येक पद के अन्त में लघु अक्षर होता है।

(६) उपमेयोपमा।

अरु अक्रमातिसयोक्ति चंचल अतिसयोक्तिहि लेखि । अत्यंतअतिसैउक्ति पुनि सामान्य चारु बिसेखि ॥ तुलि योगिता दीपक अबृति प्रतिबस्तुपम दृष्टान्त । सुनिदर्सना ब्यतिरेक औार सहोक्ति बरनत शान्त ॥ ३७३ ॥

सुबिनोक्ति भूषन समासोक्तिहु परिकरौ अरु बंस । परिकर सु अंकुर श्लेष त्यों अप्रस्तुतौ परसंस ॥ परयायउक्ति गनाइए ब्याजस्तुतिहु आक्षेप । बहुरो विरोध बिरोधभास बिभावना सुख खेप ॥ ३७४ ॥

सुबिसेष उक्ति असम्भवौ बहुरे असंगति लेखि । पुनि विषम सम सुबिचित्र प्रहषन[1] अरु बिषादन पेखि ॥ कहि अधिक अन्योन्यहु विसेष व्यघात भूषन चारु । अरु गुम्फ एकावली मालादीपकहु पुनि सारु ॥ ३७५ ॥

पुनि यथा संख्य बखानिए परजायअरु परिवृत्ति । परि संख्य कहत बिकल्प हैं जिनके सुमति सम्पत्ति ॥ बहुरयो समाधि समुच्चयो पुनि प्रत्यनीक बखानि । पुनि कहत अर्थापत्ति कबिजन काब्यलिंगहि जानि ॥३७६॥

अरु अर्थ अन्तर न्यास भूषन प्रौढ़ उक्ति गनाय । सम्भावना मिथ्याध्यवसितऽरु यों उलासहि गाय ॥

---

(१) प्रहर्षण ।

अवज्ञा अनुज्ञालेस तदगुन पूर्ब रूप उलेखि । अतदगुन अनुगुन मिलित उन्मीलितहि पुनि अवरेखि ॥ ३७७ ॥

सामान्य और बिशेष पिहितौ प्रश्न उत्तर जानि। पुनि ब्याजउक्तिरु लोकउक्ति सुछेक उक्ति बखानि ॥ बक्रोक्ति जानि सुभाव उक्तिहु भाविकौ निरधारि। भाविक छबिहु सु उदात्त कहि अत्युक्ति बहुरि बिचारि ३७८

बरने निरुक्तिहु हेतु पुनि अनुमान कहि अनुप्रास। भूषन भनत पुनि जमक गनि पुनरुक्ति वद आभास ॥ युत चित्र संकर एकसत भूषन कहे अरु पाँच[1]। लखि चारु ग्रंथन निज मतो[2] युत सुकबि मानहु सांच ॥ ३७८ ॥

---

(१) एक+सत+पांच = १०६ अलंकार। भूषण जी १०६ अलंकार वर्णन करना लिखते हैं, पर ग्रन्थ में १०८ अलंकार पाए जाते हैं। लुप्तोपमा, न्यूनाधिक रूपक और गनगुप्तोत्प्रेक्षा के लक्षण और उदाहरण ग्रन्थ में दिए हैं (छन्द नं० ३६-३८, ६४-६६, और १०६-१०८ देखिए) और ए सब छन्द भूषण कृत अवश्य जान पड़ते हैं पर इनका नाम इस सूची में नहीं है। कदाचित भूषण जी ने इन्हें मुख्य अलंकारों में न माना हो।

(२) दूसरे आचार्य्यों के मत के अतिरिक्त इन्हों ने कुछ बातें अपने ही मत से लिखी हैं। जान पड़ता है इसी कारण कभी २ इनके लक्षण अन्य आचार्य्यों से भिन्न हो जाते हैं (जैसे छन्द नं० ६०, १४६,२५५ व २६७ इत्यादि देखिए)।

दोहा ।

सुभ सत्रह सैतीस पर बुध सुदि[1] तेरसि मान ।
भूषन सिव भूषन कियो पढ़ियो सुनौ सुजान ॥३८०॥

उपसंहार । मनहरण दण्डक ।

एक प्रभुता को धाम, सजे तीनौ बेद काम रहैं पंच आनन षड़ानन सरबदा । सातौ बार आठौ याम जाचक नेवाजै नव अवतार थिर राजै कृपन[2] हरि गदा ॥ सिवराज भूषन अटल रहै तौलौं जौलौं त्रिदस भुवन सब, गंग औ नरमदा । साहि तनै साहसिक भौंसिला सुरज बंस दासरथि राज तौलौं सरजा थिर सदा ॥ ३८१ ॥

दोहा ।

पुहुमि पानि रबि ससि पवन जब लौं रहै अकास ।
सिव सरजा तब लौं जियौ भूषन सुजस प्रकास ॥३८२॥

इति श्री कवि भूषण विरचिते शिवराज भूषणे
अलंकार वरणनं ।

॥ समाप्तम् । सुभमस्तु ॥

(१) सम्वत् १७३० बुध सुदी १३ को ग्रन्थ समाप्त हुवा पर किस मास में सो नहीं लिखा । इसका ब्योरा भूमिका में देखिए ।

(२) कृपाण; तलवार ।

॥ श्री शिवा बावनी[1] ॥

छप्पय[2] ।

कौन करै बस बस्तु कौन यहि लोक बड़ो अति ? । को साहस को सिंधु कौन रज लाज धरे मति ? ॥ को चकवा को सुखद बसै को सकल सुमन महि ? । अष्ट सिद्धि नव निद्धि देत मांगे को सो कहि ? ॥ जगबूझत उत्तर देत इमि कबि भूषन कबि कुल सचिव । दच्छिन नरेस सरजा सुभट साहिनन्द मकरन्द[3] सिव ॥ १ ॥

कबित्त । मनहरण ।

साजि चतुरंग बीर रंग मैं तुरंग चढ़ि सरजा सिवा जी जंग जीतन चलत है । भूषन भनत नाद बिहद नगारन के नदी नद मद गब्बरन[4] के रलत है ॥ ऐल[5] फैल खैल भैल[6] खलक मैं गैल गैल गजन की

(१) जैसा कि भूमिका में लिखा गया है यह कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं बरन भूषणजी के ५२ छन्दों का एक संग्रह मात्र है । इसी हेतु प्रचलित प्रतियों का क्रम छोड़ कर हमने अपना नया क्रम स्थिर किया है, क्योंकि हम उक्त प्रचलित क्रम को बहुत ही अनुपयुक्त समझते हैं ।

(२) यह छन्द "स्फुट कविता" से लेकर उपयुक्त जान हमने यहां रख दिया ।

(३) माल मकरन्द ।

(४) गर्ब्ब धारियों के ।

(५) अहिलौ; बहुत विशेष ।

(६) खलभल ।

ठेल पेल सैल उसलत है । तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लगत, जिमि थारा पर पारा पारावार* यों हलत है ॥ २ ॥

[1]बाने फहराने घहराने घंटा गजन के नाहीं ठहराने राव राने देस देस के । नग भहराने ग्राम नगर पराने सुनि बाजत§ निसाने सिवराज जू नरेस के[2] ॥ हाँथिन के हौदा उकसाने कुम्भ कुंजर के भौन को भजाने अलि छूटे लट केस के । दल के [3]दरारे हुते कमठ करारे फूटे केरा कैसे पात बिहराने फन सेस के ॥ ३ ॥

प्रेतिनी पिसाचऽरु निसाचर निसाचरिहु मिलि मिलि आपुस मैं गावत बधाई है । भैरौं भूत प्रेत भूरि भूधर भयंकर से जुत्थ जुत्थ जोगिनी जमाति जुरि आई है ॥ किलकि किलकि कै कुतूहल करति काली, डिम डिम डमरू दिगम्बर बजाई है । सिवा

---

* समुद्र ।

(१) एक झंडीदार अस्त्र ।

§ निशान का अर्थ झंडा है पर भूषण जीने उसे डंका के आशय में लिखा है ।

(२) सरदार कवि ने इसके द्वितीय पद के अन्तिम भाग को यों लिखा है "सुनि बाजत निसाने भाउ सिंहजू नरेस के" और तीसरे पद का प्रथमार्द्ध यों "ककुभ के कुंजर कसमसाने गंग भनै" परन्तु शब्दों एवं वाक्य रचना से यह भूषण कृत जँचता है, इसके अतिरिक्त गंगजी अकबर शाह के समय में थे पर भाऊसिंह सन् १६५८ ईसवी में बून्दी की गद्दी पर बैठे सो यह कवित्त गंगकृत नहीं हो सकता ।

(३) सेना के दरेरा (दबाव) से ।

पूँछैं सिवसों समाज आजु कहाँ चली, काहू पै सिवा नरेस भृकुटी चढ़ाई है ? ॥ ४ ॥

बद्दल न होहिँ दल दच्छिन घमंड माहिँ घटाजु न होहिँ दल सिवाजी हँकारी के। दामिनी दमक नाहिँ खुले खग्ग बीरन के, बीर सिर छाप लखु तीजा *असवारी के ॥ देखि देखि मुगलों कि हरमैं भवन त्यागैं उझकि उझकि उठैं बहत बयारी के। दिली मति भूली कहै बात घन घोर घोर बाजत नगारे जे सितारे गढ़ धारी के ॥ ५ ॥

बाजि गजराज सिवराज सैन साजतहि दिली दिलगीर दसा दीरघ दुखन की। तनियाँ न तिलक सुथनियाँ पगनियाँ न घामै घुमरात छोड़ि सेजियाँ सुखन की ॥ भूषन भनत पतिबाँह बहियाँ न[1] तेऊ छहियाँ छबीली ताकि रहियाँ[2] रुखन की। बालियाँ बिथुरि जिमि आलियाँ [3]नलिन पर लालियाँ मलिन मुगलानियाँ मुखन की ॥ ६ ॥

कत्ता की कराकनि[4] चकत्ता को कटक काटि कीन्ही सिवराज बीर अकह कहानियाँ। भूषन भनत

---

* सम्भवतः तीज का चन्द्रमा ।

(१) पति की बांहों से नहीं बही अलग नहीं हुईं ।

(२) रूखों (पेड़ों) की ।

(३) अलि ; भौंरे ।

(४) कड़ाके से ; ज़ोर से चलाकर ।

तिहुलोक मैं तिहारी धाक दिल्ली औ बिलाइत सकल बिललानियाँ॥ आगरे अगारन[१] ह्वै फाँदती कगारन छ्वै बाँधती न बारन मुखन कुम्हिलानियाँ। कीबी कहैं कहा[२] औ गरीबी गहे भागी जाहिँ बीबी गहे सूथनी सुनीबी गहे रानियाँ॥ ७॥

ऊँचे घोर मन्दर[३] के अन्दर रहन वारी ऊँचे घोर मन्दर[४] के अन्दर रहाती हैं। कन्द[५] मूल भोग करैं कन्द[६] मूल भोग करैं तीन[७] बेर खातीं सो तौ तीन[८] बेर खाती हैं॥ भूखन[९] सिथिल अंग भूखन[१०] सिथिल अंग बिजन[११] डुलातीं तेब[१२] बिजन[१३] डुलाती[१४]

---

(१) मकानों में

(२) कहती हैं कि क्या करैंगी ?

(३) मन्दिर ; मकान।

(४) पर्ब्बत।

(५) क़न्द मूलक (व्यंजन)।

(६) जड़ैं और ज़मीन के अन्दर होने वाले फल।

(७) तीन मर्तबा।

(८) बेरी के तीन फल।

(९) ज़ेवरों से।

(१०) भूखों से।

(११) पंखा।

(१२) ते अब।

(१३) जंगलों में।

(१४) मारी मारी फिरती हैं।

हैं। भूषन भनत सिवराज बीर तेरे त्रास नगन[1] जड़ातीं ते वै नगन[2] जड़ाती हैं ॥ ८ ॥

छतरि पलँग ते न दियो है धरा पै पग तेऊ सग बग निसि दिन चली जाती हैं। अति अकुलातीं मुरझातीं ना छिपातीं गात बात न सोहाती बोले अति अनखाती हैं। भूषन भनत सिंह साहि के सपूत सेवा तेरी धाक सुने अरि नारी बिललाती हैं। कोऊ करैं घाती कोऊ रोतीं पीटि छाती घरैं तीनि बेर खातीं तेवै बीनि बेर खाती हैं ॥ ९ ॥

अन्दर ते निकसीं न मन्दिर को देख्यो द्वार बिन रथ पथ ते उघारे पावँ जाती हैं। हवाहू न लागती ते हवा ते बिहाल भईं लाखन की भीर मैं सम्हारतीं न छाती हैं ॥ भूषन भनत सिवराज तेरी धाक सुनि हायदारी[3] चीर फारी मन झुझलाती हैं। ऐसी परीं नरम हरम बादसाहन की नासपाती खातीं ते बनासपाती[4] खाती हैं ॥ १० ॥

अतर गुलाब रस चोवा[5] घनसार सब सहज सुबास की सुरति बिसराती हैं। पल भरि पलँग ते

(१) ज़ेवरों में नगीने जड़वाती थीं।
(२) नंगे जाड़ा खा रहीं हैं।
(३) हया (शर्म) रखने वाली।
(४) बनस्पति।
(५) चन्दन का मावा।

भूमि न धरति पावँ भूली खान पाम फिरैं बन बिल-लाती हैं ॥ भूषन भनत सिवराज तेरी धाक सुनि दारा हार बार न सम्हार अकुलाती हैं। ऐसी परीं नरम हरम बादसाहन की नासपाती खातीं ते बनास-पाती खाती हैं ॥ ११ ॥

सोंधे[1] को अधार किसमिस जिनको अहार चारि को सो अंक लंक चन्द सरमाती हैं। ऐसी अरि नारी सिवराज बीर तेरे त्रास पायन मैं छाले परे कन्द मूल खाती हैं ॥ ग्रीषम तपनि एती तपती न सुनि कान कंज कैसी कली बिनु पानी मुरझाती हैं। तोरि तोरि आछे[2] से पिछौरा सों निचोरि, मुख कहैं "अब कहां पानी मुकतौ मैं पाती हैं?" ॥१२॥

साहि सिरताज औ सिपाहिन मैं पातसाह अचल सुसिंधु कैसे जिनके सुभाव हैं। भूषन भनत परी शस्त्र रन सेवा धाक काँपत रहत न गहत चित्त चाव हैं ॥ अथह बिमल जल कालिँदी के तट केते परे युद्ध बिपति के मारे उमराव हैं। नाव भरि बेगम उतारैं बाँदी डोंगा भरि साहि मिसि मक्का उतरत दरियाव हैं ॥ १३ ॥

---

(१) सुगन्ध।
(२) अच्छे से अर्थात् बढ़िया (मोती)।

किबले[1] के ठौर बाप बादसाह साहिजहाँ ताको कैद कियो मानो मक्के आगि लाई है। बड़ो भाई दारा वाको पकरि कै कैद कियो मेहरहु[2] नाहिँ वाको जायो सगो भाई है। बंधु तौ मुराद बक्स बादि चूक[3] करिबे को बीच लै कुरान खुदा की कसम खाई है। भूषन सुकबि कहै सुनो नवरंगजेब एते काम कीन्हें फेरि पादसाही पाई है ॥१४॥

हाथ तसबीन[4] लिए प्रात उठि बन्दगी को आपही कपट रूप कपट सु जप के। आगरे मैं जाय दारा चौक मैं चुनाय लीन्हों छत्रही छिनायो मनो बूढ़े मरे बप के॥ कीन्हों है सगोत घात सो मैं नाहिँ कहौं फेरि पील पैं तोरयो[5] चारि चुगुल के गपके[6]। भूषन भनत छरछन्दी मति मन्द महा सौ सौ चूहे खाय कै बिलारी बैठी तप के ॥ १५ ॥

कैयक हजार जहाँ गुर्ज बरदार ठाढ़े करि कै हुस्यार नीति पकरि समाज की। राजा जसवन्त को बुलाय कै निकट राखे तेऊ लखैं नीरे जिन्हैं लाज

(१) ऊँचा। पूज्य।
(२) मेहरबानी।
(३) दगाबाजी।
(४) जपने की मुसल्मानी माला।
(५) हाथी से मरवा डाला।
(६) गप्प मारने से, झूठ बोलने से।

स्वामि काज की ॥ भूषन तबहु ठठकतही गुसुल खाने सिंह लौं झपट गुनि साहि महराज की । हटकि हथ्यार फड़ बाँधि उमरावन की कीन्ही तब नौरँग ने भेंट सिवराज की ॥ १६ ॥

सबन के ऊपर ही ठाड़ो रहिबे के जोग ताहि खरो कियो जाय जारन के नियरे । जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धरि उर कीन्हो ना सलाम न बचन बोले सियरे ॥ भूषन भनत महाबीर बलकन लाग्यो सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे । तमक ते लाल[1] मुख सिवा को निरखि भये स्याह मुख नौरँग सिपाह मुख पियरे ॥ १७ ॥

राना भो चमेली और बेला सब राजा भए ठौर ठौर रस लेत नित यह काज है । सिगरे अमीर आनि कुन्द होत घर घर भ्रमत भ्रमर जैसे फूलन की साज है ॥ भूषन भनत सिवराज बीर तैंही देस देसन मैं राखी सब दच्छिन की लाज है । त्यागे सदा षटपद-पद अनुमानि यह अलि नवरंगजेब चम्पा सिवराज है ॥ १८ ॥

---

(१) इस छन्द में रौद्र एव भयानक रस हैं ।

कूरम[१] कमल कमधुज[२] है कदमफूल गौर है गुलाब राना[३] केतकी बिराज है । पाँडरि पँवार जुही सोहत है चन्द्रावल सरस बुँदेला सो चमेली साज बाज है । भूषन भनत मुचकुन्द बड़ गूजर हैं बघेले बसन्त सब कुसुम समाज है । लेइ रस एतेन के। बैठि न सकत अहै अलि नवरंगजेब चम्पा सिवराज है[४]॥१८॥

देवल गिरावते फिरावते निसान अली ऐसे डूबे राव राने सबी गए लबकी[५] । गौरा गनपति आप औरन को देत ताप आप के मकान सब मारि गये दबकी॥ पीरा पयगम्बरा दिगम्बरा दिखाई देतसिद्ध की सिधाई गई रही बात रब[६]की । कासिहु ते कला जाती मथुरा मसीद होती सिवाजी न होत तौ सुनति[७] होत सब की ॥ २० ॥

साँच को न मानै देवी देवता न जानै अरु ऐसी उर आनै मैं कहत बात जब की । और पातसाहन

(१) महाराज जयपुर कछवाह होने के कारण कूर्मवंशी कहलाते हैं

(२) महाराज जोधपुर । कबन्धज । युद्ध में इनके पूर्व पुरुष जयचन्द महाराजा कन्नौज का कबन्ध उठा था । इसी से उनके बंशी कबन्धज कहलाते हैं ।

(३) महाराना उदयपुर ।

(४) इस छन्द में सम अभेद रूपक है ।

(५) लबलबा गये, निर्बल हो गये ।

(६) ख़ोदा (यहां पर) मुसल्मानी देवता ।

(७) ख़तना, मुसल्मानी ।

के हुती चाह हिन्दुन की अकबर साहजहाँ कहैं साखि तब की ॥ बब्बर के तिब्बर[1] हुमायूँ हद्द बाँधि गये दो मैं एक करी ना कुरान बेद ढब[2] की । कासिहु कि कला जाती मथुरा मसीद होती सिवाजी न होतो तौ सुनति होत सब की ॥ २१ ॥

कुम्भकर्न असुर औनारी अवरंगजेब कीन्ही कत्ल मथुरा[3] दोहाई फेरी रब की ।[4] खोदि डारे देवी देव सहर मुहल्ला बाँके लाखन तुरुक कीन्हे छूटि गई तब की ॥ भूषन भनत भाग्यो कासीपति बिस्वनाथ और कौन गिनती मैं भूली गति भब की[4] । चारौं वर्ण धर्म छोड़ि कलमा[5] नेवाज पढ़ि सिवा जी न होत तौ सुनति होत सब की ॥ २२ ॥

---

(१) तीन बार ।

(२) कुरान और बेद की जो दो ढबैं हैं उनको एक में न किया, अर्थात बेद की रीतियों के उठाने का प्रयत्न न किया ।

(३) सन १६६८ ई० में औरंगजेब ने देहरा केशवराय को मथुरा में तोड़ा—इसे महाराज बीरसिंहदेव बुँदेला ने ३३ लक्ष मुद्रा लगा कर बनवाया था ।

(४) औरंगजेब ने विश्वनाथ जी का मन्दिर सन १६६८ ई० में तोड़ा था—उसी समय कहा जाता है कि श्रीविश्वनाथ जी की मूर्ति मन्दिर से भाग ज्ञानवापी नाम कूपमें (जो मन्दिरके पिछवाड़े है) जाकर कूद पड़ी ।

(५) कलमा यह है:-- "ला इलाहे इल्लिल्लः मोहम्मद रसूलिल्लः" अर्थात् सिवाय परमेश्वर के कोई सवल नहीं है, मोहम्मद परमेश्वर का बसीठी है--मुसल्मानों के अनुसार जो कोई ये दोनो बातें मानता हो वही मुसल्मान है—

दावा पातसाहन सों कीन्हो सिवराज बीर जेर कीन्हो देस हद्द बाँध्यो दरबारे[1] से। हठी मरहठी तामैं राख्यो ना मवास[2] कोऊ छीने हथियार डोलैं बन बनजारे से॥ आमिष अहारी मांसहारी दै दै तारी नाचैं खाँडे तोड़ किरचैं उड़ाये सब तारे से। पील सम डील जहाँ गिरि से गिरन लागे मुंड मतवारे गिरैं झुंड मतवारे[3] से॥ २३॥

छूटत कमान[4] और तीर गोली बानन के मुस-किल होत मुरचानहू कि ओट मैं। ताही समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो दावा बाँधि पर हला बीर भट जोट मैं॥ भूषन भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं किम्मति इहाँ लगि है जाकी भट झोट[5] मैं। ताव दै दै मूछन कँगूरन पै पाँव दै दै अरि मुख घाव दै दै कूदे परैं कोट[6] मैं २४॥

उतै पातसाह जू के गजन के ठट्ट छूटे उमड़ि घुमड़ि मतवारे घन भारे हैं। इतै सिवराज जू के

---

(१) दर बारे से, दरबार ही से, खास दरबार से—
(२) क़िला-मोर्चा-
(३) पूर्णोपमा अलंकार॥
(४) तोप
(५) झुरमुट, समूह-
(६) इस छन्द में पूर्ण वीर रस एवं पदार्थवृत्त अलंकार हैं--

छूटे सिंह राज औ बिदारे कुम्भ करिन के चिक्करत कारे हैं॥ फौजैं सेख सैयद मुगल औ पठानन की मिलि इखलास[1] काहू मीर न सम्हारे हैं। हद्द हिंदुवान की बिहद्द तरवारि राखि कैयो बार दिली के गुमान झारि डारे हैं॥ २५॥

जीत्यो सिवराज सलहेरि को समर सुनि सुनि असुरन[2] के सुसीने धरकत हैं। देवलोक नागलोक नरलोक गावैं जस अजहूं लौं परे खग्ग दाँत खरकत हैं॥ कटक कटक काटि कीट से उड़ाय केते भूखन भनत मुख मोरे सरकत हैं। रन भूमि लेटे अधकटे फरलेटे परे रुधिर लपेटे पठनेटे फरकत हैं॥ २६॥

मालती सवैया।

केतिक देस दल्यो दल के बल दच्छिन चंगुल चापि कै चाख्यो। रूप गुमान हर्यो गुजराति को सूरति* को रस चूसि कै नाख्यो॥ पंजन पेलि मलिच्छ मल्यो सब सोई बच्यो जेहि दीन ह्वै भाख्यो। सोरँग है सिवराज बली जेहिँ नौरँग मैं रँग[3] एक न राख्यो॥ २७॥

---

(१) सलहेरि के युद्ध में मुग़लों का सेनापति इख़लास ख़ाँ था।

(२) मुसल्मान-टाड देखिये।

(३) काव्यलिंग अलंकार।

* सन् १६६४ और १६७० ई० में शिवाजी ने सूरत लूटी थी।

सूबा निरानँद बादर खान गे लोगन बूझत ब्योंत बखानो । दुग्ग सबै सिवराज लिये धरि चारु बिचारु हिये यह आनो ॥ भूषन बोलि उठे सिगरे हुतो पूना मैं साइत खान को थानो । जाहिर है जग मैं जसवन्त लियो गढ़ सिंह मैं गीदर[1] बानो ॥ २८ ॥

कवित्त मनहरन ।

जोर करि जैहैं जुमिलाहू* के नरेस पर तोरि अरि खंड खंड सुभट समाज पै । भूषन असाम रूम बलख बुखारे जैहैं चीन सिलहट× तरि जलधि जहाज पै ॥ सब उमरावन की हठ कूरताई देखौ कहैं नवरंग जेब साहि सिरताज पै । भीख माँगि खैहैं बिनु मनसब रैहैं पै न जैहैं हजरत महाबली सिवराज पै ॥२९॥

चन्द्रावल चूर करि जावली[2] जपत कीन्हो मारे सब भूप औ सँहारे पुर धाय कै । भूषन भनत तुर-

---

(१) जसवन्त सिंह ने सिंह गढ़ को घेरा परन्तु फिर कुछ किये बिना मोहासिरा उठा लिया । यह छन्द स्फुट कविता से यहां रक्खा गया है ।

(२) शि० भू० छन्द नम्बर २०६ नोट देखो । चन्द्रावल, चन्द्रराव, चन्द्रराव मोरे ।

* शि० भू० छन्द नं० ११२ देखिये ।

× आसाम में है । यहां की नारंगी मशहूर है ।

कान दलथम्भ* काटि अफजल मारि डारे तबल[1] बजाय कै॥ एदिल सों बेदिल हरम कहैं बार बार अब कहा सोवो सुख सिंहहि जगाय कै। भेजना है भेजौ सो रिसालैं[2] सिवराज जू की बाजीं करनालैं परनालैं पर आय कै॥ ३०॥

मालती सवैया।

साजि[3] चमूजनि जाहु सिवा पर सोवत जाय न सिंह जगावो। तासों न जंग जुरौ न भुजंग महा विष के मुख मैं कर नावो॥ भूषन भाषत बैरि बधू जनि एदिल औरँग लौं दुख पावो। तासु सलाह कि राह तजौ मति, नाह दिवाल कि राह न धावो॥ ३१॥

छप्पय।

बिज्जपूर[4] बिदनूर[5] सूर सर धनुष न संधहिँ।
मंगल बिनु मल्लारि[6] नारि धम्मिल[7] नहिँ बंधहिँ॥

---

(१) डंका।

(२) ख़िराज।

(३) यह छन्द स्फुट कविता से आया है।

(४) किसी बिज्ज पूर का पता नहीं लगता शायद यह बिजै पूर (बीजापूर) हो।

(५) बिदनूर बीजापुर की रियासत में एक नगर था जिसपर एक राजा शासन करता था। सन् १६७३ ई० में वह डर कर शिवाजी के अधीन हो गया।

(६) मलावार बासी।

(७) फूल मोती आदि से गुथे हुये बाल।

* दल थम्भ का कोई पता नहीं लगता। स्यात यह रणथम्भ हो जहाँ का राजा हम्मीर देव विदित हो गया है। अथवा दल (फौज) का थाँभने वाला (आधार)

गिरत गब्भ[1] कोटै गरब्भ[2] चिंजीचिंजा[3] डर । चालकुंड[4] दलकुंड[5] गोलकुंडा संका उर ॥ भूषन प्रताप सिवराज तव इमि दच्छिन दिसि संचरहि । मधुरा[6] धरेस धक धकत सो द्रविड़ निविड़ डर दबि डरहि ॥ ३२ ॥

कबित्त मनहरन ।

अफजल खान को जिन्हों ने मयदान मारा बीजापुर गोलकुंडा मारा जिन आज है । भूषन भनत फरासीस त्यों फिरंगी मारि हबसी तुरक डारे उलटि जहाज है ॥ देखत मैं रुसतम[7] खाँ को जिन खाक किया साल की सुरति आजु सुनी जो अवाज है । चौंकि[8] चौंकि चकता कहत चहुँ घाते यारो लेत रहौ खबरि कहाँ लौं सिवराज है ॥ ३३ ॥

---

(१) गर्भ ।

(२) किले के भीतर ही, कोट गर्भ में ही ।

(३) लड़की लड़का ।

(४) चाल एक बन्दरगाह है । इसके पास सन १५३१ ई० के लगभग ईसाइयों ने एक किला बनवाया था ।

(५) दल कश्मीर में एक बड़ी झील है ।

(६) अब इसे मदुरा कहते हैं और यह मंदरास में एक ज़िला है ।

(७) रुस्तमे ज़माँ । देखिये शि० भू० छन्द न० २३८ नोट ।

(८) पूर्ण भयानक रस ।

फिरगाने[१] फिकिरि औ हद्द सुनि हबसाने भूखन भनत कोऊ सोवत न घरी है। बीजापुर बिपति बिडरि सुनि भाज्यो सब दिली दरगाह बीच परी खरभरी है॥ राजन के राज सब साहिन के सिरताज आज सिवराज पातसाही चित धरी है। बलख बुखारे कसमीर लौं परी पुकार धाम धाम धूम धाम रूम साम परी है[२] ॥ ३४ ॥

[३]गरुड़ को दावा सदा नाग के समूह पर दावा नाग जूह पर सिंह सिरताज को। दावा पुरहूत[४] को पहारन के कूल पर पच्छिन के गोल पर दावा सदा बाज को॥ भूषन अखंड नवखंड महिमंडल मैं तम पर दावा रबि किरन समाज को। पूरब पछाँह देस दच्छिन ते उत्तर लौं जहाँ पादसाही तहाँ दावा सिवराज को॥ ३५ ॥

दारा की न दौर यह रारि नहीं खजुवे[५] की बाँधिबो नहीं है कैधौं मीर सहबाल[६] को। मठ

---

(१) बाबर के पिता का राज्य।

(२) भयानक रस।

(३) निदर्शना अलंकार।

(४) इन्द्र।

(५) खजुये में शाह शुजा औरंगज़ेब से हारा था।

(६) इसका इतिहास में नाम नहीं मिलता-कोई छोटा सर्दार होगा-लाल कवि ने इसका वर्णन किया है-इसका ठीक नाम शहबाज़ खाँ था।

विश्वनाथ को न बास ग्राम गोकुल को देवी को न देहरा न मन्दिर गोपाल को ॥ गाढ़े गढ़ लीन्हे अरु बैरी कतलान् कीन्हें ठौर ठौर हासिल[1] उगाहत है माल को । बूड़त है दिली सो सम्हारै क्यों न दिली-पति धक्का आनि लाग्यो सिवराज महाकाल को ॥३६॥

गढ़न[2] गँजाय गढ़ धरन सजाय करि छाँड़ि केते धरम दुवार दै भिखारी से । साहि के सपूत पून बीर सिवराज सिंह केते गढ़ धारी किये बन् बनचारी से ॥ भूषन बखानै केते दीन्हे बन्दी खाने सेख सैयद हजारी[3] गहे रैयति बजारी से । महता[4] से मुगल महाजन[5] से महाराज डाँड़ि लीन्हे पकरि पठान पटवारी से[6] ॥ ३७ ॥

सक्र जिमि सैल पर अर्क[7] तम फैल पर बिघन की रैल पर लम्बोदर[8] लेखिये । राम दसकन्ध

---

(१) चौथि सरदेश मुखी आदि ।
(२) किलों को गँजवा कर ।
(३) एक हज़ार सिपाहियों का अफ़सर ।
(४) महतों ।
(५) कलवार ।
(६) पूर्णोपमा ।
(७) सूर्य ।
(८) गणेशजी ।

पर भीम जरासन्ध पर भूषन ज्यों सिन्धु पर कुम्भज[1] बिसेखिये ॥ हर ज्यों अनंग पर गरुड़ भुजंग पर कौरव के अंग पर पारथ ज्यों पेखिये । बाज ज्यों बिहंग पर सिंह ज्यों मतंग पर म्लेच्छ चतुरंग पर सिवराज देखिये[2] ॥ ३८ ॥

बारिध के कुम्भभव[1] घन बन दावानल तरुन तिमिर हू के किरन समाज हौ। कंस के कन्हैया कामधेनु हू के कंटकाल[3] कैटभ के कालिका बिहंगम के बाज हौ ॥ भूषन भनत जग जालिम के सचीपति पन्नग के कुल के प्रबल पच्छिराज हौ । रावन के राम कार्तवीज के परसुराम दिल्लीपति दिग्गज के सेर सिव राज हौ[4] ॥ ३९ ॥

दर बर दौरि करि नगर उजारि डारि कटक कटायो कोटि दुजन दरब[5] की। जाहिर जहान जंग जालिम है जोरावर चलै न कछूक अब एक राजा

---

(१) अगस्त्य मुनि जिन्होंने समुद्र पी लिया था-वे घड़े से पैदा हुये थे ।

(२) मालोपमा ।

(३) कांटों का घर ।

(४) सम अभेद रूपक ।

(५) दुर्जन की द्रव्य से इकट्ठा की हुई सेना कटवा डाली ।

रब* की ॥ सिवराज तेरे त्रास दिली भयो भुवकम्प थर थर काँपत बिलायति अरब[१] की । हालत दहलि जात काबुल कँधार बीर रोष करि काढ़ै समसेर ज्यों गरब[२] की[३] ॥ ४० ॥

सिवा की बड़ाई औ हमारी लघुताई क्यों कहत बार बार कहि पातसाह गरजा । सुनिये, खुमान्[४] हरि तुरुक गुमान महि देवन जेंवायो, कबि भूषन यों अरजा ॥ तुम वाको पाय कै जरूर रन छोरो वह रावरे वजीर छोरि देत करि परजा । मालुम तिहारो होत याहि मैं निवारो रन कायर सों कायर औ सरजा सों सरजा ॥ ४१ ॥

---

* राव ।

(१) अरब की विलायत थर थर काँपती है ।

(२) अहंकार की अथवा पश्चिम की तलवार ।

(३) यह छन्द स्फुट कविता से आया है ।

(४) शिवाजी ।

कोट गढ़ ढाहियतु एकै पातसाहन के एकै पातसाहन के देस दाहियतु है। भूषन भनत महाराज सिवराज एकै साहन की फौज पर खग्ग बाहियतु है॥ [1]क्यों न होहिं बैरिन की बौरी सुनि बैर बधू दौरनि तिहारे कहौ क्यों निबाहियतु है। [2] रावरे नगारे सुने बैर वारे नगरनि नैन वारे नदन निवारे चाहियतु है॥ ४२॥

चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठै बार बार दिली दहसति चित चाहै खरकति है। बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर पति फिरत फिरंगिन की नारी फरकति है। थर थर काँपत कुतुब साहि गोलकुंडा हहरि हबस भूप भीर भरकति है। [1]राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि केते पातसाहन की छाती दरकति है॥४३॥

मोरँग[3] कुमाउँ औ पलाऊ[4] बाँधे एक पल कहाँ लौं गनाऊं जेब भूपन के गोत हैं। भूषन भनत गिरि बिकट निवासी लोग बावनी बवंजा[5] नव कोटि धुन्धु जोत[6] हैं। काबुल कँधार खुरासान जेर कीन्हो जिन मुगल

---

(१) भयानक रस।

(२) चंचलातिशयोक्ति।

(३) शि० भू० छन्द नं० २४८ नोट देखिये।

(४) 'भागना' हो सकता है; 'पला' भी। पला नामक एक ग्राम यमुना जी के किनारे था।

(५) बजूना नामक एक स्थान फतेहपूर सिकरी के पास था।

(६) धुँधली जोति के अर्थात तेजहत।

पठान सेख सैयदहु रोत हैं। अब लगि[1] जानत हे बड़े होत पातसाह सिवराज प्रगटे ते राजा बड़े होत[2] हैं॥४४॥

दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी डग्ग नाचे डग्ग पर रुंड मुंड फरके। भूषन भनत बाजे जीति के नगारे भारे सारे करनाटी[3] भूप सिंहल को सरके॥ मारे सुनि सुभट पनारे[4] वारे उदभट तारे लगे फिरन सितारे गढ़ धर के। बीजापुर[1] बीरन के, गोलकुंडा धीरन के, दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दरके[5]॥ ४५॥

मालवा उजैन भनि भूषन भेलास[6] ऐन सहर सिरोज[7] लौं परावने परत हैं। गोंडवानो[8] तिल

(१) काव्यलिंग अलंकार।

(२) यह छन्द स्फुट कविता से यहां आया है।

(३) करनाटक पर शिवाजी ने सन १६७६-७८ में आक्रमण किया था।

(४) इस छन्द में पनारे गढ़ का वर्णन अशुद्ध सा जँचता है क्योंकि परनाले में सन् १६६१ ई० एवं सन् १६७३ ई० में लड़ाई हुई थी और करनाटक की चढ़ाई सन् १६७८ ई० में हुई थी। सम्भव है कि पनाले क़िले के फौजी कहीं बाहर लड़े हों और वहां मारे गये हों।

(५) पूर्णोपमा।

(६) भेलसा-इसमें बहुत से प्राचीन बौद्ध स्तूप हैं-यह ग्वालियर राज्य में है।

(७) शीराज़ हो सकता है-सिरोज नामक एक शहर बुन्देलखण्ड के समीप भी था।

(८) वर्त्तमान समय का प्रायः समस्त मध्य प्रदेश उस समय गोंडवाना कहलाता था क्योंकि वहां गोंड़ विशेषतया रहते थे।

गानो फिरगानो[1] करनाट[2] रुहिलानो रुहिलन[3] हिये हहरत हैं ॥ साहि के सपूत सिवराज तेरी धाक सुनि गढ़पति बीर तेऊ धीर न धरत हैं। बीजापुर गोलकुंडा आगरा दिली के कोट बाजे बाजे रोज दरवाजे उघरत हैं ॥ ४६ ॥

मारि करि पातसाही खाकसाही कीन्हीं जिन जेर कीन्हों जोर सों लै हद्द सब मारे की। खिसि गई सेखी फिसि गई सूरताई सब हिसि गई हिम्मति हजारों लोग सारे की ॥ बाजत दमामे लाखौं धौंसा आगे घहरात गरजत मेघ ज्यों बरात चढ़े भारे की। [4] दूलहो सिवाजी भयो दच्छिनी दमामे वारे दिली दुलहिनि भई सहर सितारे की ॥ ४७ ॥

डाढ़ी के रखैयन की डाढ़ी[5] सी रहति छाती बाढ़ी मरजाद जस हद्द हिन्दुवाने की। कढ़ि गई रैयति के मन की कसक सब मिट गई ठसक तमाम तुरकाने की ॥ भूषन भनत दिलीपति दिल धकधका सुनि सुनि धाक सिवराज[6] मरदाने की।

---

(१) बाबर के पिता का राज्य।

(२) करनाटक।

(३) भूमिका देखिए।

(४) सम अभेद रूपक।

(५) जली हुई। जंगलमें पत्तियां जलाई जाती हैं उसे "दाढ़ा" [कहते हैं।

(६) इस छन्द में कहीं कहीं शिवराज के स्थान पर छत्र शाल का नाम लिखा है परन्तु शुद्ध शिवराज ही का नाम समझ पड़ता है।

मोटी भई चंडी बिनु चोटी के चबाय सीस खोंटी भई सम्पति चकत्ता के घराने की ॥ ४८ ॥

जिन फन फुतकार उड़त पहार भार कूरम कठिन जनु कमल बिदलि गो । विष जाल ज्वाला मुखी लवलीन होत जिन झारन चिकारि मद दिग्गज उगलि गो ॥ कीन्हों जेहि पान पय पान सो जहान कुल कोल हू उछलि जल सिन्धु खलभलि गो । [1] खग्ग खगराज महाराज सिवराज जूको अखिल भुजंग मुगल द्दल निगलि गो ॥ ४९ ॥

[2] सुमन मैं मकरन्द रहत है साहि नन्द मकरन्द सुमन रहत ज्ञान बोध है । मानस मैं हंस बंस रहत हैं तेरे जस हंस मैं रहत करि मानस विसोध है ॥ भूषन भनत भौंसिला भुवाल भूमि तेरी करतूति रही अदभुत रस अेाध है । पानि मैं जहाज रहे लाज के जहाज महाराज सिवराज तेरे पानिप पयोध है ५०॥

बेद राखे विदित पुरान राखे सार युत रामनाम राख्यो अति रसना सुघर मैं । हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की काँधे मैं जनेऊ राख्यो माला राखी गर मैं ॥ मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर

(१) सम अभेद रूपक ।

(२) यह छन्द स्फुट कविता से आया है ।

मैं। राजन की हद्द राखी तेग बल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म्म राख्यो घर मैं ॥ ५१ ॥

सपत नगेस चारौं ककुभ[1] गजेस कोल कच्छप दिनेस धरैं धरनि अखंड को । पापी घालै धरम सुपथ चालै मारतंड करतार प्रन पालै प्रानिन के चंड को ॥ भूषन भनत सदा सरजा सिवाजी गाजी म्लेच्छन को मारै करि कीरति घमंड को । जग काज वारे निहिचिन्त करि डारे सब भोर देत आसिष तिहारे भुजदंड को ॥ ५२ ॥

(१) पृथ्वी के हाथी अर्थात दिग्गज ।

श्री छत्रशाल दशक ।

दोहा ।

इक हाड़ा[1] बूँदी धनी मरद महेवा[2] वाल ।
सालत नौरँगजेब को ये दोनो छतसाल ॥
वै देखौ छत्ता पता यै देखो छतसाल ।
वै दिल्ली की ढाल[3] यैं दिल्ली ढाहन वाल ॥

कवित्त मनहरन ।

छत्रशाल हाड़ा बूंदी नरेश विषयक ।

चले चन्दबान[4] घनबान औा कुहूकबान[5] चलत कमान[6] धूम आसमान छ्वै रहो । चली जम डाढ़ैं बाढ़ वारैं तरवारैं जहां लोह आँच जेठ के तरनि मान वै रहो । ऐसे समै फौजैं विचलाईं छत्रसालसिंह अरि केचलाये पायँ बीर रस च्वै रहो॥ हय चले हाथी चले

(१) एक छत्रसाल हाड़ा बूंदी नरेश थे-ये महाराज गोपीनाथ के पुत्र और राव रतन सिंह के पौत्र थे-ये स्वयं बावन लड़ाइयों में शरीक रहे थे। सन् १६५८ ई० में धौलपूर में दारा और औरंगजेब की जो लड़ाई राज्यार्थ हुई थी उसमें ये महाराज दारा के दल के हरौल में थे। उसी लड़ाई में बड़ी बहादुरी दिखा कर ये मारे गये। उसीका वरणन भूषण ने इस दशक के प्रथम दो छन्दों में किया है।

(२) दूसरे छत्रसाल राय चम्पति बुँदेला के पुत्र थे। इन्हीं की अनिवार्य्य प्रयत्नों से इनका राज्य बुंदेलखंड भर में फैल गया था।

(३) क्योंकि वे दिल्ली की ओर हो दारा की तरफ से लड़े थे।

(४) अर्द्ध चन्द्रवाण ।

(५) अंधेरे में चलने वाले बाण ।

(६) तोप ।

संग छोंड़ि साथी चले ऐसी चला चली मैं अचल हाड़ा ह्वै रहो[1] ॥ १ ॥

दारा साहि नौरँग जुरे हैं दोऊ दिली दल एकै गये भाजि एकै गये रुँधि चाल मैं[2]। बाजी कर कोऊ दगाबाजी करि राखी जेहिँ कैसेहू प्रकार प्रान बचत न काल[3] मैं॥ हाथी ते उतरि हाड़ा जूझो लोह लंगर[4] दै एती लाज कामें जेती लाज छत्रसाल मैं। तन तरवारिन मैं मन परमेसुर मैं प्रान स्वामि कारज मैं माथो हरमाल मैं ॥ २ ॥

छत्रशाल बुंदेला महोबा नरेश विषयक।

निकसत म्यान ते मयूखैं[5] प्रलय भानु कैसी फारैं तम तोम से गयन्दन के जाल को। लागत लपटि कंठ वैरिन के नागिनि सी रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन

(१) पूर्णोपमा, पदार्थावृत्त दीपक, परिसंख्या औ भूषणानुसार पर्य्याय अलंकार।

(२) कोई भाग गये और कोई सेना के संचालन में फँस गये, अर्थात् इस प्रकार से सेना चलाई गई कि उनकी सेना ऐसे स्थान पर जा पड़ी कि जहाँ से वह शत्रु से भली भाँति लड़ नहीं सक्ती थी।

(३) कोई ऐसे थे कि जिस समय किसी प्रकार प्राण नहीं बचते थे तो उन्होंने दगाबाजी करके अपने हाथ बाज़ी रक्खी, (अर्थात् प्रान बचाये)।

(४) जब हाथी लड़ाई से भागने लगतें हैं तब उनके पैरों में संगड़ (मोटी जंजीर) डाल देते हैं कि वे भाग न सकैं।

(५) किरनैं।

के माल के। ॥ लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली कहां लौं बखान करौं तेरी करबाल के। प्रति, भट कटक कटीले केते काटि काटि कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल के। ॥ ३ ॥

भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खातीं दीह दारुन दलन के । बखतर पाखरिन बीच धसि जाति मीन पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के ॥ रैया राय चम्पति[2] के। छत्रसाल महाराज भूषन सकत के। बखानि यें। बलन के।

---

(१) पूर्णोपमा अलंकार ।

(२) चम्पतिराय छत्रसाल बुँदेला के पूज्य पिता थे। ये महाराज बुँदेलों में बड़े ही प्रतापी हो गये हैं। पहिले महाराज चम्पति शाहजहां से मित्रता रखते थे और उनकी ओर से दारा के साथ काबुल में भी लड़ने गये थे-वहां इन महाराज ने इतनी वीरता दिखाई और अफ़गानों को इतना शीघ्र परास्त कर दिया कि दारा को इनकी वीरता से द्वेष उत्पन्न हुवा-इसी द्वेष के कारण इन से और दारा से शत्रुता हो गई तब ए महाराज औरंगजेब की ओर हो गये और इन्होंने धौलपुर के युद्ध में हरौल दल के नेता होकर दारा को परास्त करके औरंजेब को राज्य दिलाने में पूरा योग दिया (यथा "चम्पति राय जगत जस छायो-है हरौल दारा बिचलायो।" लाल कृत छत्र प्रकाश)।

पच्छी पर छीने[1] ऐसे परे परछीने[2] बीर तेरी बरछी ने बर[3]छीने हैं खलन के ॥ ४ ॥

रैया राय चम्पति को चढ़ो छत्रसालसिंह भूषन भनत समसेर जोम जमकैं। [4] भादौं की घटा सी उठीं गरदैं गगन घेरैं सेलैं समसेरैं फेरैं दामिनी सी दमकैं॥ खान उमरावन के आन राजा रावन के सुनि सुनि उर लागैं घन कैसी घमकैं। बैहर[5] बगारन की अरि के अगारन की नाँघती पगारन[6] नगारन की धमकैं ॥ ५ ॥

अत्र गहि छत्रसाल खिझ्यो खेत बेतवै के उत ते पठाननहू कीन्हीं झुकि झपटैं। [7]हिम्मति बड़ी के गबड़ी [8] के खिलवारन लौं देत सै हजारन हजार

(१) पंखकटे।

(२) पर अर्थात् शत्रु खंडित हो गए।

(३) बल।

(४) पूर्णोपमा अलंकार।

(५) वायु।

(६) घेरा।

(७) पूर्णोपमा अलंकार।

(८) गबड़ी (कबड्डी) एक प्रकार का खेल होता है-इसमें खेलाड़ी दो भागों में विभक्त हो जाते हैं। एक समूह का एक खेलाड़ी कबड्डो कबड्डी कहता दूसरे गोल में जाता है और यह प्रयत्न करता है कि उसकी एकही साँस न टूटने पावे और वह उस गोल के किसी खेलाड़ी को छूकर लौट आवै। अगर उसने ऐसा कर

२०

बार चपटैं ॥ भूषन भनत काली हुलसी असीसन को सीसन को ईस[१] की जमाति जोर जपटैं[२] । समद लौं समद[३] की सेना त्यों बुंदेलन की सेलैं समसेरैं भईं बाड़व की लपटैं ॥ ६ ॥

हैबर हरट्ट[४] साजि गैबर[५] गरट्ट[६] सम[७] पैदर के ठट्ट फौज जुरी तुरकाने की । भूषन भनत राय चम्पति को छत्रसाल रोप्यो रन ख्याल ह्वै कै ढाल हिन्दुवाने की ॥ कैयक हजार एक बार बैरी मारि डारे रञ्जक दगनि मानों अगिनि रिसाने की ।

लिया तो उस गोल के जिस खेलाड़ी को उसने छुवा उसे मानो उस ने मार डाला नहीं तो स्वयं मर गया। दूसरे गोल वाले चाहते हैं कि उसे पकड़ कर मार डालें और उसकी सांस बलात् तोड़वा दें और एक सांस बिना तोड़े उसे लौटने न दें । उसके पीछे दूसरे गोलों का एक खिलाड़ी वैसा ही करता है । इसी प्रकार जब किसी गोल के सब खेलाड़ी मर जाते हैं तो वह गोल हार जाता है ।

(१) महादेव जी ।

(२) चपेट करते हैं ।

(३) अब्दुससमद दिल्ली का एक सरदार था । बेतवै नदी के किनारे सन १६८० ई० के करीब यह छत्रसाल से भारी युद्ध में हारा था ।

(४) हृष्ट पुष्ट ।

(५) गजबर; अच्छे हाथी ।

(६) समूह ।

(७) उसी भांति के ।

सैद अफगन[1] सेन सगर सुतन लागी कपिल सराप लौं तराप तोपखाने की ॥ ७ ॥

चाक[2] चक चमू के अचाक[3] चक चहूँ ओर चाकसी फिरत धाक चम्पति के लाल की। भूषन भनत पातसाही मारि जेर कीन्हीं काहू उमराय ना करेरी करबाल[4] की ॥ सुनि सुनि रीति बिरदैत[5] के बड़प्पन की थप्पन उथप्पन की बानि छत्रसाल की। जंग जीतिलेवा ते वै ह्वैकै दामदेवा[6] भूप सेवा लागे करन महेवा महिपाल की ॥ ८ ॥

कीबे को समान प्रभु ढूँढ़ि देख्यो आन पै निदान दान युद्ध में न कोऊ ठहरात हैं। पंचम[7] प्रचंड भुज दण्ड को बखान सुनि भागिबे को पच्छी लौं पठान थहरात हैं ॥ संका मानि सूखत अमीर

---

(१) सैद अफ़गन दिल्ली का एक सरदार था और छत्रसाल से लड़ने को वह भेजा गया था। छत्र साल ने उसे पराजित किया था। लाल कवि कृत छत्र प्रकाश देखिये। मटौंध जीतने के बाद छत्र साल ने पहिले स्वयं विचलित होकर फिर इसे घोर युद्ध कर हराया था तब इसकी जगह शाह क़ुली नियत हुआ।

(२) चाक़, मोटी ताज़ो।

(३) अचानक।

(४) तलवार।

(५) यश वरणन करने वाला।

(६) कर देने वाले।

(७) पंचम सिंह बुन्देलों के पूर्व्व पुरुष थे। महाराज बुन्देल (जो बुन्देलों के पुरखा थे) इनके पुत्र थे। पंचमसिंह बड़े प्रतापी और देवी के बड़े भारी भक्त थे।

दिली वारे जब चम्पति के नन्द के नगारे घहरात हैं । चहूँ ओर चकित चकत्ता के दलन पर छत्ता के प्रताप के पताके फहरात हैं [१] ॥ ८ ॥

राजत अखण्ड तेज छाजत सुजस बड़ो गाजत गयन्द दिग्गजन हिय साल को। जाहि के प्रताप सों मलीन आफताप[२] होत ताप तजि दुजन करत बहु ख्याल को ॥ साज सजि गज तुरी[३] पैदरि कतार दीन्हे भूषन भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को? । और राव राजा[४] एक मन मैं न ल्याऊं अब साहू[५] को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को ॥ १० ॥

---

(१) पूर्णोपमा, चंचलातिशयोक्ति, पूर्ण भयानक रस । यह छन्द स्फुट कविता से यहाँ आया है ।

(२) आफ़ताब, सूर्य्य ।

(३) घोड़ा ।

(४) भूमिका एवं स्फुट काव्य के छन्द नं० ३ का नोट नं० ३ देखिए ।

(५) महाराज साहू जी छत्रपति शिवाजी के पौत्र थे । शिवा जी के पुत्र और साहू जी के पिता का नाम शम्भा जी था । साहू जी के ही राज्य काल में मुग़ल सम्राज्य पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गया था । साहू जी ने वहुत वर्ष राज्य किया था । शाही क़ैद से इनका स० १७०७ ई० में छुटकारा हुआ था ।

स्फुट काव्य ।

॥ दोहा ॥

रेवा[१] ते इत देत नहिँ पत्थिक म्लेच्छ निवास ।
कहत लोग इन पुरनि मैं है सरजा को त्रास ॥ १ ॥

कवित्त मन हरन ।

[२] बाजि बम्ब चढ्यो साजि बाजि जब कलां भूप गाजी महाराज राजी भूषन बखानते । चंडी की सहाय महि मण्डी तेजताई ऐंड़ छण्डी राय राजा जिन दण्डी औानि आन ते[३] ॥ मन्दी भूत रवि रज[४] बन्दी भूत हठ धर नन्दी भूतपति भो अनन्दी अनुमान ते । रङ्की भूत दुवन [५]करङ्की भूत दिगदन्ती पंकी[६] भूत समुद सुलंकी के पयान ते[७] ॥२॥

---

(१) नर्म्मदा नदी ।

(२) यह छन्द शिवा बावनी से आया है क्योंकि यह शिवाजी विषयक नहीं है ।

(३) देवीजी की सहायता से (सुलंकी ने) पृथ्वी तेज से ता (छादित) कर मढ़ दिया, और उन राय राजाओं ने भी जिन्हों ने औरों से भूमि दंड में लेलिया था ऐंड़ छोड़ दिया ।

(४) राज श्री ।

(५) कलंकी; दिग्गज श्वेत बर्ण थे सो इस रज से आच्छादित होने से वे मैले होगये और इसी कारण वे कलंकी कहे गये ।

(६) चहला (कीच) से भरा हुआ ।

(७) अनुप्रास । पँवार आदि जो चार अग्निकुल के क्षत्री हैं उनमें एक सुलंकी भी हैं । बघेले क्षत्री सुलंकी क्षत्रियों में हैं । बघेल खंड के अतिरिक्त ये लोग बांधव गढ़ और गुजरात में भी राज्य

रहत अछक पै मिटै न धक[1] पीवन की निपट जु नाँगी डर काहू के डरै नहीं । भोजन बनावै नित चोखे खान खानन के सोनित पचावै तऊ उदर भरै नहीं ॥ उगिलत आसौ[2] तऊ सुकल समर बीच राजै रावबुद्ध[3] कर बिमुख परै नहीं ॥ तेग या तिहारी मतवारी है अछक तौलों जौलौं गजराजन की गजक[4] करै नहीं ॥ ३ ॥

करते थे । इनके राज्य अब भी बहुत से हैं जिनमें रींवा प्रधान है । मेवार में भी इनकी एक शाखा है जिसकी सोलह उप- शाखायें हैं । यह छन्द हृदयराम सुत रुद्र के विषय हैं । शि० भू० छन्द २८ नोट देखिये ।

(१) बड़ी चोप ।

(२) आसव, मदिरा । तलवार के लिये लाल रंग का खून क्योंकि उत्तम मद्य भी लाल रंग का माना गया है ।

(३) छत्रसाल हाड़ा बूँदी नरेश के भाई भीमसिंह के पौत्र अनिरुद्धसिंह थे । राव बुद्धसिंह इन्हीं अनिरुद्धसिंह के पुत्र थे । औरंगज़ेब के मरने पर उसके पुत्र शाह आलम (बहादुर शाह) और आज़म में राज्यार्थ जाजऊ पर जो घोर युद्ध हुआ था उसमें राव बुद्धसिंह शाह आलम की ओर थे । इसी दिन इन्हें रावराजा की उपाधि मिली । जैपुर के राजा जैसिंह ने अन्त में राव बुद्ध का राज्य छीन लिया था परन्तु इनके पुत्र उम्मेदसिंह ने फिर उसे प्राप्त कर लिया ।

(४) शराबी लोग जो शराब के साथ थोड़ी सी नमकीन या चटपटी ग़िज़ा खाते हैं वही गज़क है । यह छन्द छत्रशाल दशक से आया है ।

जादिन चढ़त दल साजि अवधूतसिंह[1] तादिन दिगन्त लौं दुवन दाटियतु है। प्रलै कैसे धाराधर[2] धमकैं नगारा धूरि धारा ते समुद्रन की धारा पाटियतु है ॥ भूषन भनत भुवगोल को कहर तहां हहरत तगा[3] जिमि गज काटियतु है। काँच से कचरि जात सेस के असेस फन कमठ की पीठि पै पिठी सी बाँटियतु[4] है ॥४॥

मेचक[5] कवच साजि बाहन बयारि बाजि गाढ़े दल गाजि रहे दीरघ बदन के। भूषन भनत समसेर सोई दामिनी है हेतु नर कामिनी के मान के कदन के।। पैदरि बलाका[6] धुरवान[7] के पताका गहे घेरियत चहूँ ओर सूतेही सदन के। नाकरु निरादर पिया सों मिलु सादर यैं आये बीरबादर बहादर मदन के[8] ॥५॥

---

(१) इनका इतिहास में पता नहीं लगता। भूमिका देखिए।

(२) मेघ।

(३) तागा, डोरा।

(४) पूर्णोपमा, सम्बन्धातिशयोक्ति।

(५) काला।

(६) बगुला।

(७) जब बादल बड़े ज़ोर से उठता है तब उसमें दूर से जो लम्बे लम्बे खड़े दूसरे प्रकार के पतले धूम्र बरण बादल दौड़ते हैं उन्हें धोरवा कहते हैं।

(८) सम अभेद रूपक, उत्तमा दूती की मानवती नायका प्रति शिक्षा।

उलदत[1] मद अनुमद[2] ज्यों जलधि जल बल हद भीम कद काहू के न आह के। प्रबल प्रचण्ड गंड[3] मंडित मधुप वृन्द बिन्ध्य से बिलन्द सिन्धु सातहू के थाह के ॥ भूषन भनत झूल झम्पति झपान झुकि झूमत झुलत झहरात रथ डाह के। मेघ से घमंडित मजेजदार[4] तेज पुंज गुंजरत कुंजर कुमाऊं नर नाह के[5] ॥ ६ ॥

बलख बुखारे मुलतान लौं हहर पारै कपि लौं पुकारै कोऊ धरत न सार है। रूम रूँदि डारैं खुरा-

---

(१) डालते हैं।

(२) मद पर मद।

(३) कनपटी।

(४) एक प्रभाव सूचक पद। इसके शुद्ध अर्थ का पता नहीं लगता।

(५) अनुप्रास, पूर्णोपमा। इस छन्द के साथ एक जन श्रुति है। भूषण ने जब कुमाऊं नरेश के यहां जाकर यह छन्द सुनाया था तो उन्हें सन्देह हुआ कि स्यात् जो यह सुनते थे कि शिवा जी ने इन्हें लाखों रुपये दिए वह अशुद्ध है नहीं तो ये मेरे यहां क्यों आते; परन्तु तो भी इस बात पर निश्चय न होने से इन्हें राज सन्मानित कवि समझ कर उसने एक लाख रुपये भूषण को बिदाई में दिये परन्तु भूषण ने वह धन कुमायूं नरेश (उद्योत सिंह) को वापस करके कहा कि उनका प्रयोजन कुमायूं जाने से केवल शिवा जी का यश वर्द्धन था, शिवाजी की कृपा से अब उन्हें रुपये पैसे की कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी।

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा ।

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या